



# राजभाषा विशेषांक जल विकास

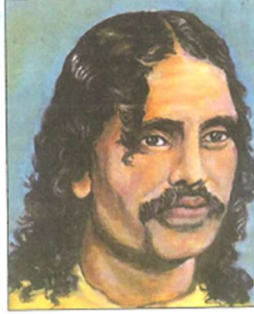


मासिक  
Quarterly

खंड 34  
Vol. 34

अक्टूबर, 2023  
October, 2023

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की आंतरिक पत्रिका  
(In house Bulletin of National Water Development Agency)



भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

## मातृभाषा प्रेम पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के दोहे

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।  
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन।  
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन॥

उन्नति पूरी है तबहिं, जब घर उन्नति होय।  
निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय॥

निज भाषा उन्नति बिना, कबहुं न ह्यैहें सोय।  
लाख उपाय अनेक यों, भले करे किन कोय॥

इक भाषा इक जीव इक, मति सब घर के लोग।  
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग॥

और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात  
निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात॥

तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुने जो कोय।  
यह गुन भाषा और महं, कबहुं नाहीं होय॥

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार  
सब देसन से लै करहु, भाषा माहि प्रचार॥

भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात।  
विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात॥

सब मिल तासों छांडि कै, दूजे और उपाय।  
उन्नति भाषा की करहु, अहो भ्रातगन आय॥

## इस अंक में

### संदेश एवं अपील

— महानिदेशक महोदय की ओर से	5
— मुख्य अभियंता (मुख्यालय) का संदेश	6
— निदेशक तकनीकी एवं राजभाषा अधिकारी का संदेश	7
— सहायक निदेशक (राजभाषा) का संपादकीय	8
— महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा राजभाषा अपील	9
— माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश	10–11
— माननीय जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश	12
— माननीय जल शक्ति एवं जनजातीय कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश	13
— माननीय मंत्रिमंडल सचिव, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश	14
— माननीय सचिव, जल शक्ति, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश	15

### लेख

— आईएलआर में डिजिटल बुनियादी ढांचे की कल्पना आर.एन.संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण)	16–20
— अंतरबेसिन जल अंतरण—पार—तापी—नर्मदा लिंक परियोजना हरि ओम वाष्ण्य, सहायक अभियंता	21–26
— अनुवाद चर्चा—वैज्ञानिक अनुवाद एवं पारिभाषिक शब्दावली के परिप्रेक्ष्य में डॉ. अनिल कुमार द्विवेदी	27–31
— जल संरक्षण की ऐतिहासिक मिसाल – यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल शुभम् कुमार, कनिष्ठ अभियंता, कार्यालय मुख्य अभियंता (उत्तर), साहित्यिक अनुवाद और उसकी समस्याएं: हिन्दी अंग्रेजी के विशेष संदर्भ में अक्षित रोहिल्ला, हिन्दी अनुवादक	32–33
— गोदावरी (एस.एस.एम.पी.पी) – कृष्णा (पुलीचिंतला) लिंक परियोजना के.सी.बघेल, सहायक अभियंता	34–37
— ग्लोबल वार्मिंग व उसके प्रभाव अमित बुरा, कनिष्ठ अभियंता	38–44
— नदियों को जोड़ना एक चुनौती राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	45–46
— नदी जोड़ आज के समय की अनिवार्यता रीता कश्यप, आशुलिपिक	47–50
	51–53

### रा.ज.वि.अ. की गतिविधियां

— तकनीकी सारसंग्रह	54–64
— नियुक्ति/पदोन्नति/सेवानिवृत्ति/शोक का विवरण	65–68
— मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा-2023 का आयोजन	69–75
— मुख्य अभियंता (उत्तर) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा-2023 का आयोजन	76–85
— मुख्य अभियंता (दक्षिण) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा-2023 का आयोजन	86–95

### कविताएं

— जल बचाओ, जल बचाओ – प्रिया विज, आशुलिपिक	96
— हिन्दी हमारी पहचान – अमन, कनिष्ठ अभियंता	97

## रा.ज.वि.अ. पदाधिकारियों के बच्चों का कोना

–	जल बचाओ पर चित्र चिराग राजपूत, पुत्र श्रीमती राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	99
–	जल बचाओ पर चित्र श्रेया, पुत्री श्रीमती राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	100
–	जल ही जीवन जल ही जान प्रखर वाधवा, पुत्र श्रीमती रीना वाधवा	101
–	जल संरक्षण पर चित्र प्रत्युष वाधवा, पुत्र श्रीमती रीना वाधवा	102
–	जल बचाओ पर चित्र रिदा कश्यप, पुत्री श्रीमती रीता कश्यप, आशुलिपिक	103

## महानिदेशक की ओर से



आदि काल से ही भावनाओं की अभिव्यक्ति मनुष्य का एक स्वाभाविक और सार्वभौमिक गुण रहा है जो अन्य प्राणियों की अपेक्षा उसे विशेष महत्व देता है। सभी प्राणियों को अभिव्यक्ति के लिए किसी न किसी भाषा की आवश्यकता होती है, आदिमानवों ने भी संकेतों के माध्यम से ही परस्पर संवाद स्थापित किया होगा। कालांतर में मानव विकास के साथ ध्वनि संकेतों को माध्यम बनाया जाने लगा

जो धीरे धीरे आगे चलकर शब्द रूप लेने लगे और उत्तरोत्तर इसी विकास प्रक्रिया के अंतर्गत भाषाओं का अंकुरण हुआ।

आर्यावर्त की संस्कृत, प्राकृत एवं पाली आदि भाषाओं के चलन के बाद इसी क्रम में हिन्दी की कड़ी जुड़ गई जो देवनागरी लिपि में अंकित हुई। देवनागरी लिपि का यही स्वरूप आज वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय जनमानस, संस्कृति, आचार-विचार एवं व्यावहार के लिए “पावन दूब और धान है हिन्दी” की सूक्ति को चरितार्थ कर रही है। अर्थात् हिन्दी भाषा हमारे जीवन और संस्कृति का अंग बन गई है जो सदैव हमारे व्यवहार में संचरित होती रहती है।

वर्तमान में हिन्दी एक संपर्क भाषा ही नहीं बल्कि यह व्यापार, उद्योग, मीडिया, मनोरंजन, अनुसंधान, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कृषि, खेल, सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भाषिक दृष्टि से समृद्ध करते हुए नए क्षितिज पर पहुंचा चुकी है। यह प्रगति हिन्दी के प्रयोगकर्ताओं के भगीरथ प्रयास का एक जीता जागता स्वरूप है जो निरंतर बढ़ता ही रहेगा ऐसा प्रतीत होता है।

यद्यपि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, पूर्ण रूप से तकनीकी कार्य करने वाला संगठन है जिसमें मुख्य रूप से नदी जोड़ के अध्ययनों की तकनीकी रिपोर्टें आदि बनाई जा रही हैं फिर भी यह प्रयास किया जाता है कि अधिकतम कार्य हिन्दी में ही संपादित किया जाये। हमारा सार्थक प्रयास राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में हिन्दी के व्यावहारिक पथ पर चल रहा है और हम सभी का यह कर्तव्य भी है कि अपनी इस प्रगति को बाधित न होने दें।

वर्ष 2022-23 में हिन्दी के उत्कृष्ट क्रियान्वयन के लिए “राजभाषा वैजयंती” अन्वेषण सर्किल वलसाड़ और लघु राजभाषा वैजयंती उसके अधीनस्थ अन्वेषण प्रभागों को प्राप्त हुई है। सभी को मेरी हार्दिक बधाई।

सधन्यवाद।

(भोपाल सिंह)

महानिदेशक

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण

## संदेश



भौगोलिक दृष्टि से भारत में बहुभाषिकता का प्रचलन रहा है। यह बहुभाषिकता ग्लोबल विलेज की मांग है। आज के परिप्रेक्ष्य में वही देश प्रगति करेगा जो बहुभाषिकता की उपयोगिता को भली-भांति समझकर अपनी रणनीति तैयार करेगा। भारत में भी बहुभाषिकता के आधार पर संविधान में कई भारतीय भाषाओं को मान्यता मिली है जिनमें से हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हिन्दी की परंपरा और इसका इतिहास अपने महत्व को आज भी बनाये हुए है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा जन-जन की भाषा बनती जा रही है। हिन्दी अब बाजार, व्यापार, समाचार, रोजगार, सूचना प्रौद्योगिकी, अद्यतन तकनीकी खोज और अनुसंधान एवं सहज संपर्क की भाषा का रूप ले चुकी है। आज की हिन्दी हमारी परंपराओं और विभिन्न संस्कृतियों के बीच एक सेतु के रूप में हमारे बीच विद्यमान है। दुनिया में अर्थ एवं व्यापार की दृष्टि से देखे तो हिन्दी विश्व बाजार की भाषा में भी अपना विशिष्ट स्थान ले चुकी है।

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने हिन्दी में कार्यालयी कार्य करने की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। केंद्र सरकार के सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी दिशा निदेशों का समुचित अनुपालन करते हुए उसके लक्ष्यों को प्राप्त किया है और इसके अनुपालन के लिए क्षेत्रीय कार्यालयों में भी निरंतर राजभाषा के प्रगामी प्रयोग पर पैनी नजर रखी जा रही है जिससे कि मुख्यालय सहित सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में भी प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में सरलता एवं सुगमता बनी रहे।

अतः आगे भी हम सबका यह कर्तव्य है कि हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को उच्चतम शिखर तक पहुंचाने की संकल्पना के साथ हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए हम इसी संकल्प से आगे बढ़ते रहें। आप सभी इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

(बालेश्वर ठाकुर)  
मुख्य अभियंता (मुख्यालय)

## संदेश



जल विकास का राजभाषा विशेषांक आपके सम्मुख प्रस्तुत है जिसमें राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (रा.ज.वि.अ.) के सभी कार्य परिचालित हो रहे हैं। रा.ज.वि.अ. अपने तकनीकी कार्यों के साथ-साथ राजभाषा संबंधी कार्य करने में सदा प्रयासरत है। केवल मुख्यालय ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में पदाधिकारियों द्वारा हिन्दी संबंधी कार्य विशेष रुचि एवं निष्ठा से किए जा रहे हैं। मुझे आशा है कि जल विकास के इस विशेषांक का आप स्वागत करेंगे और यह आपकी रुचि के अनुकूल होगा।

इस अंक में रा.ज.वि.अ. के पदाधिकारियों द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे गए लेख प्रकाशित किए गए हैं। आशा है कि ये लेख आपको पसंद आएंगे।

राजभाषा विशेषांक के “तकनीकी सारसंग्रह” में रा.ज.वि.अ. के तकनीकी कार्यों की प्रगति को दर्शाया गया है।

इस अंक में रा.ज.वि.अ. मुख्यालय एवं मुख्य अभियंता, उत्तर एवं दक्षिण तथा उनके अधीनस्थ क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा-2023 में कराई गई विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं एवं उनमें पुरस्कृत पदाधिकारियों का विवरण भी झलकियों के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक में महानिदेशक महोदय द्वारा जारी की गई अपील भी प्रस्तुत है। हिन्दी पखवाड़े के आयोजन में आप सभी की भागीदारी ही इसकी शानदार सफलता का कारण है।

रा.ज.वि.अ. के पदाधिकारियों द्वारा जिन विभिन्न प्रशिक्षण/संगोष्ठी/सम्मेलन एवं कार्यशालाओं में भाग लिया गया उनका विवरण भी इस अंक में प्रस्तुत किया गया है एवं साथ ही रा.ज.वि.अ. में हुई नई नियुक्तियों, पदोन्नतियों व सेवानिवृत्तियों का विवरण भी दिया गया है। इस अंक के अंत में रा.ज.वि.अ. के पदाधिकारियों की रोचक कवितायें और उनके बच्चों द्वारा जल संरक्षण पर रेखा चित्र भी प्रस्तुत हैं जो आप सभी को काव्य रस एवं बाल कला में जल के प्रति बाल भावनाओं की अनुभूति कराएंगी।

अंत में आप सभी से मेरा अनुरोध है कि आपको यह अंक कैसा लगा, और इसको बेहतर बनाने के बारे में अपने विचार हम तक पहुंचाएं।

सधन्यवाद।

(षाजतनन के.एच.)

निदेशक (तकनीकी) व राजभाषा अधिकारी

## संपादकीय



वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति की पानी की मांग लगभग 85 लीटर है जो सन 2025 तक लगभग 125 लीटर होने की सम्भावना है। देश में जल उपभोक्ता और जल उपलब्धता के संदर्भ में विशेषज्ञों द्वारा समय समय पर किए गए अध्ययनों से यह पता चलता है कि भारत में पिछले लगभग 60–70 वर्षों में जल उपलब्धता एक तिहाई रह गई है और जनसंख्या पहले की अपेक्षा कई गुना अधिक बढ़ गई है। जल के अन्य स्रोतों के मुकाबले हम मुख्यतया भूजल पर निर्भर होते चले जा रहे हैं, जिसका परिणाम यह है कि भूजल स्तर निरंतर नीचे गिरता जा रहा है। भारत ही नहीं वैश्विक स्तर पर भी जल की उपलब्धता और उपभोक्ता के बीच का यह अंतर बहुत बड़ी चुनौती बनती जा रही है। इन्हीं समस्याओं को दृष्टिगत रखकर हुए राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने अपनी योजनाओं के द्वारा जल संकटों से उबरने के लिए कई अध्ययन किए हैं, जिनके क्रियान्वित होने से भारत में जल की अधिकता वाले क्षेत्रों से जल की कमी वाले क्षेत्रों को पानी अंतरित करके इस संकट का समाधान निकालने का प्रयत्न किया जा रहा है।

इस अंक में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण मुख्यालय, मुख्य अभियंता (उत्तर) एवं मुख्य अभियंता (दक्षिण) तथा उनके अधीनस्थ क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा –2023 में आयोजित की गई विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं एवं उनमें पुरस्कृत पदाधिकारियों का विवरण भी झलकियों के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। महानिदेशक महोदय द्वारा जारी अपील एवं माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह, माननीय जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय जल शक्ति एवं जनजातीय कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार, श्री विश्वेश्वर टुडु तथा माननीय मंत्रिमंडल सचिव, भारत सरकार, श्री राजीव गौबा एवं श्री पंकज कुमार, सचिव, जल संसाधन नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग द्वारा जारी संदेश भी प्रकाशित किया जा रहा है।

जल विकास का राजभाषा अंक प्रत्येक वर्ष नई अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयत्न करता है और मुझे पूरा विश्वास है कि जैसे कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है उसी प्रकार यह राजभाषा विशेषांक रा.ज.वि.अ. की समस्त गतिविधियों से आपको परिचित कराने का प्रयास है। लेखों में आपको जल संबंधी कई पहलुओं का परिचय मिलेगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि सभी कविताएं आपको भाव-विभोर करने में सफल होंगी।

आशा है कि जल विकास का यह अंक आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा और इस संबंध में अपने विचारों और प्रतिक्रियाओं से आप हमें अवगत कराएंगे।

(डॉ.अनिल कुमार द्विवेदी)  
सहायक निदेशक (राजभाषा)





भोपाल सिंह  
महानिदेशक  
Bhopal Singh  
Director General



राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण  
जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार  
(जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग)  
National Water Development Agency  
Ministry of Jal Shakti, Government of India  
(Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation)



दिनांक : 12 सितम्बर, 2023

## अपील

उदारीकरण, उपभोक्तावाद एवं भूमंडलीकरण के इस वर्तमान तकनीकी युग में हिन्दी राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरी है। इसके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और भौगोलिक निहितार्थ भी उभर कर सामने आये हैं, जिनका संपोषण हिन्दी कर रही है यह संपोषण समाज में चारों ओर दिख रहा है। भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ 'कोस कोस पर पानी बदले और चार कोस पर बानी' बदलने वाली बहुप्रचलित कहावत चरितार्थ होती रही है। बहुभाषिकता की इन्हीं विसंगतियों को ध्यान में रखते हुए और सर्व समाज को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए स्वाधीनता के बाद भारत सरकार ने आम जनमानस के लिए सरकारी कामकाज करने के लिए सामाजिक रूप से अधिक प्रचलित हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया और यह लक्ष्य रखा गया कि इस राजभाषा के माध्यम से बहुभाषी समाज तक भारत सरकार की जनहित योजनाओं का प्रचार प्रसार किया जायेगा।

चूँकि नदी जोड़ परियोजनाएं जन सामान्य से जुड़ी हुई हैं। इसलिए इस पुनीत कार्य को जब तक जनसामान्य की आम भाषा में नहीं क्रियान्वित किया जायेगा तब तक हमारा उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा।

संघ की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम अपने दैनिक कार्यालयी कार्यों में राजभाषा हिन्दी से संबंधित अनुदेशों, निदेशों का अनुपालन उसी दृढ़ता और तत्परता से करें जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों, निदेशों का अनुपालन करते हैं।

हिन्दी दिवस के अवसर पर मेरी आपसे अपील है कि हम स्वयं अपना कार्य मूलरूप से हिन्दी में करें और इसके साथ-साथ अपने अधीनस्थों को भी मूलरूप से हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें।

( भोपाल सिंह )  
महानिदेशक

18-20, सामुदायिक केंद्र, साकेत, नई दिल्ली / 18-20, Community Centre, Saket, New Delhi-110017  
दूरभाष / Phone : 011-26519164 / 41033995 फैक्स / Fax : 011-26513846  
कक्ष नं. 305, पालिका भवन, आर.के. पुरम, सेक्टर-13, नई दिल्ली-110066  
Room No. 305, Palika Bhawan, R.K. Puram, Sector-13, New Delhi-110066  
दूरभाष / Phone : 011-24195726 / 24195700, फैक्स / Fax : 011-24195727  
ई-मेल / E-mail : dg-nwda@nic.in वेबसाइट / Website : www.nwda.gov.in

अमित शाह  
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री  
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम 'हिंदी' है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।" यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्टा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न **'विश्व हिंदी सम्मेलन'** में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई-मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,  
14 सितंबर, 2023

  
(अमित शाह)

गजेन्द्र सिंह शेखावत  
Gajendra Singh Shekhawat



सत्यमेव जयते  
75  
आजादी का  
अमृत महोत्सव



जल शक्ति मंत्री  
भारत सरकार  
Minister for Jal Shakti  
Government of India

12 SEP 2023

संदेश

प्रिय साथियों,

'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

भारत एक विलक्षण सांस्कृतिक चेतना का देश है। भाषा के मामले में हमारा देश अत्यन्त समृद्ध है। देश में सांस्कृतिक समन्वय के प्रयासों में हिन्दी भाषा का विशेष योगदान है। विशाल शब्द भण्डार वाली हिन्दी भाषा एक सरल, व्यावहारिक और जीवंत भाषा है। हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में देश के महान विचारकों एवं दार्शनिकों ने काफी चिंतन और मनन के बाद स्वीकार किया था। अतः राजभाषा नीति का कार्यान्वयन हमारा संवैधानिक दायित्व है। इसकी सार्थकता हमारी निष्ठा पर निर्भर करती है। जनता का काम जनता की भाषा में हो यह बहुत जरूरी है। हम सब सरल एवं सुबोध हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग कर भारत की राजभाषा को जन-गण-मन की स्वाभाविक भाषा बना सकते हैं।

आज जल संचयन और जल का उचित प्रयोग जैसे विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि जल शक्ति मंत्रालय के जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग से जुड़े क्रियाकलापों से संबंधित जानकारी आज आम जनता को सरल-सुबोध भाषा में प्रदान की जा रही है।

जल शक्ति मंत्रालय के जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग में उत्साह के साथ 'हिन्दी पखवाड़ा समारोह' आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर हम सभी संकल्प लें कि हम अपने कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण का परिचय देंगे।

हार्दिक शुभकामनाएं!



(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

Office : 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001  
Tel: No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, Fax : (011) 23710804  
E-mail : minister-jalshakti@gov.in

विश्वेश्वर टुडु  
BISHWESWAR TUDU  
ବିଶ୍ୱେଶ୍ୱର ଟୁଡୁ



75  
आजादी का  
अमृत महोत्सव

जल शक्ति एवं  
जनजातीय कार्य राज्य मंत्री  
भारत सरकार  
नई दिल्ली-110001  
MINISTER OF STATE FOR  
JAL SHAKTI & TRIBAL AFFAIRS  
GOVERNMENT OF INDIA  
NEW DELHI - 110001

संदेश

प्रिय साथियो !


हमारा देश एक बहु-भाषी देश है जहां अनेक संस्कृतियां विद्यमान हैं। हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी सम्पर्क भाषा है। यह भाषा एक सेतु के रूप में काम कर रही है जो भारत की विभिन्न संस्कृतियों, परम्पराओं और सम्प्रदायों को आपस में जोड़ती है। भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। सरकारी कामकाज हिन्दी में किए जाने से सरकार और जनता के बीच परस्पर विश्वास बढ़ता है। इसलिए हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करें।

राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार ने अनेक सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध कराए हैं। आज कम्प्यूटरों पर हिन्दी में काम करने में कोई कठिनाई नहीं होती है। अलग से किसी हिन्दी सॉफ्टवेयर के बिना भी आज कम्प्यूटर पर यूनिकोड समर्थित फॉन्ट्स के साथ आसानी से हिन्दी में कार्य किया जा सकता है। परन्तु हमारे लिए यह जरूरी है कि हम कम्प्यूटर पर उपलब्ध इन आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें और राजभाषा द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की एक ईमानदार कोशिश करें।

यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय द्वारा दिनांक 14 सितम्बर, 2023 से 28 सितम्बर, 2023 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है।

मुझे उम्मीद है कि विभाग के अधिक से अधिक अधिकारी और कर्मचारी इस 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह के अन्तर्गत आयोजित होनेवाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे।

'हिन्दी पखवाड़े' के इस शुभ अवसर पर मैं आप सभी को बधाई देता हूं और इसकी सफलता की कामना करता हूं।

  
(विश्वेश्वर टुडु) 13/9/2023

राजीव गौबा  
Rajiv Gauba



मंत्रिमंडल सचिव  
भारत सरकार  
CABINET SECRETARY  
GOVERNMENT OF INDIA

### संदेश

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। भाषा सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण साधन है। विविध बोली-भाषाओं और संस्कृति वाले भारत जैसे विशाल देश में हिंदी एक समृद्ध भाषा के रूप में यह भूमिका स्पष्ट रूप से निभा रही है। पूरे देश में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के महत्व को ध्यान में रखते हुए, भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। तब से प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

आज भारत में नई-नई तकनीकों में भी हिंदी भाषा का उपयोग किया जा रहा है और इस प्रकार देश के आर्थिक विकास में भी हिंदी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है, चाहे वह 'आत्मनिर्भर भारत' की संकल्पना हो या फिर 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना। विगत वर्षों में सरकार का हिंदी के प्रचार-प्रसार पर अधिक बल दिए जाने से अब हिंदी में कार्य करना आसान हो गया है जो सरकारी कामकाज में बढ़ रहे हिंदी के प्रयोग में परिलक्षित होता है।

हिंदी दिवस के अवसर पर भारत सरकार के समस्त कार्यालयों में कार्यरत सभी वरिष्ठ अधिकारी और कर्मिक यह संकल्प लें कि हम अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करेंगे। इससे हिंदी का व्यापक स्तर पर संवर्धन होगा और हमारे राष्ट्र का गौरव बढ़ेगा।

आइए, हम राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्व और शासकीय प्रतिबद्धता को दोहराएं और निश्चय करें कि हम अपना अधिक से अधिक कार्य सरल और सुबोध हिंदी में करेंगे।

जय हिंद।

  
(राजीव गौबा)



पंकज कुमार  
PANKAJ KUMAR  
सचिव  
SECRETARY



आज़ादी का  
अमृत महोत्सव

भारत सरकार  
जल शक्ति मंत्रालय  
जल संसाधन, नदी विकास  
और गंगा संरक्षण विभाग  
GOVERNMENT OF INDIA  
MINISTRY OF JAL SHAKTI  
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,  
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION

### अपील

किसी भी समाज, राष्ट्र और सभ्यता की पहचान उसकी भाषा से होती है। विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम भाषा ही होती है। राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना एक राष्ट्रीय दायित्व है।

दिगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हम विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं के साथ 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह आयोजित कर रहे हैं। मुझे आशा है कि मंत्रालय के अधिकाधिक अधिकारी और कर्मचारी इसमें भाग लेंगे और यह समारोह हिन्दी में काम करने के लिए आप सभी को उत्साह और प्रेरणा प्रदान करेगा। मेरा आपसे निवदेन रहा है कि हिन्दी में काम करने की भावना केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पूरे वर्ष सरकारी कामकाज हिन्दी में किया जाना चाहिए ताकि हम अपने संवैधानिक दायित्वों को निभा सकें।

इस अवसर पर, मैं आप सभी को बधाई देता हूँ और 'हिन्दी पखवाड़े' के सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

  
(पंकज कुमार)

## परिचय

डिजिटल उपकरण धीरे-धीरे निर्माण उद्योग में खुद को स्थापित कर रहे हैं। लेकिन यह सिर्फ बदलाव की शुरुआत है क्योंकि निर्माण का भविष्य डिजिटल है। यह लेख दर्शाता है कि नए, अत्याधुनिक उपकरणों और सहायता से निर्माण का भविष्य कितना आशाजनक और कुशल होगा। सुस्त अर्थव्यवस्थाओं को प्रोत्साहित करने, पुरानी प्रणालियों को उन्नत करने और बढ़ती और बदलती आबादी को पूरा करने के लिए तेजी से जटिल परियोजनाएं शुरू की जा रही हैं। उच्च आर्थिक विकास और तेजी से बढ़ती आबादी के कारण महत्वपूर्ण शहरीकरण के कारण, आने वाले दशकों में नए बुनियादी ढांचे की मांग में बड़े पैमाने पर वृद्धि देखने की भविष्यवाणी की गई है। अन्य नई चुनौतियाँ: बदलती जनसांख्यिकीय व्यवसायों, सेवा उपयोगकर्ताओं और जनता की बढ़ती अपेक्षाएँ और कार्बन उत्सर्जन और अपशिष्ट को कम करने की आवश्यकता, ये सभी उद्योग और नई परियोजनाएं शुरू करने वालों के लिए एक गतिशील और परीक्षण वातावरण बनाते हैं।

रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रगति जैसी डिजिटल और अन्य नई तकनीकों को अपनाना और मुख्यधारा में लाना उद्योग के लिए एक गेम-चेंजर होगा, जो इस क्षेत्र के अन्यथा धीमे और स्थिर आधुनिकीकरण को गति देगा, और चुनौतियों और अवसरों का उत्तर प्रदान करेगा। डिजिटलीकरण के लाभ बाल्फोर बीट्टी जैसी कंपनियों के लिए स्पष्ट हैं, जो पहले से ही उन्हें व्यवसाय और जिन परियोजनाओं पर काम कर रही है, उनमें उपयोग कर रही है। क्लाउड कंप्यूटिंग और उन्नत मोबाइल प्रौद्योगिकी की शक्ति का उपयोग करके परियोजनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से और कुशलता से वितरित किया जा सकता है। शेड्यूलिंग और लागत पर 4डी विवरण के साथ परियोजनाओं के 3डी डिजिटल प्रतिनिधित्व के रूप में बिल्डिंग इंफॉर्मेशन मॉडलिंग (बीआईएम), संवर्धित और आभासी वास्तविकता तकनीक के साथ कार्यालयों और साइटों के बीच सहज बातचीत को सक्षम बनाता है जिससे “पहली बार में सही निर्माण” दृष्टिकोण की सुविधा मिलती है। ड्रोन टीमों को मानव सर्वेक्षणकर्ताओं की तुलना में अधिक बार डेटा एकत्र करके सुरक्षित, अधिक कुशलतापूर्वक और बढ़ी हुई सटीकता के साथ प्रगति को ट्रैक करने की अनुमति देते हैं। टेलीमैट्रिक्स यह ट्रैक कर रहा है कि हमारे वाहनों का उपयोग कैसे किया जाता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि हम उन्हें किफायती, सुरक्षित और स्थायी रूप से चलाते हैं और हम बुनियादी ढांचे में उत्पन्न होने वाली समस्याओं की भविष्यवाणी करने और उन्हें रोकने के लिए डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर रहे हैं, न कि धीमे, अधिक महंगे और कम विश्वसनीय “खोजें और ठीक करें” मॉडल के बजाय जिस पर उद्योग दशकों से भरोसा कर रहा है।

## एनआरएलपी में निर्माण में डिजिटलीकरण

एनआरएलपी लगभग 3000 भंडारण बांधों के नेटवर्क द्वारा भारत की 37 नदियों को जोड़कर जल-अतिरिक्त बेसिन से पानी की कमी वाले बेसिन में पानी के हस्तांतरण की परिकल्पना करता है। इससे इस परियोजना के दो घटकों के साथ एक विशाल दक्षिण एशियाई जल ग्रिड बनेगा:

- 1- हिमालयी घटक
- 2- प्रायद्वीपीय घटक

आईएलआर परियोजनाओं के डिजिटलीकरण में डिजिटल उपकरण, प्रक्रिया स्वचालन और डिजिटल परियोजना संचार शामिल है। डिजिटलीकरण की लहर के लिए धन्यवाद, निर्माण प्रक्रियाओं से डेटा की विशाल मात्रा को अब क्लाउड कंप्यूटिंग के माध्यम से कुशलतापूर्वक व्यवस्थित और संरचित किया जा रहा है, लेकिन ये विकास केवल डिजिटल डेटा एकत्र करने, प्रदान करने और संसाधित करने के बारे में नहीं हैं। उदाहरण के लिए, सामाजिक नेटवर्क समान रूप से केंद्रीय भूमिका निभाते हैं, क्योंकि सभी औद्योगिक क्षेत्र अब अपनी गतिविधियों को पारदर्शी और डिजिटल रूप से संप्रेषित करते हैं। इस प्रकार, निर्माण उद्योग का डिजिटलीकरण इंटरनेट पर योजना और निष्पादन से लेकर दस्तावेजीकरण और संचार तक सार्वभौमिक प्रक्रियाओं को परिभाषित करता है। आज, समय- और स्थान-स्वतंत्र संचार चैनल और डिजिटल बुनियादी ढांचे भी निर्माण उद्योग में अपरिहार्य हैं। हालाँकि, निर्माण उद्योग में डिजिटलीकरण परियोजनाओं में चुनौतियाँ और आशाजनक अवसर भी हैं।

मुख्य अभियंता (दक्षिण), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, हैदराबाद



## परिवर्तन के लाभ

बुनियादी ढांचा और निर्माण उद्योग एक चौराहे पर हैं। इसे कई मौजूदा और उभरती चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अन्य उद्योगों के विपरीत, जिन्होंने अपने उत्पादों और सेवाओं को बेहतर बनाने और नया आकार देने के लिए तकनीकी प्रगति का सफलतापूर्वक उपयोग किया है, बुनियादी ढांचा क्षेत्र ने अभी तक नवीनतम तकनीकों और उपकरणों की पूरी क्षमता को नहीं अपनाया है। दरअसल, स्वचालन के अपेक्षाकृत निम्न स्तर के साथ, यह आश्चर्यजनक रूप से कम तकनीक वाला बना हुआ है। निर्माण में अधिक कुशल, सरल प्रक्रियाएं: नई प्रक्रिया संरचनाओं की मदद से, योजना और निर्माण परियोजनाओं को अधिक पारदर्शी, अधिक विश्वसनीय और त्रुटियों की संभावना कम बनाई जा सकती है। इस उद्देश्य के लिए सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है जो किसी वास्तविक इमारत का डिजिटल ट्विन बनाता है। हितधारक इन मॉडलों का उपयोग डेटा को रिकॉर्ड करने और प्रबंधित करने और वास्तविक समय में भवन परिवर्तन देखने के लिए करते हैं। इमारतों के पर्यावरणीय प्रदर्शन में सुधार: डिजिटल मॉडल पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में मदद करते हैं। डिजाइनों की तुरंत डिजिटल गणना की जाती है और भवन की आवश्यकताओं के आधार पर उन्हें उतनी ही तेजी से समायोजित किया जाता है। स्वचालित प्रक्रियाओं के माध्यम से तेज वर्कफ्लो: क्लाउड समाधान न केवल कागज बचाते हैं। वे निर्माण परियोजनाओं में चुस्त, कुशल सहयोग के लिए उपयुक्त हैं क्योंकि वे रखरखाव प्रक्रियाओं के लिए अनुस्मारक जैसे छोटे कार्य संभाल सकते हैं। बुनियादी ढांचे में निवेश का एक अच्छी तरह से प्रलेखित आर्थिक गुणक प्रभाव होता है और दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं को पुनर्संतुलित करने और बढ़ावा देने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण, बड़े पैमाने की परियोजनाओं को चालू किए जाने की संभावना है।

इन बढ़ती, बदलती, अधिक मांग वाली आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए, हमें और अधिक बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होगी। नया बुनियादी ढांचा, बेहतर बुनियादी ढांचा, हालांकि, ये मांगें उस उद्योग पर दबाव डालेंगी जो पहले से ही कई देशों में कौशल की कमी का सामना कर रहा है। नई प्रौद्योगिकियों में निरंतर निवेश उद्योग की पुरानी धारणाओं को बदलने में मदद करके इन कौशल की कमी को दूर करने में मदद करेगा, जिससे हम अधिक विविध, कुशल श्रम बल को आकर्षित करने में सक्षम होंगे। रोबोट और स्वचालन के बढ़ते उपयोग का मतलब यह भी होगा कि उद्योग अधिक उत्पादक बन जाएगा, जिससे अत्याधुनिक क्षेत्रों में कुशल श्रमिकों के लिए नई भूमिकाएँ पैदा होंगी, जबकि बार-बार दोहराए जाने वाले, ईंट बनाने जैसे मैन्युअल कार्य करने वालों की आवश्यकता कम हो जाएगी, जिससे दीर्घकालिक स्वास्थ्य जोखिम कम हो जाएंगे। इसी तरह, प्री-कास्टिंग, प्री-फैब्रिकेटिंग और प्री-असेंबली जैसी ऑफ-साइट निर्माण तकनीकों की ओर बढ़ने से कुशल श्रम की कमी को दूर करने की क्षमता है, साथ ही दक्षता, स्थिरता और सटीकता को अधिकतम करने और स्वास्थ्य और सुरक्षा में सुधार करने की भी क्षमता है। परिणामस्वरूप, उद्योग की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है। इससे होने वाले अन्य संभावित लाभ:

- i. कौशल की कमी को दूर करना
- ii. ग्राहक के लिए वितरण
- iii. बेहतर सहयोग
- iv. बेहतर स्वास्थ्य, सुरक्षा और गुणवत्ता
- v. अधिक लाभप्रद
- vi. अधिक टिकाऊ

## निर्माण उद्योग में डिजिटलीकरण की वर्तमान स्थिति

अन्य क्षेत्र, जैसे ऑटोमोटिव उद्योग या मैकेनिकल और प्लांट इंजीनियरिंग, निर्माण उद्योग में डिजिटलीकरण से काफी आगे हैं। जर्मन निर्माण उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों पर पीडब्ल्यूसी अध्ययन से पता चला है कि महामारी से डिजिटलीकरण को बढ़ावा मिलने की उम्मीद नहीं थी।

निर्माण उद्योग में डिजिटलीकरण के अवसरों को पहचाना गया था, लेकिन बुनियादी ज्ञान की कमी के कारण नई प्रौद्योगिकियों की क्षमता का पर्याप्त दोहन नहीं किया गया था। मौजूदा तकनीकी क्षमता और कुशल श्रमिकों के वास्तविक कौशल के बीच एक अंतर है।

हालाँकि, निर्माण उद्योग सभी चरणों में और हितधारकों के साथ मिलकर कदम दर कदम आगे बढ़ रहा है, खासकर डिजिटल योजना के मामले में: सभी उत्तरदाताओं में से 47 प्रतिशत ने कहा कि उनकी अपनी कंपनी में उच्च स्तर का डिजिटलीकरण था। हालाँकि अध्ययन से पता चलता है कि तकनीकी क्षमता का अभी तक दोहन नहीं किया जा रहा है। निर्माण उद्योग परिवर्तन की राह पर है।

### निर्माण उद्योग में रुझान—निर्माण में डिजिटलीकरण

डिजिटल बुनियादी ढांचे में डिजिटल उपकरण शामिल हैं, जो निर्माण परियोजनाओं की योजना और कार्यान्वयन प्रक्रियाओं को बदलते हैं। वर्तमान में सबसे संक्षिप्त डिजिटलीकरण रुझान और वर्तमान विकास:

#### क) निर्माण में रोबोटिक्स

हालाँकि सीमित रोबोट पहले से ही निर्माण में उपयोग किए जाते हैं, उनका उपयोग काफी हद तक खतरनाक या दुर्गम क्षेत्रों में निदान जैसी भूमिकाओं तक ही सीमित है। फिर भी, इस समय ऊंची लागतें निषेधात्मक हैं। समय के साथ, रोबोट का उपयोग अधिक लागत प्रभावी हो जाएगा, और हम निर्माण में रोबोट के उपयोग में तेजी देखना शुरू कर देंगे।

साइट पर रोबोट का बढ़ता उपयोग दोहराए जाने वाले कार्यों वाले क्षेत्रों में शुरू होगा। अन्यत्र यह दूरस्थ निरीक्षण और दूरस्थ साइट विजिट या पहले से इकट्ठे मॉड्यूल को एक साथ रखने जैसे क्षेत्रों में मशीन-टू-मशीन संचार का रूप लेगा। फिर मशीनें उद्योग में सबसे खतरनाक काम करना शुरू कर देंगी। हालाँकि, हमारा मानना है कि 2050 तक अधिकांश वास्तविक भवन और निर्माण प्रक्रिया स्वचालित हो जाएगी। यह विशेष रूप से वही प्रभावी होगा जहां प्रौद्योगिकी संयोजन का उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए, ड्रोन साइट डेटा को कैप्चर कर रहे हैं ताकि वास्तविक समय 3डी मॉडल रोबोट और मानव रहित को भेजे जा सकें। मशीनें, बुलडोजर से लेकर खुदाई करने वाले तक, जो एक मानव पर्यवेक्षक के साथ मुख्य विध्वंस और निर्माण कार्य को पूरा करेगी।

हवाई निर्माण भी प्रचलित हो जाएगा, क्योंकि ड्रोन का उपयोग स्वयं निर्माण कार्य के लिए किया जाता है, शुरुआत में दुर्गम या असुरक्षित स्थानों पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया जाता है, विशेष रूप से वे स्थान जो ऊंचे हों। दीर्घावधि में, निर्णय लेने का बड़ा हिस्सा मानव से दूर चला जाएगा क्योंकि हम बेहतर डेटा और पूर्वानुमानित विश्लेषण द्वारा संचालित उद्योग बन जाएंगे।

#### ख) बीआईएम

आधुनिक निर्माण में अग्रणी तकनीक के रूप में: बिल्डिंग इंफॉर्मेशन मॉडलिंग (बीआईएम) सॉफ्टवेयर के माध्यम से काम करती है जो एक वास्तविक इमारत के डिजिटल जुड़वां का प्रतिनिधित्व करती है। बीआईएम के साथ, वर्चुअल मॉडलिंग और विजुअलाइजेशन – निर्माण और उपकरण से लेकर रखरखाव और मरम्मत तक संभव है। संक्षेप में, बीआईएम निर्माण परियोजनाओं के पूरे जीवन चक्र को कवर करता है। इससे त्रुटि दर कम होती है, सामग्री की खपत कम होती है और डिजिटल विजुअलाइजेशन के कारण समय कम हो जाता है।

#### ग) इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी)

स्वायत्त निर्माण स्थल के आधार के रूप में: उदाहरण के लिए, उपकरणों और निर्माण वाहनों को एक दूसरे के साथ नेटवर्क करता है। इसके अलावा, निर्माण उद्योग में प्रौद्योगिकी विकास, उदाहरण के लिए, इमारतों में हीटिंग, वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग के लिए सिस्टम पद उचित नियंत्रण कर सकता है।

#### घ) एआई, मशीन लर्निंग और बिग डेटा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग प्रक्रिया पैटर्न की पहचान करने और वर्कफ्लो को अनुकूलित करने के लिए किया जाता है। डेटा सेट के आधार पर, समस्याओं को अधिक कुशलता से हल करना भी संभव है। उत्पन्न डेटा सेट आधुनिक व्यावसायिक प्रक्रियाओं के लिए मौलिक हैं।

### च) कंटूर क्राफिटिंग, कई खूबियों वाली एक तकनीक

वास्तुकला के लिए कंटूर क्राफिटिंग के बहुत सारे लाभ हैं। दरअसल, यह इमारतों या किसी बुनियादी ढांचे को सीधे जगह पर प्रिंट करने की अनुमति दे रहा है। यह जरूरतमंद लोगों के लिए घर या भवन जैसे निर्माण कार्यों में मदद करने का एक सामान्य तरीका बन सकता है। लेकिन ये मशीनें किसी भी शहरी सेटिंग या पुल जैसे किसी बुनियादी ढांचे को प्रिंट करने में सक्षम हैं। चूंकि यह एक हिस्से में परियोजनाओं की छपाई कर रहा है। यह अधिक जटिल डिजाइन बनाने में सक्षम है, जो पारंपरिक निर्माण तकनीकों के साथ संभव नहीं है। इस तकनीक की बदौलत आर्किटेक्ट अपनी इच्छानुसार सभी डिजाइन बनाने के लिए स्वतंत्र हो सकते हैं। यह घर बनाने की एक बहुत तेज और कुशल तकनीक है उदाहरण के लिए, प्राकृतिक आपदाओं के बाद आपातकालीन घरों को प्रिंट करने का यह वास्तव में एक अच्छा तरीका प्रतीत होता है। आप केवल कुछ ही घंटों में और कम कीमत पर सीधे निर्माण स्थल पर 3डी प्रिंटेड घर प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक वास्तव में कुशलतापूर्वक विभिन्न प्रकार की परियोजना बनाने की संभावना प्रदान करती है। इसके अलावा, पूरी इमारत को प्रिंट करने के लिए कम शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है, क्योंकि प्रक्रिया स्वचालित होती है। वास्तुशिल्प निर्माण के लिए कंटूर क्राफिटिंग एक लागत प्रभावी तकनीक प्रतीत होती है।

### छ) आईएलआर में सर्वेक्षण और जांच कार्यों के लिए ड्रोन

ड्रोन – या मानव रहित हवाई वाहन (यूएवी) – पहले से ही कई निर्माण स्थलों और इंजीनियरिंग परियोजनाओं पर अच्छी तरह से स्थापित हैं। आजकल इनका उपयोग प्रगति ट्रैकिंग, साइट वॉकओवर, डेस्क अध्ययन और संपत्ति निरीक्षण के लिए किया जाता है। कुल मिलाकर ड्रोन विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण और निरीक्षण कार्यों के लिए अधिक व्यवहार्य विकल्प बन गए हैं क्योंकि प्रौद्योगिकी विकसित हो गई है, लागत कम हो गई है और नियम अद्यतन हो गए हैं। इसके लाभ इस प्रकार हैं:-

- i. पूर्व-निर्माण और प्रारंभिक साइट सर्वेक्षण
- ii. निर्माण निरीक्षण और परियोजना निगरानी
- iii. उत्पादकता और जवाबदेही को बढ़ावा दिया
- iv. उपकरण प्रबंधन और ट्रैकिंग
- v. साइट सुरक्षा और निगरानी
- vi. निर्माण विपणन और जीवनचक्र संचालन
- vii. बेहतर सुरक्षा प्रबंधन और समन्वय
- viii. फ्लुइक्स और निर्माण यूएवी कार्यान्वयन

### डिजिटल परियोजना प्रबंधन

फ्लुइक्स एक शक्तिशाली लेकिन हल्का प्लेटफॉर्म है जो ठेकेदारों और निर्माण पेशेवरों को कई लाभ प्रदान करता है। यह एक कोड-मुक्त, स्केलेबल प्लेटफॉर्म है जो कई सुविधाएँ प्रदान करता है जो परियोजना प्रबंधन और निष्पादन के लिए फायदेमंद हैं, जिनमें शामिल हैं:

- i. वर्कप्लो स्वचालन
- ii. इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर
- iii. टेम्पलेट निर्माण
- iv. फॉर्म पूर्ण करना
- v. डेटा रिपोर्टिंग
- vi. डेटाबेस एकीकरण

### डिजिटल निर्माण का भविष्य

प्रौद्योगिकी तेजी से बुनियादी ढांचे और निर्माण क्षेत्र को अन्य क्षेत्रों की तरह पुनर्परिभाषित कर रही है। दरअसल, जैसे-जैसे हम अधिक स्मार्ट प्रौद्योगिकी और डिजिटल समाधानों की ओर बढ़ रहे हैं, बदलाव का पैमाना और गति औद्योगिक क्रांति के बराबर होने का अनुमान है। भविष्य को देखते हुए और मानव रहित निर्माण स्थल से परे, कई अन्य भविष्यवाणियाँ हैं जो हम कर सकते हैं, जो हम इस पेपर में बाद में करेंगे। इंटरनेट ऑफ थिंग्स स्मार्ट शहरों

में नई, स्व-उपचार, ऊर्जा पैदा करने वाली या सांस लेने योग्य सामग्री से निर्मित स्मार्ट इमारतों को शक्ति प्रदान करेगा, जो भविष्य का मॉडल तैयार करने और बदलती परिस्थितियों के लिए तुरंत अनुकूलित करने में सक्षम हैं कस्टम घटकों और यहां तक कि पूरी इमारतों की 3डी प्रिंटिंग और 4डी प्रिंटिंग के आगमन से निर्माण कार्य तेज हो जाएगा, जहां स्व-रूपांतरित वस्तुएं आकार बदलने के लिए गर्मी, ध्वनि या नमी के स्तर में परिवर्तन पर प्रतिक्रिया करती हैं पहनने योग्य प्रौद्योगिकी श्रमिकों की चोट को कम करेगी और उत्पादकता में वृद्धि करते हुए श्रमिकों के स्वास्थ्य में सुधार करेगी; और कई अन्य नए नवाचार भी होंगे जिनके लिए हमें विनियमन और कौशल दोनों के संदर्भ में तैयार रहना चाहिए।

गतिशील नई सामग्रियों का उपयोग करके जटिल संरचनाएं बनाने के लिए रोबोट टीमों में काम करेंगे। निर्माण के तत्व स्वतः एकत्रित हो जायेंगे। ऊपर की ओर उड़ान भरने वाले ड्रोन लगातार साइट को स्कैन करेंगे, काम का निरीक्षण करेंगे और एकत्र किए गए डेटा का उपयोग समस्याओं के उत्पन्न होने से पहले भविष्यवाणी करने और हल करने के लिए करेंगे। मानव भागीदारी की आवश्यकता के बिना रोबोटिक क्रेन और खुदाई करने वालों और स्वचालित बिल्डरों को निर्देश भेजेंगे। मानव पर्यवेक्षक की भूमिका एक साथ कई परियोजनाओं को दूरस्थ रूप से प्रबंधित करने, ऑन-साइट मशीनों से 3डी और 4डी दृश्यों और डेटा तक पहुंचने, यह सुनिश्चित करने की होगी कि निर्माण विनिर्देश के अनुसार आगे बढ़ रहा है। साइट तक पहुंचने वाले बहुत कम लोग रोबोटिक रूप से उन्नत एक्सोस्केलेटन पहनेंगे और साइट पर मशीनरी और अन्य रोबोटों को स्थानांतरित करने और नियंत्रित करने के लिए तंत्रिका-नियंत्रण तकनीक का उपयोग करेंगे।

2050 में उद्योग कैसा दिखेगा और कैसे संचालित होगा, इसके लिए निम्नलिखित भविष्यवाणियाँ हैं:

- i. उद्योग तेजी से नवाचार पर ध्यान केंद्रित करेगा और ठेकेदार और ग्राहक दोनों कम जोखिम-प्रतिरोधी हो जाएंगे।
- ii. नए बिजनेस मॉडल, उत्पादों और सेवाओं के साथ बुनियादी ढांचा उद्योग का आकार और प्रस्ताव महत्वपूर्ण रूप से बदल जाएगा।
- iii. बुनियादी ढांचा कंक्रीट और स्टील से आगे बढ़कर नई सामग्रियों को शामिल करेगा।
- iv. नई नौकरियाँ और उद्योग सृजित होंगे – और कुछ गायब हो जायेंगे।
- v. जैसे-जैसे बुनियादी ढांचा बहु-कार्यात्मक होता जाएगा, केवल डिजाइन और निर्माण के बारे में सोचना एक पुरानी अवधारणा बन जाएगी।
- vi. निर्माण कार्य में रोबोट अधिक प्रचलित हो जायेंगे।
- vii. 3डी और 4डी प्रिंटिंग और स्व-परिवर्तित वस्तुओं का उपयोग करके निर्माण तेज हो जाएगा जो स्वयं-इकट्टे हो जाते हैं।
- viii. बड़े पैमाने पर परिवहन को तेज, सुरक्षित और पर्यावरण के लिए कम हानिकारक बनाने के लिए नए, विघटनकारी विचार सामने आएंगे।
- ix. हम एक्सोस्केलेटन जैसी पहनने योग्य तकनीक का तेजी से उपयोग करेंगे।
- x. उपकरणों और वाहनों पर प्रत्यक्ष तंत्रिका नियंत्रण उद्योग के लिए सुलभ होगा।

### निष्कर्ष

उदाहरण के लिए, रोबोटिक निर्माण वास्तव में आवास समस्याओं को हल करने और दूरदराज के क्षेत्रों में घर बनाने की अनुमति दे सकता है। और जैसा कि आप देख सकते हैं, भले ही ये प्रिंटर पहले से ही अद्भुत प्रोजेक्ट प्रिंट करने में सक्षम हैं, इस 3डी प्रिंटिंग तकनीक में अभी भी बहुत कुछ है और आने वाले वर्षों में यह और भी अधिक कुशल और सटीक हो सकता है। इस अत्याधुनिक तकनीक का भविष्य वास्तव में आशाजनक है और इससे बहुत से लोगों को मदद मिल सकती है। एडिटिव मैनुफैक्चरिंग का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है और निर्माण क्षेत्र उनमें से एक है। निःसंदेह, तैनाती योग्य रोबोट वास्तुकला का भविष्य है। गोपनीयता के मुद्दे और भयावह उपयोग से जुड़े खतरे, ऐसे हैकर्स जो माइक्रोचिप वाले व्यक्ति या लोगों को नियंत्रित या हेरफेर करने के लिए आवश्यक जानकारी तक पहुंचते हैं, को दूर करने की आवश्यकता होगी। लेकिन श्रमिकों की सुरक्षा में सुधार और निर्माण की दक्षता में सुधार के लिए संभावित प्रत्यक्ष तंत्रिका नियंत्रण का उपयोग किया जाना चाहिए।

### 1. अंतर बेसिन जल अंतरण की आवश्यकता

देश की कुल आबादी का लगभग 2/3 हिस्सा आजीविका के लिये कृषि पर निर्भर है। देश के सकल घरेलू उत्पादन में कृषि का योगदान लगभग 22 प्रतिशत है तथा भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि उत्पादन का विशेष योगदान है। सतत कृषि विकास, गरीबी कम करने तथा आर्थिक असमानताओं को कम करने में सिंचाई का महत्वपूर्ण योगदान है।

आजादी के बाद देश में सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि हुई है। वर्ष 1950 में जहां कुल 22 मिलियन वर्ष हैक्टेयर क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध थी, वहीं वर्तमान में बढ़ कर लगभग 99 मिलियन हैक्टेयर हो गई है तथा इसी दौरान खाद्यान्न उत्पादन भी 50 मिलियन टन से बढ़ कर लगभग 241 मिलियन टन हो गया है। खाद्यान्न उत्पादन की इस बढ़ोतरी का मुख्य कारण सतही तथा भूजल का उपयोग के माध्यम से सिंचाई सुविधाओं को आवश्यकतानुसार सुदृढ़ करना रहा है।

इसके बावजूद भी देश में कृषि का उत्पादन मानसून की अनिश्चताओं पर निर्भर करता है तथा इसकी क्षेत्रवार असमान उपलब्धि चिंता का विषय बना रहता है। देश के हिमालयी क्षेत्रों में अधिक वर्षा के कारण, विशेषकर गंगा तथा ब्रह्मपुत्र नदियों में बाढ़ के कारण असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में प्रत्येक वर्ष जन और धनहानि प्रचुर मात्रा में होती है, वहीं दूसरी ओर उसी समय प्रायद्वीपीय क्षेत्रों के कुछ भागों में सामान्य से भी कम वर्षा होने के कारण राजस्थान, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा तमिलनाडु राज्यों के कुछ क्षेत्रों में सूखे के कारण आर्थिक एवं सामाजिक संकट उत्पन्न होते हैं। गर्मी के मौसम में पीने के पानी की भी समस्या हो जाती है।

वर्तमान में भारत की कुल आबादी लगभग 140 करोड़ है जो वर्ष 2050 तक लगभग 150-180 करोड़ तक हो जाने की उम्मीद है। इस आबादी की खाद्यान्न की जरूरतें पूरी करने के लिये लगभग 450 मिलियन टन खाद्यान्न की आवश्यकता होगी तथा इतने उत्पादन के लिये वर्ष 2050 तक सिंचाई क्षमता को 16 करोड़ हैक्टेयर कृषि भूमि तक बढ़ाना होगा। परंपरागत उपायों से भारत की अधिकतम सिंचाई क्षमता लगभग 14 करोड़ हैक्टेयर है। अतः इस सिंचाई क्षमता को 16 करोड़ हैक्टेयर तक बढ़ाने के लिये अन्य उपाय करने की आवश्यकता है। साथ ही इस बढ़ती हुई शहरी तथा ग्रामीण आबादी के लिये पीने के पानी की जरूरतों को भी पूरा करना बहुत बड़ी चुनौती है जिसे हमें स्वीकार ही करना पड़ेगा।

विभिन्न क्षेत्रों में जल की उपलब्धता में असमानता को कम करने, तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की खाद्यान्न तथा पीने के लिये स्वच्छ जल की आपूर्ति तथा बाढ़ व सूखे से प्रतिवर्ष होने वाली भयंकर नुकसान को कम करने के लिये जल का अंतर-बेसिन अंतरण करना समय की मांग है। इससे मानसून में समुद्र में व्यर्थ बह जाने वाले मूल्यवान जल को विभिन्न भंडारण जलाशयों में रोक कर जल की कमी वाले क्षेत्रों / बेसिनों में अंतरण करके जल का ईष्टतम और सार्थक उपयोग किया जा सकेगा।

ऐसे क्षेत्रों में जहां बड़े भंडारण जलाशयों के माध्यम से सिंचाई उपलब्ध न कराई जा सकती हो वहां अन्य जल संरक्षण उपाय जैसे: रूफ टॉप रेन वॉटर हारवेस्टिंग, भूजल पुनर्भरण, तट बांधों और छोटे बांधो, बारिश के माध्यम से वाटरशेड प्रबंधन इत्यादि सभी की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है। कम वर्षा वाले क्षेत्रों तथा सूखाग्रस्त क्षेत्रों में ऐसे उपाय अधिक प्रभावकारी नहीं है।

## 2 अंतर बेसिन जल अंतरण के उदाहरण :

अंतर बेसिन जल अंतरण भारत तथा दुनिया के अन्य देशों के लिये कोई नया नहीं है। दक्षिण भारत में वर्ष 1885 में आरम्भ की गई पेरियार-येगाई परियोजना 19 वीं शताब्दी की सर्वाधिक उल्लेखनीय परियोजना है। इसके अलावा हमारे देश में अंतर बेसिन जल अंतरण की अन्य परियोजनाओं नामतः कुरुनूल-कडप्पा नहर, तेलगू गंगा परियोजना इन्दिरा गांधी नहर परियोजना तथा सरदार सरोवर परियोजना उल्लेखनीय हैं।

अन्य देशों में भी अंतर बेसिन जल अंतरण की कई योजनाएं कार्यान्वित की गई हैं। कनाडा में जल विद्युत के लिये अंतर बेसिन जल अंतरण की 16 परियोजनायें कार्यान्वित की गई हैं। अमेरिका में अब तक कार्यान्वित सबसे लंबी तथा केलीफोर्निया राज्य जल परियोजना है जो सेकोमेटो नदी के जल को 1000 मीटर लिफ्ट करके लगभग 715 किलो मीटर लम्बी सुरंग के द्वारा दक्षिण की ओर पहुँचाती है। इसी प्रकार चीन में इस तरह की योजनाएं प्राचीन काल से ही विद्यमान हैं तथा कई परियोजनायें प्रस्तावित हैं तथा इन पर काम भी चल रहा है।

## 3. अंतर बेसिन जल अंतरण की वर्तमान परियोजना

वर्ष 1980 में भारत सरकार के जल संसाधन मंत्रालय ने जल संसाधन विकास के लिये राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना बनाई। इस परियोजना में हिमालय नदी विकास तथा प्रायद्वीपीय नदी विकास घटक हैं। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के प्रस्तावों को ठोस स्वरूप देने के लिये राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की स्थापना एक स्वायत्त शासी निकाय के रूप में की गई। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने विभिन्न तकनीकी एवं अन्य अध्ययन करने के उपरान्त 30 संभावित लिंक परियोजनाएं चिन्हित की हैं इसमें से 14 लिंक हिमालय नदी घटक में तथा 16 प्रायद्वीपीय नदी घटक में हैं। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने अब तक 16 परियोजनाओं का संभाव्यता रिपोर्ट पूरी की हैं तथा शेष परियोजनाओं की संभाव्यता रिपोर्टों को विभिन्न चरणों में पूरा किया जा रहा है।

केन्द्र सरकार की तत्कालीन लोकतांत्रिक गठबंधन सरकार ने इस परियोजना के अतिशीघ्र कार्यान्वयन के उपाय सुझाने के लिए एक कार्यबल का गठन किया। इस कार्यबल ने दो कार्य योजना भारत सरकार को सौंपे। इसके उपरान्त 31 दिसम्बर 2004 के प्रभाव इस कार्यबल को समाप्त कर दिया गया तथा इस कार्यबल के बचे हुये कार्यों को पूरा करने के लिये एक विशेष प्रकोष्ठ का गठन किया गया।

केन्द्र की वर्तमान प्रगतिशील गठबंधन सरकार के न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रायद्वीपीय नदियाँ से आरम्भ करके देश की नदियों को जोड़ने की संभाव्यता की पूर्ण परामर्शी आधार पर व्यापक समीक्षा करना शामिल है। एक ही राज्य में बहने वाली नदियों के सब बेसिनों को जोड़ने की संभाव्यता का भी पता लगाया जायेगा।

तदनुसार प्रायद्वीपीय घटक को ज्यादा महत्व देते हुए निम्नलिखित 5 लिंक परियोजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर क्रियान्वयन के लिये चुना गया जो इस प्रकार है :-

1. केन-बेतवा लिंक
2. पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक
3. दमनगंगा पिंजल लिंक
4. पार-तापी-नर्मदा लिंक
5. पोलावरम-विजयवाड़ा लिंक

किसी भी परियोजना के कार्यान्वयन के लिये संबंधित राज्यों में सहमति आवश्यक होती है। अतः केन्द्र सरकार ने राज्यों में सहमति बनाने के प्रयोजन से केन्द्रीय जल आयोग के अध्यक्ष की अध्यक्षता में एक सहमति समूह का गठन किया। इस समूह के प्रयासों से 25 अगस्त 2005 को एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुये मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश राज्यों के माननीय मुख्य मंत्रियों तथा केन्द्र के माननीय जल संसाधन मंत्री ने माननीय प्रधान मंत्री की विशिष्ट उपस्थिति में केन-बेतवा लिंक परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के लिये एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किये। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने केन-बेतवा लिंक परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार कर ली है। जिसके क्रियान्वयन का कार्य भी अब तेजी से चल रहा है।

दमनगंगा पिंजल लिंक परियोजना एवं पार-तापी-नर्मदा लिंक परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनाने के लिए गुजरात राज्य एवं महाराष्ट्र राज्य के माननीय मुख्य मंत्रियों तथा केन्द्र के माननीय जल संसाधन मंत्री ने माननीय प्रधान मंत्री की उपस्थिति में दमनगंगा पिंजल लिंक परियोजना एवं पार-तापी-नर्मदा लिंक परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनाने के लिये एक त्रिपक्षीय समझौते पर 3 मई 2010 को हस्ताक्षर किये हैं। रा.ज.वि.अ. इन दोनों परियोजनाओं की विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन तैयार कर लिया है जिस पर जल बंटवारे संबंधी और अन्य मुद्दों को हल करने संबंधी प्रयासी जारी है।

#### **4. पार-तापी-नर्मदा लिंक**

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के प्रायद्वीपीय घटक के अंतर्गत पार-तापी-नर्मदा लिंक परियोजना प्रस्तावित है, जिसका मूल उद्देश्य दक्षिण गुजरात की पार, औरंगा, अंबिका तथा पूर्णा नदियों में उपलब्ध अधिशेष जल को उत्तर गुजरात के सूखाग्रस्त सौराष्ट्र एवं कच्छ क्षेत्र में स्थानांतरण करना है। इस परियोजना से परियोजना क्षेत्र में स्थानीय जल समुदाय की सभी जरूरतों के लिये जल की आपूर्ति के बाद शेष जल को ही उत्तर गुजरात के सौराष्ट्र तथा कच्छ क्षेत्रों में स्थानांतरित किया जायेगा।

##### **4.1 तकनीकी पहलू:**

प्रस्तावित पार-तापी-नर्मदा लिंक परियोजना के अन्तर्गत सात बांधो का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है, जिस में पार नदी पर झेरी तथा मोहनकवचाली बांध नार नदी (पार की सहायक नदी) पर पैखेद बांध, औरंगा नदी की सहायक तान नदी पर चासमांडवा बांध अंबिका नदी पर चिक्कार बांध अंबिका की सहायक खापरी नदी पर दाबदर बांध, तथा पूर्णा नदी पर केलवान बांध प्रस्तावित है। झेरी बांध महाराष्ट्र राज्य के नासिक जिले के पेठ तालुका में मोहनकवचाली, पैखेद तथा चासमांडवा बांध गुजरात राज्य के वलसाड जिले के धरमपुर तालुका में तथा बिक्कार, दाबदर एवं केलवान बांध गुजरात राज्य के डांग जिले के आहवा तालुका में बनेगा। इस परियोजना में पैखेद चासमांडवा एवं चिक्कार बांध के नीचे वीयर का भी निर्माण होगा। इसके अलावा 6 विद्युत - घर तथा 400 किलोमीटर लंबी लिंक नहर का निर्माण भी प्रस्तावित है। लिंक नहर वलसाड जिले के धरमपुर तालुका, डांग

जिले के आहवा तालुका नवसारी जिले के बांसदा तालुका: तापी जिले के व्यारा एवं सोनगढ तालुका, सूरत जिले के मांडवी एवं मांगरोल तालुका; भरंथ जिले के वालिया झगडिया एव नाडोड तालुका, बडोदरा जिले के तिलकबाडा एवं संखेडा तालुका से गुजरेगी। प्रस्तावित सभी सात बांधों को लिंक नहर के जरिये नर्मदा नहर सिस्टम के अंतर्गत मियागाम शाखा नहर में जल डालने की अभिकल्पना की है।

पार-तापी-नर्मदा जोड़ परियोजना का उद्देश्य दक्षिण गुजरात एवं पडोसी राज्य महाराष्ट्र की पार औरंगा अंबिका तथा पूर्णा नदियों में उपलब्ध अधिशेष जल को उत्तर गुजरात के सूखाग्रस्त सौराष्ट्र एवं कच्छ क्षेत्र में स्थानांतरण करना है। जलाशय क्षेत्र के सामीप्य में स्थानीय लोगों की सभी जरूरतों के लिये जल सुनिश्चित करने के उपरांत अधिशेष जल को स्थानांतरण किया जायेगा ।

लिंक नहर मार्ग में आनेवाले क्षेत्रों में भी सिंचाई सुविधा एवं पेयजल की आपूर्ति प्रदान करेंगी। कछार में वर्ष 2050 में सभी आवश्यकताओं के लिये जल की आंतरिक मांग को ध्यान में रखते हुए पार, औरंगा, अंबिका एवं पूर्णा नदी कछार में उपलब्ध 1350 Mm अधिशेष जल को स्थानांतरण किया जायेगा। अधिशेष जल का उपयोग पार-तापी-नर्मदा लिंक परियोजना द्वारा नर्मदा नहर सिस्टम के अंतर्गत नियागाम शाखा नहर के कमान्ड क्षेत्र में दिया जायेगा। जिससे नर्मदा नदी के जल की बचत होगी, जिसे उत्तर गुजरात के सूखाग्रस्त सौराष्ट्र एवं कच्छ क्षेत्र में पीने के पानी, सिंचाई सुविधा एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ती के लिये उपयोग किया जायेगा। इस परियोजना द्वारा कुल 1.69 लाख हेक्टर क्षेत्र में वार्षिक सिंचाई की सुविधा प्रदान की जायेगी जिसमें गुजरात राज्य के नवसारी, सूरत, डांग एवं भरंच जिले में लिंक नहर के मार्ग में 0.52 लाख हेक्टेयर नये कमान्ड क्षेत्र एवं नर्मदा नहर सिस्टम की मियागाम शाखा नहर के 1.17 लाख हेक्टर कमान्ड क्षेत्र को जल की आपूर्ति की जायेगी तथा इससे नर्मदा का जो पानी सरदार सरोवर बांध में बचेगा उससे नर्मदा नहर सिस्टम के द्वारा सौराष्ट्र तथा कच्छ के लगभग इतने ही क्षेत्र में सिंचाई की क्षमता का विस्तार किया जायेगा तथा पीने एवं अन्य उपयोगों के लिये जल उपलब्ध होगा। परियोजना में प्रस्तावित सभी 6 जल विद्युत-घरों से 93 MkwH विद्युत पैदा की जायेगी। उक्त सुविधा के अलावा इस परियोजना के निकट के गांवों में पेयजल एवं अन्य सुविधा प्रदान की जायेगी।

#### **4.2 सामाजिक एवं पर्यावरणीय पहलू:**

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा पूरे किये गये संभाव्यता प्रतिवेदन के अनुसार इस परियोजना के सामाजिक एवं पर्यावरणीय पहलू निम्न प्रकार हैं।

पार नदी पर मेरी तथा मोहनकवचाली बांध एवं नार नदी (पार की सहायक नदी) पर पैखेद बांध का निर्माण प्रस्तावित है जिसमें झेरी बांध के निर्माण से लगभग 836 हेक्टेयर भूमि डूब में आयेगी। इसमें से 408 हेक्टेयर वन भूमि है। इस बांध से 7 गांवों के लगभग 1122 व्यक्ति एवं 685 पशुधन प्रभावित होंगे। जबकि मोहनकवचाली बांध के निर्माण से लगभग 1494 हेक्टेयर भूमि डूब में आयेगी। इसमें से 743 हेक्टेयर वन भूमि है। इस बांध से 13 गांवों के लगभग 3194 व्यक्ति एवं 1764 पशुधन प्रभावित होंगे इसी तरह पैखेद बांध के निर्माण से लगभग 954 हेक्टेयर भूमि डूब में आयेगी। इसमें से 317 हेक्टेयर वन भूमि है। इस बांध से 11 गांवों के लगभग 2266 व्यक्ति एवं 1570 पशुधन प्रभावित होंगे।



औरंगा नदी पर प्रस्तावित चासमांड्या बांध के निर्माण से लगभग 615 हैक्टेयर भूमि खूब में आयेगी। इसमें से 300 हैक्टेयर वन भूमि है। इस बांध से 7 गांवों के लगभग 1434 व्यक्ति एवं 612 पशुधन प्रभावित होंगे।

अंबिका नदी पर प्रस्तावित चिक्कर बांध के निर्माण से लगभग 742 हैक्टेयर भूमि डूब में आयेगी। इसमें से 300 हैक्टेयर वन भूमि है। इस बांध से 9 गांवों के लगभग 1016 व्यक्ति एवं 682 पशुधन प्रभावित होंगे। जबकि खापरी नदी पर प्रस्तावित दाबदर बांध के निर्माण से लगभग 1249 हैक्टेयर भूमि डूब में आयेगी। इसमें से 614 हैक्टेयर वन भूमि है। इस बांध से 11 गांवों के लगभग 1780 व्यक्ति एवं 1176 पशुधन प्रभावित होंगे।

पूर्णा नदी पर प्रस्तावित केलवान बांध के निर्माण से लगभग 1829 हैक्टेयर भूमि डूब में आयेगी। इसमें से 890 हैक्टेयर वन भूमि है। इस बांध से 17 गांवों के लगभग 4020 व्यक्ति एवं 2540 पशुधन प्रभावित होंगे।

रा.ज.विज. इस परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार कर रहा है तथा इस प्रक्रिया के दौरान इस योजना से जुड़े सभी सामाजिक एवं पर्यावरणीय पहलुओं का विस्तृत अध्ययन किया जा रहा है। पर्यावरण पर होने वाले सभी हानि तथा लाभ का अध्ययन, वनों पर असर जंगली जानवरों पर असर जैसे पहलुओं को शामिल करते हुये पर्यावरण पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा रहा है। इस अध्ययन में पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाले मुद्दों का पता लगाकर इनका असर कम करने के लिये एक पर्यावरणीय प्रबंधन योजना भी तैयार की जा रही है तथा इस प्रबंधन योजना को लागू करने के लिये एक मानीटरिंग योजना भी बनाई जा रही है।

प्रस्तावित योजना से विस्थापित होने वाले लोगों के पुनर्वास तथा पुनःस्थापन के लिये एक समग्र योजना बनाई गई है। परियोजना के लागू होने से क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था पर होने वाले प्रभाव का व्यापक अध्ययन किया जा रहा है। विस्थापितों के लिये पुनर्वास तथा पुनःस्थापन पैकेज बनाते समय पूर्व के अनुभवों तथा कठिनाईयों जैसे कि जमीन के बदले जमीन तथा नगद प्रतिपूर्ति में होने वाली कठिनाईयों तथा विस्थापितों को योजना में रोजगार का भी ध्यान रखा जा रहा है। केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा बनाई गई पुनर्वास तथा पुनःस्थापन नीति-2007 तथा गुजरात तथा महाराष्ट्र राज्यों की संबंधित नीतियों को भी ध्यान में रखा जा रहा है। इसके अलावा पुनर्वास तथा पुनःस्थापन को राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन के कार्यक्रमों से भी जोड़ा जायेगा। कुल मिलाकर उद्देश्य यह है कि पुनर्वास तथा पुनःस्थापन पैकेज ऐसा हो जिससे विस्थापितों को योजना का नहीं लगे तथा वे योजना को पूरा करने में बढचढ कर हिस्सा ले।

इस परियोजना के कार्यान्वयन से पहले इसके तकनीकी, पर्यावरणीय सामाजिक तथा अन्य सभी पहलू पर विस्तार से तकनीकी तथा अन्य सर्वेक्षण किये जा रहे हैं तथा योजना के सभी गुण दोषों के आधार पर इसके कार्यान्वयन का फैसला लिया जाएगा। इस प्रक्रिया में योजना से प्रभावित तथा लाभान्वित होने वाले परिवार संबंधी सभी पहलुओं पर बातचीत करके उनके विचारों को योजना में समाहित किया जायेगा तथा संबंधित राज्य सरकारों तथा सभी हिस्सेदारों से व्यापक बातचीत करके ही योजना को क्रियान्वित किया जायेगा।

#### **4. 3 पार-तापी-नर्मदा लिंक परियोजना से लाभ**

पार-तापी-नर्मदा लिंक परियोजना के तहत दक्षिण गुजरात की पार, औरंगा, अंबिका तथा पूर्णा नदियों में उपलब्ध अधिशेष जल को उत्तर गुजरात के सूखाग्रस्त सौराष्ट्र एवं कच्छ क्षेत्र में स्थानांतरण करना है। इस परियोजना

का मूल उद्देश्य जहा तक हो सके प्रस्तावित सभी जलाशयों के आसपास के क्षेत्र के गांवों में कर के लिये तथा सिंचाई के लिये जल उपलब्ध कराने के बाद अधिशेष जल को अन्तरण किया जायेगा। लिंक नहर के मार्ग में गुजरात राज्य के नवसारी, सूरत, डांग एवं भरुच जिले में, लिंक नहर के मार्ग में 0.52 लाख हेक्टर नये कमान क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा तथा पीने के लिये जल उपलब्ध कराया जायेगा। नर्मदा नहर सिस्टम मियागाम शाखा नहर के कमांड क्षेत्र में लगभग 1.17 लाख हेक्टर क्षेत्र को सिंचाई के लिये जल प्रदान किर जायेगा तथा इससे नर्मदा का जो पानी सरदार सरोवर बांध में बचेगा उससे नर्मदा नहर सिस्टम के द्वारा सौरार तथा कच्छ के लगभग इतने ही क्षेत्र में सिंचाई की क्षमता का विस्तार किया जायेगा तथा पीने एवं अन्य उपयो के लिये जल उपलब्ध होगा। इस परियोजना द्वारा कुल 1.69 लाख हेक्टर क्षेत्र में वार्षिक सिंचाई की सुकि प्रदान की जायेगी। प्रस्तावित अलग-अलग बांधों एवं नहर फॉल (केनाल फॉल) पर 6 जल विद्युतघरों का निर्मा होगा जिन से 93 Mlkwह विद्युत का वार्षिक उत्पादन होगा। उपरोक्त फायदों के अलावा परियोजना से होने वाले अन्य लाभ इस प्रकार हैं।

1. प्रस्तावित बांधों से जल भंडारण की सुविधा उपलब्ध होगी जिससे मत्स्य पालन को बढ़ावा मिलेगा, पर्य स्थलों का विकास होगा तथा गन्ध जीवों को वर्ष भर जल उपलब्ध होगा।
2. कियान्वयन के दौरान रोजगार के अवसरों का सृजन होगा।
3. कियान्वयन के दौरान आर्थिक गतिविधियां बढ़ने तथा कार्य के लिये अधिक मात्रा में मजदूरों तथा अन्य उपस्थिति बढ़ने से मूलभूत सुविधाओं जैसे कि स्वास्थ्य, शिक्षा, जल आपूर्ति, बाजार, संचार के म पंचायत घर आदि में वृद्धि होने से इस क्षेत्र के लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा।

#### 4.4 सारांश

अन्त में सारांश यह है कि दक्षिण गुजरात की पार, औरंगा अंबिका तथा पूर्णा नदियों के प्राप्य अधिशेष जल को उत्तर गुजरात के सूखाग्रस्त सौराष्ट्र एवं कच्छ क्षेत्र में स्थानांतरण करने के लिये पार-तापी-नर्मदा लिंक परियोजना तकनीकी रूप से संभाव्य है तथा वित्तीय रूप से व्यवहार्य है। इस परियोजना के सामीप्य के गांधी में पेयजल एवं अन्य सुविधा प्रदान की जायेगी इस योजना के कार्यान्वयन से कुल 169 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में वार्षिक सिंचाई की सुविधा प्रदान की जायेगी जिसमें गुजरात राज्य के नवसारी, सूरत, डांग एवं नसंच जिले में लिंक नहर के मार्ग में 0.52 लाख हेक्टेयर नये कमान्ड क्षेत्र एवं नर्मदा नहर सिस्टम की मीयागाम शाखा नहर के 1,17 लाख हेक्टेयर कमांडर क्षेत्र में सुविधा प्रदान करने से नर्मदा के बचने वाले जल से सौराष्ट्र तथा का के सूखाग्रस्त में नर्मदा नहर प्रणाली के माध्यम से लगभग इतने ही क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा का नये क्षेत्रों में विस्तार किया जायेगा। प्रस्तावित सभी बयों एवं नहर फॉल (केनाल फोल) पर कुल 325 MW की क्षमता के 6 जल विद्युतघरी का निर्माण होगा जिन से 93 Mlkwह जल विद्युत का वार्षिक उत्पादन होगा।

परियोजना के निर्माण कार्य के दौरान रोजगार के अवसर बढ़ेंगे तथा क्षेत्र का आर्थिक विकास होगा। इसके अलावा बहुत से परोक्ष लाभ भी इस योजना से होंगे। इस योजना के सामाजिक तथा पर्यावरणीय पहलुओं का आययन किया जा रहा है तथा इसके नकारात्मक पहलुओं के प्रभाव को कम करने के लिये पर्यावरणीय प्रबंधन योजना बनाई जा रही है। सभी मागीदारों तथा संबंधित व्यक्तियों तथा राज्यों से व्यापक बातधीत के जरिये सहमति बनाकर ही इस योजना का कियान्वयन किया जायेगा।

## अनुवाद चर्चा वैज्ञानिक अनुवाद एवं पारिभाषिक शब्दावली के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. अनिल कुमार द्विवेदी

### साहित्यिक और वैज्ञानिक अनुवाद:

साहित्यिक अनुवाद बहु स्तरीय होता है। भाषा का विशेष प्रयोग होने के कारण सिर्फ शब्दकोषी भाषा उसके लिए यथेष्ट नहीं होती है। शब्दों को संदर्भ के साथ देखना पड़ता है और उनका प्रयोग अनुवादक जांच-परख करता है। आधुनिक साहित्य में तो शब्दों का व्यक्तिगत प्रयोग बढ़ा है। फलस्वरूप शब्द संकेत व्यक्ति के आधार पर अर्थ देते हैं। ऐसे में उसका उसी स्तर पर अर्थग्रहण करना होता है। वहाँ पर तथ्य से अर्थ तत्व और दर्शन समाहित होता है। सृजनात्मक साहित्य में भावों का समाहार है जो कि प्रायः अमूर्त होते हैं। शब्दों के माध्यम से उन्हें मूर्त रूप देने का प्रयास करता है। साहित्य अपने युग की अभिव्यक्ति होती है। अतः अनुवादक को उस युग से परिचित होना जरूरी है। एक साहित्यकार ही साहित्यिक सामग्री का अनुवाद करे तो उसमें अधिक सफल होता है। लक्ष्य भाषा में नयी इमारत वही खड़ी कर सकता है। लक्ष्य भाषा में सृजन की सारी जटिलता सारी समस्या और सारी व्यवस्था मूल को समाहित कर के चलता है।

जब कि वैज्ञानिक तकनीकी में शब्द की समस्या एक भिन्न स्तर पर रहती है। वह तथ्य परक संदर्भों की समस्या है। यहाँ पर मूर्त रूपों का नई भाषा में मूर्त रूपांतरण होता है। सूचना प्रधान होने के कारण समानार्थी शब्दों को कोश में ढूँढा जा सकता है। सब भाषाओं में अपनी अपनी वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली बनी होती है। संदर्भानुसार उन शब्दों को ढूँढ कर वह नई सामग्री का निर्माण कर लेता है। वह शब्दों का अभिधा के आधार पर अर्थ निकाल लेता है। बस यही देखना है कि किस संदर्भ में वह शब्द प्रयुक्त हुआ है या नहीं एक ही शब्द का संदर्भ बदलने पर अर्थ बदल जाता है। अतः उस संदर्भ के आशय वाला शब्द व्यवहार कर सकता है। यहाँ एक संदर्भ में शब्द एकार्थी होता है। वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली की यह सबसे बड़ी सहूलियत है। यहाँ हम 'पारिभाषिक शब्दावली' का प्रयोग कर एक आसान राह पर चल सकते हैं। यह भाषा विषय को विवरण, विश्लेषण, विवेचन करती है। इस प्रकार के साहित्य पर देश – काल या सांस्कृतिक ऐतिहासिक कारक प्रभाव नहीं डालते। दूसरे शब्दों में वैज्ञानिक तथ्य लगभग सार्वभौमिक होते हैं। यह सूचना भर भाषानुवाद में रूपांतरित करते हैं इनका विवरण लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना होता है। यहाँ शब्द लक्ष्य भाषा में न होने पर मूल का शब्द भी रख देते हैं। क्योंकि वैज्ञानिक शब्दावली अपने-अपने देश के लोगों, वहाँ के अनुभवों एवं अनुसंधान आदि से जन्म लेती है। अतः वह शब्दावली स्थानीय शब्द निर्माण शैली, परंपरा एवं व्यक्ति –स्थल विशेष को महत्व दे कर बनती है। उसका अनुवाद हर पाठक हर देश में अपने-अपने ढंग से नहीं कर सकता। यह विधि निर्मित व्यवस्था और लक्ष्य भाषा में स्वीकार्य समतुल्य शब्दों से बनती है। अतः उसकी अपनी सीमायें होती हैं। अनुवादक के लिए यहाँ यह बंधन मानना जरूरी है। अतः इस भाषा की सामग्री का अनुवाद अलग-अलग अनुवादक अपनी तरह से नहीं कर सकते। वह पारिभाषिक शब्दावली के अनुशासन में रह कर करता है। बहुत ज्यादा स्वतंत्रता नहीं रहती (वाक्य निर्माण संबंधी शैली गत थोड़ी छूट जरूरी रहती है) वैज्ञानिक नियमों में और क्रिया-प्रक्रियाओं में बहुत छूट नहीं होती। वैविध्य की संभावना लगभग नहीं होती। विषय विवेचना के लिए विषय का ज्ञान जरूरी है। लक्ष्य भाषा में उस संदर्भ में प्रयुक्त शब्दावली से परिचय होना भी जरूरी है। मूल अर्थ को लेकर लक्ष्य भाषा में उसे उचित ढंग से प्रस्तुत न करने पर वह अनुवाद बोझिल हो जाता है। अटपटा लगने लगता है। संप्रेषण में कठिनाई पैदा कर सकता है। शब्द के बाद प्रतिशब्द एक-एक कर रखते जाना ही अनुवाद है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा में जीवन के विशेष अनुभव ही ज्ञान कहलाते हैं। यह ज्ञान-विज्ञान उस धरती के जीवन, वहाँ की जलवायु, परंपरा आवश्यकता, भौतिक जीवन की समस्या से जन्म लेता है, अनायास नहीं। सप्रयास और व्यवहारिक, सामाजिक बोलचाल एवं कहार की प्रयोगशाला से जन्म लेकर नूतन तथ्य संबलित साहित्य निर्मित होता है। कल्पना कर उन्हें विशेष परीक्षण निरीक्षण कर सत्य रूप में लाते हैं। वह साहित्य अनुवाद के लिए जब प्रस्तुत होता है वहाँ वे आवश्यकताएँ हो सकती हैं, पर उन अनुभवों की देन न होने के कारण वह शब्दावली प्रायः नहीं होती। उस समय या तो मूल को ग्रहण कर लेते हैं, या उसकी तरह गढ़

(सहायक निदेशक (राजभाषा))

लेते हैं या फिर अपने (लक्ष्य में) कुछ शब्दों को उसके समकक्ष वह अर्थ वहन करने वाला मान लेते हैं। तब उसका प्रयोग कर अनुवाद कर लेते हैं। यहाँ पर भाषा की पारदर्शी और एकाकी होना उसका सबसे बड़ा गुण होगा। इसीलिए सटीकता पर बल दिया जाता है। अभिधा के सहारे अनुवाद करने में दिक्कत नहीं रहती। जबकि साहित्यानुवाद में स्थिति पहले ही स्पष्ट की जा चुकी है। अतः साहित्य और विज्ञान अनुवादों का लक्ष्य एक है, प्रक्रिया – प्रविधि भी एक है। परंतु उसकी समस्यायें भिन्न-भिन्न हैं, औजार भिन्न हैं और स्तर भिन्न भिन्न हैं। प्रतीक दोनों में हैं, पर प्रतीकार्थ भिन्न हैं।

यही कारण है कि इक्कीसवीं सदी में तकनीकी वैज्ञानिक अनुवाद को इतना महत्व दिया जा रहा है। देश में 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' पर अरबों रुपये खर्च हो रहे हैं। देश में केंद्रीय सरकार ने अनुवाद जरूरी बना कर देश भर में उसके प्रशिक्षण की व्यवस्था कर रखी है। विश्वविद्यालय स्तर पर चारों ओर प्रयोजनमूलक हिंदी और प्रयोजनी अनुवाद के पाठ्य क्रमों की सुदीर्घ प्रणाली विकसित हो चुकी है। शब्दावली निर्माण हेतु विशाल एक केंद्रीय आयोग वर्षों से कार्यरत है जिसने अब तक बारह लाख शब्द निर्मित कर लिए हैं। इस क्रम में सैकड़ों ग्रंथ निर्मित हुए हैं। भारतीय भाषाओं में अनुवाद का यह कार्य व्यापक स्तर पर चल रहा है। भारतीय भाषाओं में आधुनिक तकनीकी वैज्ञानिक सामग्री का अभाव नहीं रहेगा और ना ही प्रोत्साहन का अभाव ही है। आज इस दिशा में कर्मठ कार्यकर्ताओं का अभाव अभिलक्षित हो रहा है।

### i) विषयगत प्रामाणिकता

### ii) यथा तथ्यता

### iii) सुपाठ्यता

इस अनुवाद के लिए जरूरी है। इसके अलावा शैली को आगे चलकर समाहित करें तो सोने पर सुहागा की कहावत साबित होती है। यहाँ पर संकेत अपने अपने संदर्भ में एकदम विशिष्ट अर्थ वहन करते हैं। चिन्हां का उपयोग भी उसी प्रकार विशिष्ट होता है। ये वैज्ञानिक तकनीकी प्रतीक सामान्य भाषा में नहीं चलते। उन्हें विशेष जानकार ही समझ पाता है। हाँ कुछ चिन्ह वैश्विक हो जाते हैं और सारे विश्व में उनका प्रयोग समरूप में होता है। अतः कह सकते हैं कि यह भाषा भी विशेषीकृत है। वैज्ञानिक तकनीकी भाषा को वैसे ही वैज्ञानिक तकनीकी रूप में लक्ष्य भाषा में रखना होता है।

### पारिभाषिक शब्दावली और उसका महत्व:

यह वैसे ही जैसे डालर को रुपयों में बदलना अथवा रुबल या दीनार या येन को रुपयों में करेंसी के स्तर पर परिवर्तन करना होता है। फर्क यही है कि करेंसी में भाव घटते-बढ़ते हैं। परंतु तकनीकी प्रयोग हेतु प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का मूल्य स्थिर होता है। इसीलिए पारिभाषिक शब्दावली को वैज्ञानिक साहित्य की आधारशिला कहा जाता है। यहाँ शब्द की (अर्थगत) सीमा बांध कर सुनिश्चित कर दी गई होती है। व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक स्तर पर इसकी तीन विशेषताएँ होती हैं।

(i) ये सीमित अर्थ की सूचना देते हैं।

(ii) उस अर्थ को वहन करने हेतु एक ही शब्द प्रयुक्त होता है। विकल्प नहीं।

(iii) यहाँ अर्थ विशिष्ट होता है। एक संदर्भ में प्रयुक्त शब्द सामान्य अर्थ नहीं, वह संदर्भ का अर्थ प्रदान करता है।

जब प्रयोग बढ़ जाता है तो वही शब्द सामान्य जैसे लगने लगते हैं। प्रयोक्ता भूल जाता है कि इसका निर्माण विशेष अर्थ में हुआ। यह भी ध्यान में रखना जरूरी है कि हम भाषा विकास के दौर से गुजर रहे हैं। हिंदी में तकनीकी वैज्ञानिक प्रयोग की भाषा और शब्दावली बन रही है। साथ-साथ देश है इस क्षेत्र में तीव्र गति से आगे बढ़ रहा

है। अनुसंधान के माध्यमों से इससे नए-नए क्षेत्र जुड़ रहे हैं। जो लोग स्थिर मानक शब्दावली की बात करते हैं उन्हें इस बात को भी ध्यान में रखना होगा। हम अभी स्थिर एवं जड़ पारिभाषिक शब्दावली के स्तर तक नहीं पहुँचे। विकास के दौर में रघुवीर द्वारा निर्मित शब्दावली तक को पीछे छोड़ चुके हैं। आज उनका महान कार्य हमारे लिए ऐतिहासिक महत्व का जरूर है। परंतु प्रयोग के स्तर पर तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत एवं निर्मित शब्दावली ही विशेष महत्व रखती है।

फिर भी यूनेस्को द्वारा प्रकाशित प्रो.ए. सेवोदिन के ग्रंथ 'साइंटिफिक एंड टेक्निकल ट्रांसलेशन एंड अदर एस्पेक्ट आफ लेंग्वेज प्रॉब्लम' के अनुसार पारिभाषिक शब्दों की प्रमुख विशेषता निम्न हैं—

i) **उच्चारण में सरलता** पारिभाषिक शब्द का उच्चारण प्रयोग करने वाले के लिए सरल हो। तभी वह उसे ज्यादा से ज्यादा व्यवहार करने में समर्थ होगा। यहाँ पराई भाषा से ग्रहण किये शब्द को अपने अनुकूल बनाने की प्रक्रिया खूब चल रही है।

Under अंदर

Lantern – लालटेन

Interim—अंतरिम

Academy –अकादमी

Tragedy –त्रासदी

Comedy –कामेदी

Glucose—ग्लूकोस

ii) **अर्थ प्रकटीकरण** : पारिभाषिक शब्द का अर्थ स्पष्ट, सुबोध और सुनिश्चित होना चाहिए। अर्थ— संकोच या अर्थ विस्तार से फिर वह पारिभाषिक न रह कर सामान्य शब्द बन जाता है।

iii) **विषयबद्धता** : विषयबद्ध पारिभाषिक एक विषय संदर्भ में अर्थ प्रदान करता है। दूसरे संदर्भ में या दूसरे विषय क्षेत्र में वही अर्थ नहीं देगा। यहाँ पर उस विषय की सूचना वही शब्द देगा। जैसे **Government** शब्द का अर्थ सरकार और शासन दोनों हैं। हमारे देश में हिंदी का रूप संस्कृतनिष्ठ और उर्दूनिष्ठ दोनों स्वीकार्य होने के कारण बहुत बार दो शब्द पारिभाषिक रूप में स्वीकार्य होते हैं। जैसे कार्यालय, दफ्तर नौकर चपरासी अफसर, अधिकारी

iv) **संक्षिप्तता** – शब्द संक्षिप्त हो तो बार-बार प्रयोग में सुविधा रहती है। जैसे कर, आय, बैंक, ऋण, तार, इनका प्रयोग खूब होने लगा है क्योंकि ये शब्द संक्षिप्त और आसान हैं।

v) **सृजनक्षमता**: उर्वरता पारिभाषिक शब्द में प्रत्यय, उपसर्ग लगा कर अनेक शब्द बनाने की क्षमता होनी चाहिए जैसे उत्पादक उत्पादकीय, विद्युत विद्युतीकरण कर कराधान, राज्य— राजकीय इस प्रकार प्रयोक्ता का कार्य आसान हो जाता है।

(vi) **स्वायत्ता** : मूलनिष्ठता पारिभाषिक शब्द जिस मूल से बना, उस अर्थ के निकट हो। तभी वह अर्थ सही ढंग से स्पष्ट होगा। जैसे प्रेषण संप्रेषण, निकट—निकटता, सन्निकट।

(vii) स्वतंत्रता एवं स्वायत्ता ये अर्थ प्रदान में स्वायत्त होते हैं और विशिष्ट होते हैं। इससे कोई संदेह या दुविधा नहीं होती जैसे नियम अधिनियम, नियमावली।

viii) सांकेतिकता – इसमें शब्द संक्षिप्तिकरण करते हैं। विज्ञान में इसका विशेष महत्व है। जैसे H<sub>2</sub>O + व का प्रयोग पानी के लिए होता है।

इन विशेष व्यवस्थाओं के बीच अनुवाद उन संकल्पनात्मक शब्दों का रूपांतरण होता है। मूल तो आविष्कर्ता अपनी भाषा में उन्हें जन्म देता या ढालता है। अनुवाद के समय उस संकल्पना पर जोर देकर ढालना पड़ता है। यहाँ पर्याय चुनते समय कुछ कम या कुछ अधिक हो जाता है। उसे बोध के स्तर पर मूल जैसा प्रभावी होना चाहिए। यह हमेशा संभव नहीं होता। कोई शब्द ग्रहणीयता का प्रश्न बना रहता है। कोई शब्द ग्रहण हो जाता है या चल पड़ता है। कोई छूट जाता है। इसमें लोकमानस महत्वपूर्ण होता है। राजनीति और सामाजिक चलन ज्यादा भूमिका निभाते हैं। आज AIR का हिंदी 'आकाशवाणी' खूब चलता है। TV का वैसे ही दूरदर्शन चल पड़ा है। प्रो. सूरज भानसिंह ने स्वीकारा है। वे कहते हैं—

"हर नया ज्ञान भाषा से शब्दावली और अभिव्यक्ति की मांग करता है। जो अन्वेषक नया आविष्कार देता है, वही उसे नाम देता है।" इस प्रकार शब्दों का जन्म मूल रूप में भिन्न है तो अनुवाद में उसे समझ उसी प्रकार उत्पन्न करना या अनुकूलन करना पड़ता है। जब कोई संकल्पना विशिष्ट है, तो उसे व्यक्त करने वाला शब्द भी विशिष्ट होता है। यह सामान्य भाषा में हो भी सकता है, या अर्थ विशिष्ट व्यक्त करेगा। अतः सामान्य हिंदी जानकार इनके विशेष संदर्भ को लेकर विशेष अर्थ में उसे जाने तब इसकी उत्पादकता पूर्ण मानी जाती है।

यहाँ स्मरण की बात है कि पारिभाषिक शब्दावली की चर्चा सामान्यजन के लिए नहीं है। इसका प्रयोग विशिष्टजन के लिए है जो उस क्षेत्र से संबद्ध हैं या उसमें किसी न किसी रूप में कार्यरत हैं, औरों का उससे काम कम पड़ता है।

यह वास्तव में ध्यान देने की बात है कि तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली एक-एक विषय विशेष के लिए रूढ़ हुआ करती हैं। उसका सामान्य प्रयोग अन्य संदर्भ में संभव नहीं है। अतः हिंदी में तकनीकी शब्दावली के संदर्भ में जो 'दुरुहता', अबोध्यता और 'अप्रचलित' शब्दावली का आरोप लगाया जाता है, यह अनावश्यक और दुर्भावना प्रेरित भी हो सकता है। जो उसका प्रयोग नहीं चाहते, वे कुछ विशेष उद्देश्य रखकर ऐसा आक्षेप कर देते हैं। उदाहरण के लिए मेडिकल में प्रयुक्त पूरी शब्दावली जर्मन, जापान अथवा फ्रेंच आधार पर बनी हैं। हमारा उस प्रणाली, दवा अथवा प्रक्रिया में कहीं कोई योगदान नहीं है। मानवीय उपकार को ध्यान में रख कर हम कृतज्ञता पूर्वक उसे ग्रहण कर रहे हैं। इसे साधारण दृष्टि से देखें तो यह एकदम अटपटी, दुरुह और अपरिचित लगेगी। परंतु इनका संबंध उत्पादन, अनुसंधान, प्रयोग एवं अन्य दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय अविच्छेद्य संबंध है। अतः इसमें संशोधन, परिवर्तन, समीकरण या भारतीयकरण संभव नहीं होगा। इससे हम एक वृत्तहर कार्यक्रम से कट कर स्थानीय बन कर रह जायेंगे। उससे जुड़ी वैश्विक प्रगति से नये संधानों से हमारा संबंध छूट जायेगा। यह तकनीक में ज्यादा महत्व रखती है क्योंकि बहुत तेजी से परिवर्तन आ रहे हैं। इस शब्दावली से छेड़छाड़ हमारे हित में नहीं होगी। जो इन क्षेत्रों (जैसे डाक्टर, इंजीनियर, टेक्नोक्रेट आदि) जुड़े हैं, इन शब्दों का उन्हीं से संबंध है। वे इसके साथ अभ्यस्त हो जाते हैं और उनकी मेधा वैसी भी बन जाती है। इस प्रकार तकनीकी शब्दावली के अंतर्राष्ट्रीय अंश पर टिप्पणी करते समय हमें विशेष सावधान होना पड़ेगा। उसमें नाम सूचक शब्दों के अलावा भाषा के अन्य अंगों विचार कर सकते हैं। अब हम इस बात को ध्यान में रख कर हिंदी के भाषागत प्रयोग पर चर्चा करना अधिक उपयुक्त एवं प्रासंगिक पाते हैं। लंबे अर्से तक केंद्रीय शब्दावली आयोग सिर्फ हिंदी शब्दावली निर्माण पर ध्यान केंद्रित किये रहा, परंतु अब सांविधिक आवश्यकता के कारण यह राष्ट्रीय जिम्मेदारी का केन्द्र बन गया है। क्षेत्रीय भाषा शब्दावली का कार्य तेजी से करने में तत्पर है। यहाँ तक कि बोडो जैसी सद्य स्वीकृत भाषा पर भी अनुवाद के सहारे उल्लेखनीय प्रगति करने में सफल हुआ है। परंतु हिंदी में निर्मित पारिभाषिक शब्दावली ज्यादातर अंग्रेजी से बनी है। भारत की अन्य भाषायें भी इसे आदर्श मान कर चलती हैं। हिंदी अनुवाद में सतर्क रहने की विशेष आवश्यकता है। इसी कारण संस्कृत की ओर झुकाव अधिक है। वैसे संविधान बहुविध सामासिक संस्कृति की बात कहता है। विकास सारे देश में चल रहा है। नैसर्गिक विकास प्रक्रिया में शब्द निर्माण एवं भाषा परिवर्तन का क्रम साथ-साथ जारी

है। अनुवाद प्रक्रिया को सहज और सरल बनाने हेतु हिंदी में अनुवाद को मानक रूप प्रदान करना होगा। अतः हिंदी में प्रयुक्त शब्दावली को भारतीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रदत्त दिशा निर्देशानुसार बनाना होगा। इसमें आयोग की बनाई शब्दावली का प्रयोग करना होगा। इसमें किसी संशोधन का भी दायित्व इसी का है। प्रयोग करते-करते जहाँ समस्या हो वहाँ सुधार कर सकते हैं। ऐसे में सारे देश के लिए समस्तर पर अनुवाद कार्य संभव होगा।

### वैज्ञानिक तकनीकी अनुवाद की समस्यायें:

शब्दों में तो विशेष अर्थ संकल्पना भरी होती है। वे ही उसके बीज होते हैं। परंतु लक्ष्य भाषा में तदनुरूप आनुषंगिक व्याकरणिक इकाइयाँ भी होती हैं। संप्रेषण लाने हेतु वाक्य गठन पर भी ध्यान देना जरूरी है। जैसे कि हम परिचित हैं, अंग्रेजी में वाक्य बहुत लंबे रखने की परंपरा है। परंतु हिंदी में ऐसा नहीं है। अतः एक अंग्रेजी वाक्य को हिंदी में वैज्ञानिक तथ्य व्यक्त करने के लिए प्रस्तुत करते समय सर्वनाम, विशेषण एवं असमापिका समापिका क्रियाओं का प्रयोग एकाधिक बार करना होता है। हिंदी में लिंग निर्धारण एक और समस्या है। तकनीकी वैज्ञानिक विषय तो क्लीव होते हैं या अप्राणिवाचक। उनको हिंदी की बाइनरी लिंग प्रणाली में ढालना होता है। हाल ही में उद्भावित वाट्सऐप गूगल ट्वीटर टेलीग्राम, कंप्यूटर माउस, इंटरनेट, फेसबुक, इन शब्दों का यादृच्छिक लिंग निर्धारण करना बड़ी समस्या है। वह लोक प्रचलन से भिन्न नहीं हो सकती। मूल का भी वचन/लिंग अनुकरण अनुवाद में संभव नहीं। अतः अनुवादक को स्वविवेक से मार्ग निकालना होता है। उसी प्रकार अनुवाद में शैली का चुनाव करते समय समान शैली लें या रुढ़ शब्द व्यवहार करें। संस्कृत के अनुसार चलें या उर्दू या देशज प्रयोग करें। इस तरह की व्याकरणिक समस्याओं को लांघ कर चलना पड़ता है। यह ललित साहित्य के अनुवाद से भी बढ़ कर कलात्मक भाषा में किया गया कार्य है। अनुवाद में वह स्तर बनाना बहुत बड़ी चुनौती है। यहाँ अनुवादक विषय की गहनता के साथ-साथ भाषा के लावण्य से भी रू-ब-रू होता है। यहाँ बोधगम्यता से आगे बढ़कर साहित्यिक स्तर तक पहुँचना पड़ता है। यह अनुवाद की सीमा नहीं, बल्कि शक्ति निर्धारित करता है।

विज्ञान सामग्री प्रकाशन की सुविधा होती जा रही है। भारतीय भाषाओं में अपने अनुसंधान लब्ध परिणामों अथवा कार्यक्रम संबंधी सूचनाओं या सेमिनार पेपर को हिंदी में लिखने का प्रोत्साहन नहीं पाते। अभी भी यथेष्ट प्रयोगजनित अभ्यास न होने के कारण वे लोग हिंदी व्यवहार नहीं करते संकोचवश वे अंग्रेजी में लिखते हैं। अनुवाद में विज्ञान के जानकार कहाँ हैं जो दक्ष अनुवाद कर सकें। इसलिए ही अनुवाद में श्रेष्ठ वैज्ञानिक साहित्य नहीं आ पाता है। बहुत औसत दर्जे का काम हिंदी पाठकों को मिल पाता है। जो होता भी है उसे वृहत्तर पाठक वर्ग नहीं मिलता। सीमित रहने को वैज्ञानिक आज भी मन नहीं बना पाता। वह विश्व की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशन हाउसों तक अपना काम भेज देता है। कहीं रोड़ा, कहीं कांटा, कहीं ऊँचा नीचा (ऊबड़-खाबड़) ... हर तरह की जमीन मिलती है।

## जल संरक्षण की ऐतिहासिक मिसाल – यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

शुभम् कुमार

कल्पना कीजिए कि किसी ने मोढेरा के सूर्य मंदिर जैसा एक अलंकृत मंदिर जमीन के अंदर उल्टा कर दिया हो। एक भव्य बावड़ी के विभिन्न स्तरों को बनाने के लिए सीधे खड़े उन उत्कृष्ट नक्काशीदार खंभों की कल्पना करें और उन सीढ़ियों की कल्पना करें जो पानी के स्रोत तक पहुँचती हैं। यह बिल्कुल वैसा ही है, जैसे कोई यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल – रानी की वाव (पाटन, गुजरात) का वर्णन कर रहा हो। व्यापक रूप से भारत की सबसे बेहतरीन बावड़ियों में से एक के रूप में पहचाने जाने वाले इस भव्य स्मारक को अब 100 रुपये के करेंसी नोट पर भी अंकित किया गया है।



### रानी की वाव का इतिहास

सोलंकी शासन को गुजरात का स्वर्ण युग माना जाता है। उनके शासनकाल के दौरान कई महत्वपूर्ण विकास हुए, विशेषकर 11वीं शताब्दी में राजा भीम प्रथम द्वारा माउंट आबू में प्रसिद्ध मोढेरा सूर्य मंदिर और दिलवाडा मंदिरों का निर्माण कराया गया था। यह उन्हीं के लिए था, कि 11वीं शताब्दी के अंत में – उनकी पत्नी रानी उदयमती ने पाटन में इस आश्चर्यजनक बावड़ी का निर्माण करवाया था।

ऐसा माना जाता है कि इस बावड़ी का निर्माण 1032 ई. में शुरू हुआ था और इसे पूरा होने में 20 साल से अधिक का समय लगा। इसे रानी उदयमती के पुत्र – राजा कर्ण ने पूरा किया था। कुछ वर्षों के बाद, सरस्वती नदी में बाढ़ आ गई जिसने इस संरचना को पूरी तरह से गाद से ढक दिया था। इस सुंदर बावड़ी को जल्द ही भुला दिया गया जब तक कि 1958 में एएसआई (भारतीय पुरातत्व सोसायटी) द्वारा सर्वेक्षण शुरू हुआ और धीरे-धीरे, अगले 32 वर्षों में, रानी की वाव का पता चला। इसे अंततः 2014 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी गई।

कनिष्ठ अभियंता, कार्यालय मुख्य अभियंता (उत्तर), राजविआ, लखनऊ



## रानी की वाव की विशेषता

- यह एकमात्र ऐसी संरचना है जिसे किसी रानी ने किसी राजा के लिए बनवाया था। आमतौर पर, ताज महल जैसे अधिकांश स्मारक राजाओं द्वारा निर्मित कराए गए हैं।
- यह बावड़ी 7 स्तर गहरी है और इसमें लगभग 292 नक्काशीदार खंभे हैं (आज केवल 226 ही बचे हैं)।
- इसमें प्रमुख देवताओं की लगभग 500 मूर्तियां हैं और छोटी मूर्तियों की 1000 अन्य नक्काशी हैं – यानी कुल 1500 संरचनाएं हैं।
- यह एकमात्र बावड़ी है जिसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल का सम्मान दिया गया है।

## रानी की वाव की संरचना और जल संरक्षण

रानी की वाव का निर्माण मारू-गुर्जरा शैली में किया गया है – जो मोढेरा मंदिर में देखी जाने वाली शैली के समान है। बलुआ पत्थर से निर्मित, 12 एकड़ में फैली यह बावड़ी पूर्व-पश्चिम अक्ष पर 65 मीटर लंबी और 20 मीटर चौड़ी है। रानी की वाव की वस्तुकला यह सुनिश्चित करती है कि यह जल स्रोत और जलाशय दोनों रूप में उपयोगी हो। इसमें कुल 7 स्तर हैं। जैसे-जैसे आप नीचे के स्तरों में उतरेंगे, आप देखेंगे कि वास्तुकारों ने सोच-समझकर सीढ़ियाँ बनाई हैं। जबकि मुख्य सीढ़ियाँ चौड़ी और ऊँची हैं, उनके बीच छोटी पिरामिडनुमा सीढ़ियाँ हैं जो आपके आवागमन को आसान बनाती हैं। सीढ़ियों का उल्टा पिरामिड आकार इस बावड़ी और मोढेरा के सूर्य मंदिर की एक और समान विशेषता है।

रानी की वाव में एक कुंड (पानी की टंकी), एक कुआँ (28 मीटर गहरा) और अतिरिक्त पानी को संग्रहित करने के लिए एक बड़ा जलाशय है। कुएं में सात स्तर हैं जिनमें से पहले तीन सीढ़ीदार हैं। सबसे ऊपरी स्तर का व्यास 10 मीटर है जिसके बाद बाकी परतें नीचे की ओर फ़नल होती हैं। सबसे निचली परतें वे हैं जो जलाशय से जुड़ी हुई हैं।

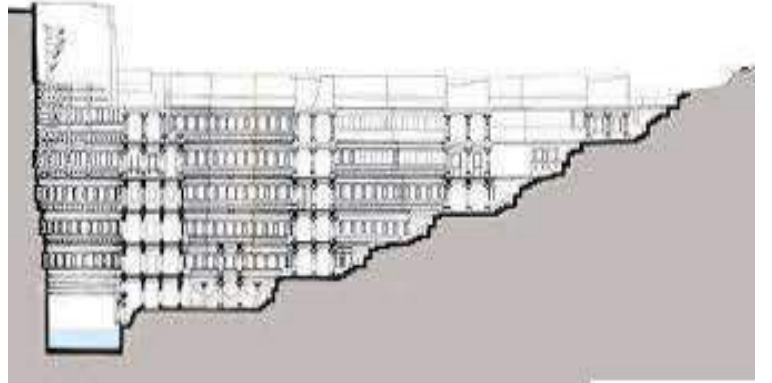
रानी की वाव के लिए पानी का स्रोत सिर्फ भूजल नहीं बल्कि सरस्वती नदी भी थी जो सिर्फ 500 मीटर दूर थी। मानसून के दौरान, पानी कुएं के स्तर तीसरे/चौथे स्तर तक भर जाता था और पूरे वर्ष उपयोग होता था, अगले वर्ष के मॉनसून से पहले तक वाव में जल छठे स्तर तक उतर जाता था। यदि मॉनसून में वर्षा पर्याप्त मात्र में नहीं होती या मॉनसून में देरी होती तो जलाशय में मौजूद यह जल आस-पास के लोगों द्वारा उपयोग में लिया जाता था। इस तरह रानी की वाव में जल को संरक्षित रखा जाता था।

रानी की वाव की पूरी संरचना एक इंटरलॉकिंग तंत्र का उपयोग करके बनाई गई है। इसमें दो प्रकार के इंटरलॉक का उपयोग किया गया है – पहला स्तंभों में पाया गया कि जिसमें पत्थरों को आपस में लॉक किया गया है। दूसरा प्रकार फर्शों पर पाया गया जहां पत्थरों के बीच शीशम की लकड़ी का एक टुकड़ा डाला गया।

इसका कारण यह था कि बारिश या बाढ़ के दौरान, लकड़ी फैलती थी और बंद पत्थरों के बीच के अंतराल को भर देती थी – जिससे और अधिक स्थिरता सुनिश्चित हो जाती थी।

रानी की वाव की दीवारों पर पटोला डिज़ाइन उकेरे गए हैं। ये पैटर्न पाटन में बुनी जाने वाली प्रसिद्ध जीआई-टैग पटोला साड़ियों के लिए प्रेरणा के रूप में काम करते हैं।

रानी की वाव के अंदर ढेर सारी अन्य दिलचस्प नक्काशीदार छवियां हैं। यूनेस्को द्वारा सम्मानित आज से लगभग 1000 वर्ष पूर्व बनाई गई यह अद्भुत संरचना हमें प्राचीन काल में जल की महत्ता से अवगत कराती है और वर्तमान में जल संरक्षण के लिए प्रेरित करती है।



### हिन्दी में अनुवाद का प्रारंभ

भारत में ही नहीं अनुवाद की प्राचीन पश्चिमी परम्पराएँ भी रही हैं। जिन्होंने भारतीय दर्शन, साहित्य, ज्ञान और विज्ञान को भाषा के बंधन से मुक्त कर इसे जनभाषा का रूप दिया है एवं भाषा के उत्तरोत्तर सदुपयोग का मार्ग प्रसस्त किया है।

आजादी के बाद हर क्षेत्र ने अपनी पहचान बनाने, अपना स्थान सुरक्षित करने और राष्ट्र में विस्तार के लिए हिन्दी अनुवादों का सहारा लिया। ये पहले हिन्दी को आधार भाषा बनाने लगे। तब से लेकर भारत की अन्य सभी भाषाओं में अनुवाद होने लगा। इसके साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में रूपांतरण होने लगा। आज यह सर्वाधिक स्वीकार्य रूट बन चुका है। हिन्दी अनुवाद की गौरवशाली स्थिति बन गई। अर्थात् अनुवाद ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया और इससे भारतीय साहित्य की समृद्धि का मार्ग प्रशस्त हुआ है। हिन्दी में इस अर्धशती में साहित्यिक और तकनीकी वैज्ञानिक दोनों अनुवादक हुए।

### साहित्यिक अनुवाद की विशेषता

भाषा के मामले में सामान्य भाषा और साहित्यिक भाषा में जैसे अंतर होता है, अनुवादक भी सामान्य भाषा को अनुवाद के जरिये साहित्य भाषा बनाता है। अर्थात् लक्ष्य भाषा को सृजनशील भाषा के रूप में पुनर्गठित करता है। अगर यहाँ वह सामान्य भाषा के स्तर पर ही रुक गया तो अनूदित कृति सामान्य कृति ही रहेगी। वह सृजनात्मक कृति के रूप में अनूदित नहीं हो सकेगी। चाहे कविता हो या कहानी, नाटक हो या एकांकी। मूल लेखक सब सृजनकार्य भाषा के माध्यम से ही करता है। अनुवादक भाषा के प्राणों में प्रवेश करता है, फिर वहाँ से वह अनुवाद में मग्न होता है। अब तक अनुवादक मूल कृति का अनुभव कर रहा था। अब अनुवाद में वह उसी अनुभव को नई भाषा में सृजन रूप दे रहा होता है। अतः अनुभव में प्राप्त सामग्री का वह सृजक दूसरे शब्दों में अनुसृजक की भूमिका में होता है।

साहित्यिक अनुवाद का कार्य स्पष्ट और सतही नहीं होता। अनुवादक का संवेदनशील व्यक्तित्व उस सारी भाषा में पुनर्गठित कर व्यक्त करता है। पर उसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अन्य किसी अनुवाद में इतना दायित्व नहीं होता। कुछ लोग तो कहते हैं साहित्यिक अनुवादक मूल की संवेदना और सृजन को धारण करने की क्षमता के साथ लक्ष्य में उसे जीवंत सृजनरूप देने का प्रमाण देती है। इस अर्थ में वह कहीं अधिक आगे बढ़ जाता है। साहित्यिक अनुवाद में मूल और लक्ष्य दोनों का साक्षी अनुवादक ही होता है। अतः वही इसकी क्षमता, इसकी गहराई से परिचित होता है। इस दृष्टि से रचनाकार और अनुवादक में कितना अंतर होता है, यह स्पष्ट होता है और हम स्वयं अनुभव कर सकते हैं। परंतु वह गौण नहीं हो सकता। महत्व को नकारना मूल की उपेक्षा ही है। अनुवादक अगर अनुवाद की प्रक्रिया में कुछ नहीं जोड़ता है तो उसे मूल लेखक से अधिक नहीं तो कम भी नहीं कहेंगे। लेकिन ऐसी तुलना का विशेष महत्व नहीं है। लेखक लेखक है, अनुवादक अनुवादक हैं। दोनों अपनी सीमा और भाव भूमि से परिचित हैं। एक –दूसरे का अतिक्रमण करना उचित नहीं है। दोनों के क्षेत्र भिन्न हैं, लक्ष्य भिन्न है। तथा पाठक भी भिन्न हैं।

पश्चिमी अनुवाद चिंतकों ने इसे स्वीकार किया है। परंतु अपने ढंग से, अपने शब्दों में। नाइडा और केटफोर्ड कहते हैं – यह सर्जनात्मक रूपांतरण है। यह एक ऐसी स्वायत्त सर्जनात्मक विधा है जिसकी अपनी अलग सत्ता है। यह एक ऐसी अंतर्निष्ठ रचना है जिसमें दो संरचनाएँ समाहित होकर अंतर्व्याप्त हो जाती है। स्रोत भाषा के मूल पाठ की संरचना का निकटतम पाठ तो होता है, लेकिन वह पाठ लक्ष्य भाषा की बुनावट में भी ढलता है। अर्थात् अनुवादक उसे लक्ष्य भाषा में फिर से बुन कर एक जीवंत कृति के रूप में ढालता है, आकार देता है। यह Mechanical restructuring नहीं होता बल्कि Creative evolution होता है।

इस संबंध में पश्चिमी भाषाविदों ने ऐसे अनुवाद कार्यो एवं सामग्री को चार वर्गों में बांटा है –

(हिन्दी अनुवादक)

## भाषा परक दृष्टि

पाठ का अर्थ ग्रहण उपलब्ध भाषा के आधार पर किया जाता है। इसमें मुख्यतः – ध्वनि, शब्द, वाक्य ये तीन स्तर होते हैं। कृति में छंद हो तो वहाँ ध्वनि उच्चारण से अपना सौन्दर्य (नाद सौंदर्य) और संगीतात्मक लय तान स्वर तीनों के समन्वय से जो प्रभाव होता है, वह ध्यान देने योग्य होती है। यह रसानुभूति कोई अनुवाद में समस्वर में लक्ष्य भाषा द्वारा संभव नहीं है। यहाँ पर भावसौन्दर्य शब्द संयोजन पर निर्भर है। वह भाषांतरण करने पर अक्षुण्ण नहीं रह सकता, उदाहरण के लिए वैदेही विलास (उपेन्द्र भंज) महाकाव्य आदि से अंत तक व अक्षर से हर पंक्ति मंडित है। उनकी प्रसिद्ध पंक्ति है।

कालिका वकालिका .....

इसमें क की अनुप्रास छटा प्रसिद्ध है। इसे केवल लिप्यंतरण में ही सुरक्षित रखा जा सकता है। संसार की अन्य किसी भाषा में ऐसा शब्द भंडार पाना और संजो कर यह ध्वनि सौन्दर्य (नाद माधुर्य) उत्पन्न करना असंभव है। वैसे भी ओड़िया कविता अपनी नादात्मक सौन्दर्यशीलता के लिए विश्व भाषा समुदाय में अनुपम स्थान रखती है। अतः नादाश्रित ऐसे संस्कृत निष्ठ शब्दों का प्रयोग कर भी अनुवाद उसके माधुर्य, गत्यात्मकता या गतिशीलता कोमलकांत पदावली की अंतस्पर्शी भावना उत्पन्न कर पाना किसी भी अनुवादक के लिए चुनौती है।

तुलसी की पंक्ति—

कंकन किकनि नूपुर धुनि सुनि ।  
कहत लखन सन राम हृदय गुनि ॥  
मानहु मदन दुदंभी दीन्हीं  
मनसा विश्व विजय केंह कीन्ही ॥

इन पंक्तियों में क और म की लयात्मक आवृत्ति पाठक को मुग्ध करती है। भंज काव्य में ऐसे प्रयास वैदेही विलास ही नहीं अन्य कई कृतियों में पग-पग पर संजोये गए हैं। अतः उन्हें कवि सम्राट कहा जाता है।

## संरचना परक दृष्टि

साहित्य में संरचना उसका अभिन्न अंग होता है। कविता में लय इसे व्यक्त करती है। इस लय से संवेदनशीलता का बोधन होता है। तुक साम्य हो तो वह और विशिष्ट हो जाती है। राम की शक्ति पूजा (निराला) सर्वाधिक सशक्त उदाहरण है। इसका छंद इसमें प्रयुक्त तुक और इसकी लय तीनों ने इसे उत्कृष्ट रूप प्रदान किया। यह लंबी कविता अपनी संरचना के लिए जानी जाती है। इसका रूपांतरण हो सकता है। पर ऐसी संरचना (परंतु इस बहुस्तरीय संरचना को पहचान कर अनुवाद में ढाल पाना संभव नहीं। यहाँ संरचनात्मक अनूठेपन का अंग्रेजी उदाहरण है

Thou child of joy

shout round me

Let me hear thy shouts.

पाश्चात्य कवि विलियम वर्ड्सवर्थ की कविता का अनुवाद इस प्रकार है —

ओ, प्रफुल्लता के बालक रे !

चारों ओर उठा किलकारी,  
मैं भी तो सुन लूं अब तेरे  
उन्माद घनेरे ॥

यह अनुवाद यतीन्द्र कुमार ने हिंदी में संरचनात्मकता में उलटफेर के साथ हिंदी में बोधगम्य बनाया है । यहाँ वाक्य का संरचनात्मक पुनर्गठन किया गया है । संबोधन चिन्ह के साथ पंक्ति परिवर्तन हुआ Me को छोड़ कर shout शब्द की जगह किलकारी का काव्यात्मक प्रयोग किया । दूसरी बार प्रयुक्त shouts के लिए अनुवादक ने हर्ष-उन्माद के जरिये संरचना का परिवर्तन किया । इस प्रकार कवि के आशय तक पहुँकर नयी संरचना, जो मूल को समाता है, अर्थ और लय का समावेश कर एक नई काव्य उक्ति रखी हैं । यहाँ पर आत्मिक संबंध का परिचय दिया है । सतही तौर पर तुक भिन्न रूप मिलाने का प्रयास हुआ है । प्रत्येक वाक्य के अंत में रै की पुनरावृत्ति भिन्न भिन्न अर्थ में हुई है अतः यह कर्णकटु या अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं । वरन स्वाभाविक रूप में काव्याशय व्यक्त करने में समर्थ है । एक सार्थक अनुवाद अज्ञेय ने स्वयं किया है—

मैंने देखा

एक बूंद सहसा

उछली सागर के झाग से

रंग गई क्षण भर

ढलते सूरज की आग से ।

कवि ने स्वयं अंग्रेजी अनुवाद में इसका रूपांतरण करते हुए संरचना को अक्षुण्ण रखा है । कवि अंग्रेजी पर गहरी पकड़ है । हिंदी का मुहावरा और वैसा ही अंग्रेजी प्रयोग देकर संरचनात्मक बदलाव किया है

I saw

drop suddenly

fly from the scund of sea

flare for a second

कवि अपने अनुवाद में बहुत कुछ संरचनागत छेड़ छाड़ करता है । अंग्रेजी में वह आशय लाने के लिए काफी छूट ले रहा है । flare शब्द विशेष अर्थ में है, उसी प्रकार fire का आगमन हुआ है जो mellowing के साथ तालमेल बिठा रहा है । अंग्रेजी अनुवाद में वही भाव परिवर्तन के साथ प्रस्तुत किया है । कवि ने सौम्यता लाने mellowing sun शब्द के जरिये नई रचना रखी है ।

जॉन कीट्स की प्रसिद्ध पंक्ति है —

My heart aches and a drowsy numbness pains

इसे यतीन्द्र तिवारी —

हृदय हो रहा, विकल त्रसित हो उठी चेतना मेरी

अनुवाद में बहुत स्वीकार्य मुहावरा हृदय हो रहा विकल बनाया है । उसी तरह drowsy numbness को त्रसित हो उठी चेतना मेरी यह शब्द समावेश कर संरचना को संपूर्ण बनाया गया है । अन्यथा संप्रेषण संभव न था । हृदय का दर्द और चेतना का त्रसित होना दोनों के लिए अनुवादक ने भी भिन्न पद प्रयोग कर संरचना के प्रति सचेतनता व्यक्त की है । इसी दृष्टि से यह अनुवाद उल्लेखनीय बन जाता है । पहले अनुवादक स्रोतभाषा के पाठक का चयन करके उसमें निहित संदेश का विश्लेषण करता है । इस दौरान वह स्रोतभाषा के पाठ का अर्थ ग्रहण करता है । अर्थ ग्रहण के पश्चात् उसे लक्ष्यभाषा में अंतरित करने की प्रक्रिया में आता है तथा लक्ष्यभाषा में उसका एक स्वरूप निश्चित कर लेता है । इसके पश्चात् वह लक्ष्यभाषा के स्वरूप एवं प्रकृति के अनुसार उस संदेश को पुनर्गठित करता है ।

जिसका अंतिम स्वरूप अनूदित पाठ के रूप में पाठक के समक्ष आता है । इस संदर्भ में एक बात ध्यान रखने की है कि अनुवाद प्रक्रिया के उपर्युक्त चरण अनुवाद की संकल्पना पर पूरी तरह से प्रकाश नहीं डालते, फिर भी आधार रूप में इस सिद्धांत को महत्वपूर्ण माना जाता है साथ में अनुवाद प्रक्रिया के संदर्भ में भी चर्चा की जाती है । अनुवादक जब अनुवाद के लिए मूलपाठ का चयन कर लेता है, तब उसे पहला कार्य यही करना होता है कि वह मूलपाठ का सम्यक विश्लेषण करे । इससे यह सम्यक रूप से उसका सही अर्थ ग्रहण कर सके । इस प्रक्रिया में वह पाठ के कथ्य तक पहुँच सकता है । यह विश्लेषण मुख्य रूप से इन स्तरों पर किया जाता है—

1. भाषा के स्तर पर ।

2. विषयवस्तु के स्तर पर ।

अतः अनुवाद सिर्फ एक साहित्यिक कार्य नहीं है । उसकी पहचान जीवन के हर क्षेत्र में सक्रिय साधन के रूप में उभरी है। प्रशासन, चिकित्सा, कला, संस्कृति, विज्ञान, प्रतिरक्षा, विधि, प्रौद्योगिकी, तकनीकी, अनुसंधान, व्यवसाय, पत्रकारिता, जनसंचार आदि विभिन्न क्षेत्रों में अब अनुवाद के बिना कुछ नहीं हो सकता । भारत जैसे बहुभाषी और विविधताओं से भरपूर देश में राष्ट्रीय एकता के सूत्रों को समेटने में भी अनुवाद की अपनी विशिष्ट भूमिका है। भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन—के अध्यापन में अनुवाद की उपादेयता असंदिग्ध है । इसी तरह साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान की विभिन्न दिशाएँ अनुवाद से ही नियंत्रित और विस्तृत होती हैं । क्रमशः अनुवाद एक स्वतंत्र व्यवसाय एवं आजीविका का साधन बन गया है । असंख्य लोगों की रोजी—रोटी अनुवाद से सम्मानजनक तरीके से चल रही है। ज्ञान विज्ञान, औद्योगिक विकास और वाणिज्य—व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के व्यापक उपयोग ने इसे अधिकाधिक लोकप्रिय बनाया है। बहुभाषी देश भारत में बहुभाषी शिक्षा प्रणाली की संभावनाओं के साथ भी अनुवाद का संबंध है। जीवन की हर दिशा में अनुवाद की प्रासंगिकता प्रमाणित हो चुकी है। आगे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद के महत्व की उत्तरोत्तर प्रगति होगी । अब वैश्वीकरण का दौर चल रहा है अनुवाद भी इससे अछूता नहीं है । हिन्दी भी भारत से बढ़ कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फैल रही है। यह अंग्रेजी की तरह क्रमशः विश्व भाषा का रूप ले रही है। अब हिन्दी एवं अनुवाद क्षितिज बहुत विस्तृत हो रहा है । इसलिए अनुवादकों को भी बढ़चढ़ कर आगे आना चाहिए। जो दायित्व समय ने उन को दिया है उसे अपना दायित्व मानकर पूरा किया जाना अपेक्षित होता है।

## परिचय

गोदावरी (एसएसएमपीपी) – कृष्णा (पुलीचिंतला) लिंक नहर परियोजना में गोदावरी नदी से कृष्णा नदी तक 3540 एमसीएम (125 टीएमसी) पानी के डायवर्जन की परिकल्पना की गई है। यह परियोजना तेलंगाना के भद्राद्रि कोटागुडेम और खम्मम जिलों और आंध्र प्रदेश के कृष्णा, गुंटूर, प्रकाशम और पश्चिम गोदावरी जिलों में 415069 एचएसीसीए को मार्ग में सिंचाई प्रदान करेगी।

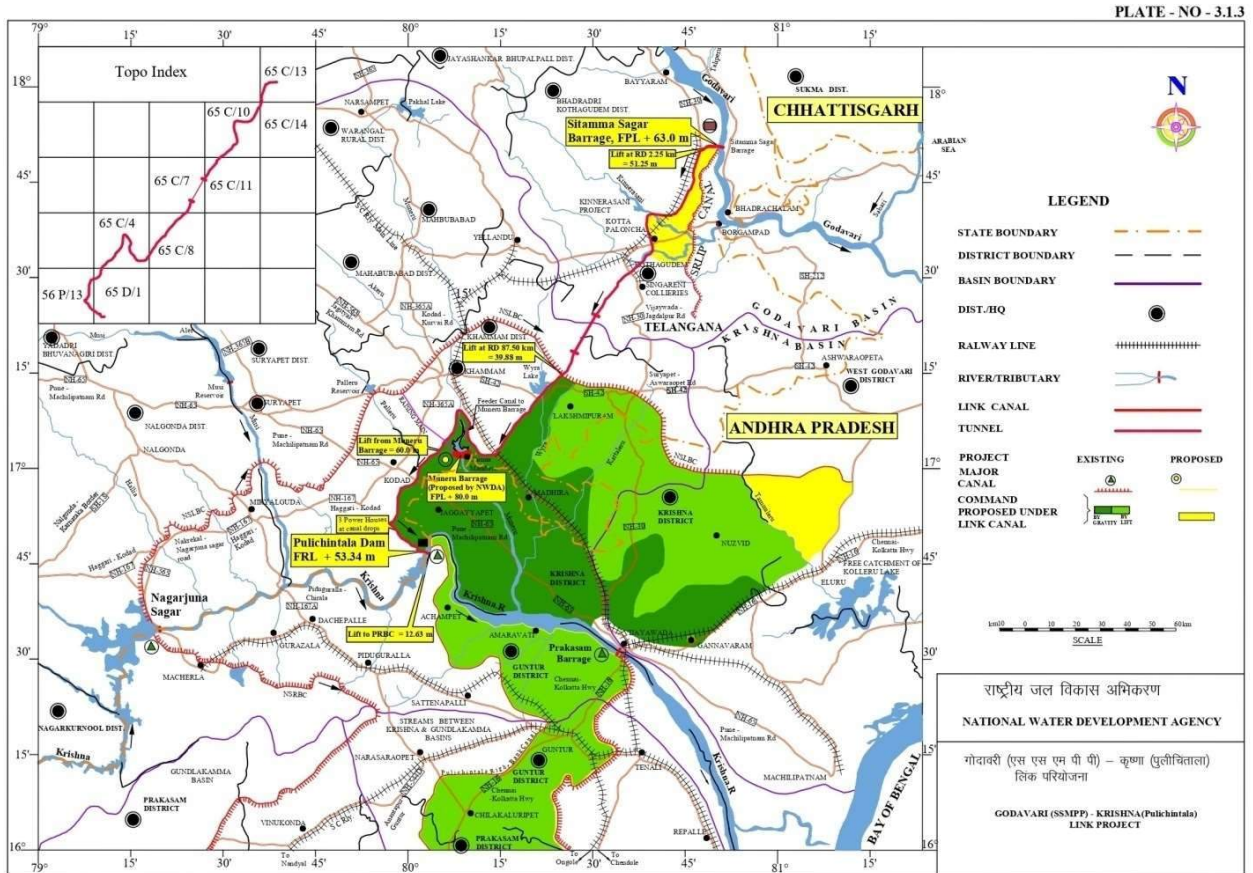
गोदावरी (एसएसएमपीपी) – कृष्णा (पुलीचिंतला) लिंक नहर का मुख्य उद्देश्य नागार्जुनसागर तक कृष्णा बेसिन के पानी की कमी को पूरा करने के लिए नागार्जुनसागर परियोजना के एनएसएलबीसी और एनएसआरबीसी के हिस्से की अधिकतम संभव सीमा तक कमान संभालना है। घाटे के बराबर मात्रा को नागार्जुनसागर परियोजना से हटाया जा सकता है।

## लिंक का प्रस्ताव और स्थान

लिंक नहर परियोजना में निम्नलिखित घटक हैं।

- लिंक परियोजना के लिए डायवर्जन बिंदु के रूप में कार्य करने के लिए गोदावरी पर सीताम्मा सागर बैराज अक्षांश 17°52'26" उत्तर और देशांतर 80°53'06" पूर्व पर स्थित है।
  - पानी को लिंक नहर में मोड़ने के लिए बैराज के दाहिनी ओर एक हेड रेगुलेटर हेड रेगुलेटर से प्रस्तावित पंप हाउस तक जाने वाला 2.250 किमी लंबा अप्रोच चैनल। पंप हाउस से आरडी 8.615 किमी पर स्थित डिलीवरी सिस्टर्न तक 6.365 किमी लंबा राइजिंग मेन।
  - कृष्णा नदी के पार पुलिचिंतला परियोजना तक डिलीवरी टैंक से पानी पहुंचाने के लिए 191.085 किमी लंबी नहर (आरडी 74.100 किमी से आरडी 86.60 किमी तक सुरंग सहित)।
  - 33 एम सी एम तक सीमित एनएसएलबीसी के तहत गैर-मानसूनी सिंचाई आवश्यकता के लिए पानी का भंडारण करने के लिए अक्षांश 17°02'02.22" उत्तर और देशांतर 80°10'11.64" पूर्व पर स्थित मुनेरू पर एक प्रस्तावित बैराज।
  - गैर-मानसून अवधि के दौरान उपयोग के लिए मुनेरू बांध से एनएसएलबीसी तक पानी उठाने के लिए 19.393 किमी लंबी मेन लाइन बढ़ाने के साथ 3.5 मेगावाट स्थापित क्षमता का पंप हाउस।
  - 9 नग. नई कमान में सिंचाई की सुविधा के लिए शाखा नहरों के साथ-साथ एनएसएलबीसी की कमान भी अपने हाथ में ले ली गई है। यह नहर तीन स्थानों पर गिरती है। पनबिजली उत्पन्न करने के लिए आरडी 195.250 किमी, 196.250 किमी और 197.000 किमी, 95 नग. लिंक नहर में क्रॉस ड्रेनेज/क्रॉस चिनाई और विनियमन कार्य शामिल है।
  - कृष्णा नदी पर मौजूदा पुलिचिंतला परियोजना अक्षांश 16° 46'14" उत्तर और देशांतर 8°003'33" पूर्व पर स्थित है, जो पीआरबीसी के तहत आवश्यकता को पूरा करने के लिए संतुलन जलाशय के रूप में कार्य करेगी।
  - 34.8 मेगावाट की स्थापित क्षमता के साथ पुलिचिंतला आरबीसी के ऑफ टेक पर पंप हाउस का प्रस्ताव।
  - लिंक नहर संरक्षण के साथ उचित पहुंच पर नहर शीर्ष सौर ऊर्जा उत्पादन की व्यवस्था।
- लिंक नहर द्वारा प्रदान किए जाने वाले कमांड क्षेत्र को निम्नलिखित पांच अलग – अलग खंडों में विभाजित किया गया है।
- सीए-ए, पहले प्रस्तावित इंचमपल्ली आरबीसी (अब नया कमांड क्षेत्र) के तहत प्रस्तावित आंशिक कमांड क्षेत्र सीसीए = 18000 हेक्टेयर

- सीए-बी, गुरुत्वाकर्षण द्वारा संचालित करने के लिए एनएसएलबीसी के तहत आंशिक कमांड क्षेत्र शामिल कर लिया गया, सीसीए = 55725 हेक्टेयर
- सीए-सी, लिफ्ट द्वारा आपूर्ति के लिए एनएसएलबीसी के तहत आंशिक कमांड क्षेत्र शामिल कर लिया गया, सीसीए = 100975 हेक्टेयर
- सीए-डी, तम्मिलेरु से पहले विस्तारित एनएसएलबीसी के तहत नया कमांड क्षेत्र लिफ्ट द्वारा पहुंचाया जाएगा, सीसीए = 37000 हेक्टेयर
- सीए-ई, पीआरबीसी (एनएसआरबीसी कमांड का हिस्सा) के तहत कमांड क्षेत्र, लिफ्ट द्वारा पहुंचाया जाएगा, सीसीए = 203369 हेक्टेयर।
- लिंक नहर परियोजना तेलंगाना के भद्राद्रि कोटागुडेम, खम्मम और सूर्यापेट जिलों से होकर गुजरती है। परियोजना का कमांड क्षेत्र तेलंगाना के भद्राद्रि कोटागुडेम और खम्मम जिलों, आंध्र प्रदेश के कृष्णा, गुंटूर, पश्चिम गोदावरी और प्रकाशम जिलों में स्थित है। लिंक परियोजना क्षेत्र के आसपास के बड़े शहर भद्राचलम, कोडाद, हुजूरनगर और जगय्यापेट हैं। नहर के किनारे सभी प्रस्तावित सीडीडीएम कार्यों तक पूरे वर्ष कच्ची और पक्की सड़कों के माध्यम से आसानी से पहुंचा जा सकता है। पूरा क्षेत्र सड़कों, रेलवे और टेलीफोनधोबाइल नेटवर्क के माध्यम से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।
- प्लेट 3.1.3 में गोदावरी (एसएसएमपीपी)- कृष्णा (पुलीचिंतला) लिंक परियोजना का सूचकांक मानचित्र संलग्न है।



### लिंग नहर के अंतर्गत जल योजना

सीताम्मा सागर बैराज से कुल 3540 एमसीएम पथांतरण किए गए जल का उपयोग करने का प्रस्ताव है जैसा कि तालिका में दिखाया गया है।

#### तालिका विभिन्न उपयोगों के लिए लिंग नहर के अंतर्गत उपयोग

क्र.सं.	कमांड क्षेत्र विवरण	सीसीए (हेक्टेयर)	वार्षिक सिंचाई (हेक्टेयर)	उपयोगिता (एमसीएम)
1.	पूर्व आईआरबीसी (नया कमांड क्षेत्र) के तहत प्रस्तावित कमांड सीए - ए,	18000	9900	55
2.	एनएसएलबीसी (गुरुत्वाकर्षण) का पार्ट कमांड सीए - बी,	55725	52750	385
3.	तम्मिलेरु (लिफ्ट) के बाद नएसएलबीसी का भाग कमांड सीए - सी,	100975	100281	710
4.	तम्मिलेरु (लिफ्ट) से पहले नएसएलबीसी की विस्तारित कमान सीए - डी,	37000	26348	129
5.	पीआरबीसी (एनएसआरबीसी) का पार्ट कमांड (लिफ्ट) सीए - ई	203369	284716	1767
6.	मार्ग में पड़ने वाले कस्बों और गांवों का नगरपालिका और औद्योगिक उपयोग			346
7.	ट्रांसमिशन हानियाँ			148
	<b>कुल</b>	<b>415069</b>	<b>473995</b>	<b>3540</b>

लिंग परियोजना की कुल लागत रु. 2021-22 मूल्य पर 18308.16 करोड़

### ऊर्जा

#### क) बिजली की आवश्यकता

लिंग परियोजना प्रस्ताव में पीआरबीसी को खिलाने के लिए आरडी 2.25 किमी, 87.50 किमी, मुनेरु बैराज और पुलिचिंतला बांध पर पानी उठाना शामिल है। बिजली की कुल आवश्यकता 1216.74 एमयू है। विवरण नीचे दिया गया है।

स्थिति	निस्सरण	खड़ी लिफ्ट	स्थापित क्षमता	वार्षिक ऊर्जा
आरडी(किमी)	एम3ध्सेकंड	एम	मेगावाट	एमयू
2.25	499.40	51.25	498.4	861.35
87.50	126.20	39.88	72.9	177.68
मुनेरु बैराज से एनएसएलबीसी	3.30	60.00	7.0	71.88
पंचिंतला से पीआरबीसी तक	197.10	12.63	45.6	105.83
<b>कुल</b>			<b>623.90</b>	<b>1216.74</b>



## ख) बिजली उत्पादन

नहर लिंक के अंतिम चार पर स्थलाकृति पर बातचीत करने के लिए, नहर के साथ तीन टावर कैनल ड्रॉप्स प्रस्तावित हैं, जहां 90 इकाइयों की प्रभावशाली स्थापित क्षमता के साथ कैनल इलेक्ट्रिक हाउस प्रस्तावित हैं और वार्षिक बिजली उत्पादन 204.90 का प्रोजेक्ट होने का अनुमान लगाया गया है।

### निर्माण कार्यक्रम

लिंक परियोजना का निर्माण 5 वर्ष में पूरा करने का प्रस्ताव है ।

### आकलन

लिंक परियोजना की लागत पांच मुख्य घटकों के तहत अनुमानित है और 2021–22 मूल्य स्तर पर परियोजना की कुल लागत नीचे दी गई है।

### लिंक परियोजना की लागत का सार

क्रमांक	इकाई	लागत घटक	राशि (लाख रु.)
1	I	हेड वर्क्स	263284
2	II	संवहन प्रणाली	1272732
3	III	हाइड्रो पावर	49394
4	IV	लिफ्टिंग व्यवस्था	243353
5	V	ऑन फार्म डेवलपमेंट	2053
		<b>कुल परियोजना लागत</b>	<b>1830816</b>

गोदावरी (सीताम्मा सागर बहुउद्देशीय परियोजना) – कृष्णा (पुलीचिंतला) लिंक परियोजना की लागत पांच मुख्य घटकों के तहत अनुमानित है। इकाई I प्रमुख कार्य, इकाई II संवहन प्रणाली, इकाई III विद्युत इकाई IV उठाने की व्यवस्था इकाई V खेत पर विकास। परियोजना की कुल लागत रुपये होने का अनुमान है। 2021–22 मूल्य स्तर पर 1830816 लाख।

- इकाई I प्रमुख कार्य: इसमें सीताम्मा सागर बहुउद्देशीय परियोजना के बैराज की आनुपातिक लागत, गोदावरी नदी पर प्रस्तावित बैराज पर हेड रेगुलेटर की लागत, मुनेरु नदी पर प्रस्तावित संतुलन बैराज शामिल है।
- इकाई II संवहन प्रणाली: इसमें मुख्य नहर, नहर संरचनाएं, मुख्य धाराएं, सुरंग, क्रॉस नियामक, नहर निकास, आउटफॉल नियामक, शाखा नहर नियामक/प्रत्यक्ष स्लुइस और वितरण प्रणाली की लागत शामिल है।
- यूनिट III जल विद्युत: इसमें नहर ड्रॉप्स पर पावर हाउस और संबंधित कार्यों की लागत शामिल है।
- यूनिट IV लिफ्टिंग व्यवस्था: मुख्य नहर पर तीन स्थानों और प्रस्तावित मुनेरु बैराज पर नाबदान, पंप हाउस, पंप, डिलीवरी मेन, सिस्टर्न आदि की लागत शामिल है।
- इकाई V खेत पर विकास: इसमें लिंक नहर के तहत प्रस्तावित नए कमांड क्षेत्र के विकास की लागत शामिल है।

## वार्षिक लागत

लिंग परियोजना की वार्षिक लागत का अनुमान प्रचलित मानदंडों के अनुसार लगाया जाता है। विवरण नीचे दिया गया है।

### लिंग सिस्टम की वार्षिक लागत

क्र.सं	मद राशि	(लाख रुपये)
<b>I पूंजीगत लागत</b>		
परियोजना की अनुमानित लागत		1830816
<b>परियोजना की कुल लागत</b>		<b>1830816</b>
<b>II वार्षिक लागत</b>		
अ) ब्याजपर 10%		183082
बी) वार्षिक ओ एंड एम कमांड		8295
ग) मूल्यह्रास 1% पर		18308
घ) लागत के 1% पर हेडवर्क का रखरखाव		2633
ई) पंपिंग सिस्टम का 8.33% का मूल्यह्रास		20271
च) बिजली का शुल्क		24335
<b>वार्षिक लागत</b>		<b>256924</b>

### राजस्व के स्रोत

प्रस्तावित गोदावरी (एसएसएमपीपी) – कृष्णा (पुलीचिंतला) लिंग नहर गोदावरी, कृष्णा और कृष्णा तथा पेन्नार घाटियों के बीच की नदियों में जरूरतमंद क्षेत्रों की सिंचाई के लिए पानी पहुंचाती है। लिंग नहर का उद्देश्य नए क्षेत्रों और नागार्जुनसागर एलबीसी और आरबीसी के मौजूदा कमांड के तहत क्षेत्रों की सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति करना है। इसके अलावा, यह कमांड क्षेत्रों की घरेलू और औद्योगिक जरूरतों का ख्याल रखता है। इसके अलावा, विनियमित आपूर्ति के कारण पानी का एक हिस्सा हमेशा जलाशयों और तालाबों में रहेगा, जिससे मछली पालन के विकास की गुंजाइश बनेगी। इसके अलावा, पुलिचिंतला जलाशय में गिरने से पहले तीन स्थानों पर प्रस्तावित नहर ड्रॉप्स पर बिजली उत्पादन की भी गुंजाइश है। मुख्य और शाखा नहरों के अलावा हेडवर्क के आसपास वृक्षारोपण से भी राजस्व प्राप्त होगा। इस प्रकार, लिंग परियोजना से निम्नलिखित क्षेत्रों को लाभ होने की संभावना है।

- सिंचाई
- जल शुल्क (सिंचाई सेवा शुल्क)
- घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्ति
- विद्युत उत्पादन
- मछली पालन
- नहर के किनारों पर वृक्षारोपण
- पशुपालन
- अन्य अमूर्त राजस्व

### विभिन्न स्रोतों से कुल आय

2021-22 मूल्य स्तर पर विभिन्न स्रोतों से कुल राजस्व रु. 385727 लाख. विवरण तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

### लिंग परियोजना से वार्षिक राजस्व सृजन (लाख रु.)

राजस्व का स्रोत	राजस्व
सिंचाई	205887
घरेलू जल आपूर्ति	17956
औद्योगिक जल आपूर्ति	44944
पवर	8196
सिंचाई उपकरण	8229
मछलीपालन	2109
नहर वृक्षारोपण	2714
<b>कुल</b>	<b>385727</b>

### लाभ

लिंग नहर परियोजना से होने वाले लाभों में कृषि उपज से राजस्व, सिंचाई सेवा शुल्क, घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्ति, बिजली उत्पादन, मछली पालन, नहर तटों पर वृक्षारोपण, पशुपालन शामिल हैं। ये प्रत्यक्ष लाभ हैं जो लिंग परियोजना के कार्यान्वयन के कारण नियमित और अपेक्षित शुद्ध लाभ हैं। विवरण नीचे दिया गया है।

### लिंग सिस्टम से वार्षिक लाभ

क्रमसंख्या	घटक	वार्षिक लाभ (रु.लाख)
1	सिंचाई	205887
2	एम एंड आई	62900
3	पवर	8196
4	सिंचाई उपकरण	8229
5	मछलीपालन	2109
6	पशुपालन	95692
7	वृक्षारोपण	2714
<b>कुल</b>		<b>385727</b>

प्रत्यक्ष लाभों के अलावा, लिंग परियोजना से कई अप्रत्यक्ष लाभ भी प्राप्त होंगे जिससे क्षेत्र के सभी सामाजिक-आर्थिक संकेतकों में जबरदस्त विकास होगा। इन अप्रत्यक्ष लाभों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में ही देखा या परिमाणित किया जा सकता है। रोजगार सृजन, लोगों के बढ़ते जीवन स्तर, कृषि आधारित उद्योगों का विकास, कीटनाशकों और उर्वरकों और उपज जैसे कृषि आदानों के लिए बाजार सुविधाएं, क्षेत्र में भूजल की उपलब्धता में वृद्धि, संचार सुविधाओं में सुधार, औद्योगिक गतिविधि में वृद्धि आदि कुछ हैं।

### लाभ लागत अनुपात (बीसीआर) और रिटर्न की आंतरिक दर (आईआरआर)

गोदावरी (एसएसएमपीपी) – कृष्णा (पुलिचिंतला) लिंग नहर परियोजना का लाभ-लागत अनुपात (बीसीआर) लिंग परियोजना की वार्षिक लागत और 2021-22 मूल्य स्तर पर लिंग परियोजना से वार्षिक संभावित लाभों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। बी-सी अनुपात और आईआरआर क्रमशः 1.51 और 15.03: हैं।

### निष्कर्ष :

1. परियोजना क्षेत्र में किन्नरसानी, वायरा, भद्राचलम आदि जैसे कई पर्यटन स्थल हैं जो नियमित रूप से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं और इस प्रकार लोगों की आर्थिक समृद्धि में वृद्धि करते हैं।
2. परियोजना क्षेत्र में कई छोटे और मध्यम स्तर के उद्योग हैं। सिंगरेनी कोलियरी से निकटता के कारण, परियोजना क्षेत्र में सहायक उद्योग कार्यरत हैं।

3. लिंक नहर से सालाना 4.74 लाख हेक्टेयर क्षेत्र की सिंचाई होगी। सिंचाई से होने वाले शुद्ध लाभ का आकलन उपज के अनुमानित सकल मूल्य और परियोजना पूर्व और परियोजना बाद की स्थिति में कृषि की इनपुट लागत से किया जाता है।
4. राजस्व जिला/तहसील प्रशासन द्वारा अपने मौजूदा सिस्टम/कर्मचारियों के माध्यम से एकत्र किया जाएगा। इसलिए, इसके लिए कोई अलग प्रावधान नहीं किया गया है।
5. लिंक परियोजना के कमांड क्षेत्र से घरेलू और आधोगिक को 134 व 212 एम सी एम की जल आपूर्ति होगी।
6. लिंक परियोजना से रोजगार स्रजन व लोगों के बढ़ते जीवन स्तर का विकास होगा।

# ग्लोबल वार्मिंग व उसके प्रभाव

अमित बुरा

आज के समय में ग्लोबल वार्मिंग एक बड़ी पर्यावरण समस्या है जिसका हम सब सामना कर रहे हैं, तथा जिसका समाधान स्थायी रूप से करना आवश्यक हो गया है। वास्तव में पृथ्वी के सतह पर निरंतर तथा स्थायी रूप से तापमान का बढ़ना, ग्लोबल वार्मिंग प्रक्रिया है। सभी देशों द्वारा विश्व स्तर पर इस विषय पर व्यापक रूप से चर्चा होनी चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग दशकों से प्रकृति के संतुलन, जैव विविधता तथा जलवायु परिस्थितियों को प्रभावित करता आ रहा है।

## ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख कारक

ग्रीन हाउस गैस जैसे **CO<sub>2</sub>**, मीथेन, पृथ्वी पर बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग के मुख्य कारक हैं। इसका सीधा प्रभाव समुद्री स्तर का विस्तार, पिघलती बर्फ की चट्टानें, ग्लेशियर, अप्रत्याशित जलवायु परिवर्तन पर होता है, यह जीवन पर बढ़ते मृत्यु के संकट का प्रतिनिधित्व करता है। आकड़ों के अनुसार यह अनुमान लगाया जा रहा है की मानव जीवन की बढ़ती मांग के कारण बीसवीं शताब्दी के मध्य से तापमान में बहुत अधिक बढ़ोत्तरी आयी है जिसके फलस्वरूप वैश्विक स्तर पर वायुमंडलीय ग्रीन हाउस गैस सांद्रता के मात्रा में भी वृद्धि हुई है।

पिछली सदी के 1983, 1987, 1988, 1989, और 1991 सबसे गर्म छः वर्ष रहे हैं, यह मापा गया है। इसने ग्लोबल वार्मिंग में अत्यधिक वृद्धि की जिसके फलस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं का अनपेक्षित प्रकोप सामने आया जैसे— बाढ़, चक्रवात, सुनामी, सूखा, भूस्खलन, भोजन की कमी, बर्फ पिघलना, महामारी रोग आदि और इस कारणवश प्रकृति के घटना चक्र में असंतुलन उत्पन्न होता है जो इस ग्रह पर जीवन के अस्तित्व के समाप्ति का संकेत है।

ग्लोबल वार्मिंग में वृद्धि के कारण, पृथ्वी से वायुमंडल में जल-वाष्पीकरण अधिक होता है जिससे बादल में ग्रीन हाउस गैस का निर्माण होता है जो पुनः ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनता है। जीवाश्म ईंधन का जलना, उर्वरक का उपयोग, अन्य गैसों में वृद्धि जैसे— **CFCs**, ट्रोपोस्फेरिक ओजोन, और नाइट्रस ऑक्साइड भी ग्लोबल वार्मिंग के कारक हैं। तकनीकी आधुनिकीकरण, प्रदूषण विस्फोट, औद्योगिक विस्तार, जंगलों की अंधाधुंध कटाई तथा शहरीकरण ग्लोबल वार्मिंग वृद्धि में प्रमुख रूप से सहायक हैं।

हम जंगल की कटाई तथा आधुनिक तकनीक के उपयोग से प्राकृतिक प्रक्रियाओं को विक्षुब्ध (**Disturb**) कर रहे हैं। जैसे वैश्विक कार्बन चक्र, ओजोन के परत में छिद्र बनना तथा **UV** तरंगों का पृथ्वी पर आगमन जिससे ग्लोबल वार्मिंग में वृद्धि हो रही है। बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी खतरा पैदा कर सकती है, जिससे खाद्य सुरक्षा प्रभावित हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप संसाधन संघर्ष हो सकता है।

## हिमालय और अन्य ग्लेशियर (**Glacier**) पर प्रभाव

हिमालय और ग्लेशियर हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नदियों का जन्म भी इन हिमखंडों से ही होता है जो हमारे लिए पेयजल के महत्वपूर्ण स्रोत होती हैं। वातावरण का संतुलन बनाए रखने में भी इन हिमखंडों का महत्वपूर्ण योगदान है। दिनों दिन हो रहे जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप यह ग्लेशियर लगातार पिघलते जा रहे हैं। यह सभी मनुष्यों के लिए एक बहुत बड़ी समस्या का कारण है। बढ़ते तापमान के कारण धीरे-धीरे जलस्रोत सूखते जा रहे हैं। आज भी कई क्षेत्र ऐसे हैं जहां लोग नदियों के पानी पर पूरी तरह निर्भर करते हैं। ऐसे में जल स्रोतों के सूखने से भयंकर परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। जलवायु परिवर्तन मात्र इतने तक ही सीमित नहीं है अपितु लगातार तापमान के बढ़ने से कई बार ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं कि जब मनुष्य को अचानक प्राकृतिक प्रकोप से जूझना पड़ता है। वर्ष 2013 में केदारनाथ, उत्तराखंड में आई प्राकृतिक आपदा और जुलाई 2022 में अमरनाथ में फटने वाला बादल ऐसी ही परिस्थितियों के उदाहरण हैं।

### नदियों पर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव

आने वाले दशकों में ग्लोबल वार्मिंग के कारण हिमनद घटने से भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी प्रमुख हिमालयी नदियों में जल प्रवाह कम हो सकता है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि “जैसे-जैसे आने वाले दशकों में हिमनद और बर्फ की चादरें घटेंगी, वैसे-वैसे सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी प्रमुख हिमालयी नदियों में इसका प्रभाव दिखेगा और उनका जल प्रवाह कम होता जाएगा।” दुनिया पहले ही देख चुकी है कि कैसे हिमालय पर बर्फ के पिघलने से बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वहीं समुद्र का बढ़ता स्तर और खारे पानी का प्रवेश इन विशाल ‘डेल्टा’ के बड़े हिस्से को नष्ट कर देगा।

### मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव

ग्लोबल वार्मिंग से मानव स्वास्थ्य की स्थिति खराब हो जाएगी, खासकर उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अफ्रीका जैसे स्थानों में, तापमान में वृद्धि मच्छरों की आबादी में वृद्धि का संकेत देती है, जिससे मलेरिया, डेंगू और अन्य कीट-जनित संक्रमणों का खतरा बढ़ जाता है। फेफड़ों का संक्रमण भी ग्लोबल वार्मिंग की वजह से होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग से यूरोप में कीट-जनित बीमारियों में भी बड़ी वृद्धि होगी। लंबे समय तक असामान्य रूप से उच्च तापमान रहने से बुजुर्गों और बीमारों जैसी कमजोर आबादी पर गंभीर स्वास्थ्य प्रभाव पड़ सकता है।

### कृषि उत्पादकता का नुकसान

ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप सूखा पड़ सकता है जिससे विशेषकर अफ्रीका में रहने की स्थितियाँ खराब हो सकती हैं। वर्ल्ड वाइल्ड फंड ने बताया है कि जलवायु परिवर्तन से वर्षा के पैटर्न में भारी बदलाव हो सकता है और लाखों लोगों के लिए पानी और भोजन की आपूर्ति खतरे में पड़ सकती है। आईपीसीसी की रिपोर्ट का अनुमान है कि अफ्रीका में लगभग 75 मिलियन से 250 मिलियन लोग पर्याप्त पानी के बिना होंगे और भोजन की कमी का सामना करेंगे, क्योंकि फसल उत्पादकता में लगभग 50 प्रतिशत की गिरावट आएगी। बढ़ते तापमान के कारण एशिया में 130 मिलियन लोगों के लिए भोजन की कमी भी हो सकती है।

### ग्लोबल वार्मिंग का समाधान

ग्लोबल वार्मिंग कम करने के लिए हमें बिजली के स्थान पर स्वच्छ ऊर्जा जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा भू-तापिय ऊर्जा द्वारा उत्पादित ऊर्जा का उपयोग करना होगा। कोयला, तेल के जलने के स्तर को कम करना चाहिए, परिवहन और ईलेक्ट्रिक उपकरणों का उपयोग कम करना चाहिए इससे ग्लोबल वार्मिंग का स्तर काफी हद तक कम होगा। सरकारी एजेंसियों, व्यवसाय प्रधान, निजी क्षेत्र, **NGOs** आदि द्वारा बहुत से कार्यक्रम, ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए चलाएँ तथा क्रियान्वित किए जा रहे हैं। इसके फलस्वरूप कई देशों ने 2050 तक उत्सर्जन को 80 प्रतिशत तक कम करने का आग्रह किया है ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव को कम करने के लिए हमें ग्रीन हाउस गैस का उत्सर्जन कम करना चाहिए।

ग्लोबल वार्मिंग के वजह से पहुंचने वाली क्षति में कुछ क्षति ऐसी हैं (बर्फ की चट्टानों का पिघलना) जिसे किसी भी समाधान के माध्यम से पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है। जो भी हो हमें रुकना नहीं चाहिए और सबको इस दिशा में बेहतर प्रयास करना चाहिए।

# नदियों को जोड़ना एक चुनौती

राधा

## भारत में 'नदी जोड़' की पृष्ठभूमि

भारत में नदी जोड़ का विचार सर्वप्रथम 1858 में एक ब्रिटिश सिंचाई इंजीनियर सर आर्थर थॉमस कॉटन ने दिया था। लेकिन तब से अब तक इस मुद्दे पर कोई खास प्रगति नहीं हुई है। दरअसल, राज्यों के बीच असहमति, केंद्र की दखलंदाजी के लिये किसी कानूनी प्रावधान का न होना और पर्यावरणीय चिंता इसकी राह में कुछ बड़ी बाधाएँ बनकर सामने आती रही हैं। जुलाई 2014 में केंद्र सरकार ने नदियों को आपस में जोड़ने संबंधी विशेष समिति के गठन को मंजूरी दी थी।

## जीव-जगत की जीवन-रेखा है नदियाँ

नदियों को मनुष्यों और अन्य समस्त जीव-जगत की जीवन-रेखा माना जाता है। यह इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि दुनिया की तमाम बड़ी मानव-सभ्यताएँ किसी-न-किसी नदी के किनारे ही विकसित हुईं। सिंचाई और पेयजल का प्रमुख स्रोत नदियाँ ही होती हैं। इसके अलावा, जलमार्गों को परिवहन का सबसे किफायती माध्यम माना जाता है...और नदियों के साथ लाखों लोगों की आजीविका भी जुड़ी रहती है।

## नदियों के पानी का अधिकतम उपयोग किया जाए

- नदियों को आपस में जोड़ना नदियों के पानी का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने का एक तरीका है।
- इस प्रक्रिया में अधिक पानी वाली नदी को कम पानी वाली नदियों से जोड़ा जाता है। उदाहरण के लिये, गोदावरी नदी के बेसिन की क्षमता प्रतिवर्ष 110 बिलियन क्यूबिक मीटर पानी की है, जबकि कावेरी में यह मात्रा केवल 21 बिलियन क्यूबिक मीटर ही है। ऐसे में गोदावरी नदी के पानी का अधिकतम इस्तेमाल करने के लिये उसका अतिरिक्त पानी कावेरी नदी में डाला जा सकता है।
- इसके अलावा, नदियों को जोड़ने से उत्पन्न होने वाले संभावित पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के लिये अंतर-बेसिन जल अंतरण के अलावा कई अन्य लघुकालीन और दीर्घकालीन उपाय किये जा सकते हैं।

## नदी जोड़ने से होने वाले लाभ

- पेयजल की समस्या कम होगी
- सूखे और बाढ़ की समस्या कम होगी

---

प्रवर श्रेणी लिपिक

- आर्थिक समृद्धि आने से लोगों का जीवन-स्तर सुधरेगा
- कृषि में सिंचित क्षेत्र के हिस्से में उल्लेखनीय वृद्धि होगी
- जलविद्युत की उपलब्धता होने से सस्ती एवं स्वच्छ ऊर्जा की प्राप्ति होगी
- नहरों का विकास होगा
- नौवहन के विकास से परिवहन लागत कम होगी
- पर्यटन स्थलों के बनने से विकास का स्तर बढ़ेगा
- वनीकरण को प्रोत्साहन मिलेगा

### नदियों को जोड़ने में आने वाली चुनौतियाँ

**सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ:** स्थानीय लोगों, विशेष रूप से आदिवासियों के बड़े पैमाने पर विस्थापन के परिणामस्वरूप सामाजिक आर्थिक संकट उत्पन्न होंगे, जिनमें शामिल हैं:

- आजीविका का नुकसान
- स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी
- रोगों का फैल जाना
- खाद्य संकट

**पर्यावरणीय चुनौतियाँ:** नदियों को आपस में जोड़ने के परिणामस्वरूप निम्नलिखित पर्यावरणीय चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं, जिनमें शामिल हैं:

- वनों की कटाई
- जैव विविधता हानि
- जलीय पारिस्थितिक तंत्र पर प्रभाव
- आवास विखंडन
- भू-जल विज्ञान संबंधी निहितार्थ
- नदियों को जोड़ने से सरकार पर एक महत्वपूर्ण वित्तीय बोझ पड़ने की उम्मीद है।

**अंतर-राज्यीय असहमति का होना:** केरल, सिक्किम और आंध्र प्रदेश सहित कई राज्यों ने नदी जोड़ने की परियोजना का विरोध किया है इसके बावजूद भी केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने बताया था कि इंटर रिवर लिंक परियोजना केन-बेतवा जल्द शुरू की जाएगी। अगले 2 से 3 महीने में परियोजना की शुरुआत होगी। शेखावत के मुताबिक प्रोजेक्ट पूरा करने के लिए जरूरी अनुमति ली जा चुकी है। बुंदेलखंड क्षेत्र उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में फैला हुआ है। केन-बेतवा इंटरलिंक प्रोजेक्ट की मदद से बुंदेलखंड में सिंचाई व पीने के पानी की कमी दूर हो सकेगी। मार्च 2021 में केंद्रीय जलशक्ति मंत्रालय और मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश सरकार के बीच केन-बेतवा लिंक परियोजना का समझौता हस्ताक्षर हुआ था।



- परियोजना में पानी के बंटवारे को लेकर वर्ष 2005 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की विशिष्ट उपस्थिति में दोनों प्रदेशों के बीच अनुबंध हुआ था। तब मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर और उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए थे। तब परियोजना का डीपीआर (डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट) तैयार नहीं हुआ था।

### दोनों राज्यों व केंद्र के बीच यह समझौता हुआ

केन-बेतवा लिंक परियोजना दो राज्यों मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश का संयुक्त परियोजना है। संयुक्त परियोजना होने के कारण दोनों राज्यों के बीच पानी के बंटवारे का भी प्लान तैयार किया गया है। इसमें हर साल नवंबर से अप्रैल महीने के बीच (नान मानसून सीजन) में उप्र को 750 एमसीएम तो वहीं मप्र को 1834 एमसीएम पानी मिलेगा। इन सभी बिंदुओं पर दोनों राज्य सरकारों का केंद्र सरकार के साथ समझौता किया गया है

### नदी जोड़ की चुनौतियों से निपटने के लिये नीरा के बारे में विचार

- नीरा का उद्देश्य एक स्वतंत्र स्वायत्त निकाय होना है जो अंतर-राज्यीय और अंतर-राज्य दोनों परियोजनाओं पर काम करेगा।
- यह आंतरिक और बाह्य दोनों तरह से धन उत्पन्न करने की योजना भी बनाएगी।
- यह वर्तमान "राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण" का स्थान लेगी।

### केन-बेतवा नदी जोड़ परियोजना

- अभी तक केवल केन-बेतवा संपर्क पर ही कुछ काम हुआ है और धरातल पर हुई प्रगति दिखाई भी देती है। यह देश का ऐसा पहला नदी जोड़ो प्रोजेक्ट है जिस पर कुछ प्रगति हुई है। इस नदी संपर्क के तहत केन नदी का अतिरिक्त पानी नहरों के माध्यम से बेतवा नदी में डाला जाना है। इस परियोजना के पूरा हो जाने से उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के सूखा प्रभावित क्षेत्रों को लाभ पहुँचेगा और वहाँ सिंचाई, जल-विद्युत और पीने के पानी की उपलब्धता बढ़ेगी।
- बजट 2023-24 में मध्य प्रदेश को केन-बेतवा लिंक परियोजना के लिए 3500 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। 18 साल से कागजों में दौड़ रही इस परियोजना को विधानसभा चुनाव से पहले शुरू करने की तैयारी है। इसके लिए पन्ना-छतरपुर की 5,480 हेक्टेयर गैर-वन सरकारी जमीन हस्तारित किए जाने की औपचारिकताएं पूरी हो चुकी हैं। राज्य सरकार नौरादेही वन्यजीव अभयारण्य को प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत लाने की अनुमति पहले ही दे चुकी है।
- मंत्रालय सूत्रों ने बताया कि केन-बेतवा लिंक परियोजना पर कुल 46 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। इनमें से 1100 करोड़ रुपए केंद्र सरकार मौजूदा वित्तीय वर्ष में दे चुकी है। परियोजना से सबसे ज्यादा फायदा बुंदेलखंड क्षेत्र को होगा। जिसमें मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के 13 जिले आते हैं। इनमें मध्यप्रदेश के 9 जिले पन्ना, टीकमगढ़, छतरपुर, सागर, दमोह, दतिया,

विदिशा, शिवपुरी और रायसेन आते हैं। वहीं, उत्तरप्रदेश के बांदा, महोबा, झांसी और ललितपुर जिले हैं।

- केन्द्र सरकार ने नदियों को जोड़ने के लिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना बनाया था। केन-बेतवा लिंक परियोजना प्लान का पहली परियोजना है। केन नदी का जल बेतवा नदी में अंतरित किया जाएगा। दोनों नदियों को जोड़ने के लिए 221 किलोमीटर लंबी केन-बेतवा लिंक नहर बनाई जाएगी।

**निष्कर्ष :** नदी जोड़ परियोजना एक चुनौतीपूर्ण कार्य जरूर है लेकिन भविष्य में इससे होने वाले लाभ के मददेनजर इस कार्य को प्राथमिकता से किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है। देश में वर्षा के स्थान एवं समय के अनुरूप बंटवारा न होने के कारण होने वाली समस्याओं पर नियंत्रण के लिए नदी जोड़ आवश्यक है। क्षेत्रीय असंतुलन को समाप्त करने के लिए भी नदी जोड़ आवश्यक है। राजविअ द्वारा किए गए देश की नदियों के अध्ययनों से प्रथम दृष्टया यह पता चलता है कि यह योजना तकनीकी रूप से संभाव्य है। किसी भी कार्य को शुरू करने में बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, इसी प्रकार नदी जोड़ के कार्य में सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय चुनौती बहुत आ रही है लेकिन बावजूद इसके भी इन चुनौतियों का सामना करते हुये धरातल पर इसको उतारने के कार्य में न सिर्फ दोनों राज्यों बल्कि केन्द्र सरकार ने भी इसकी अहमियत को समझते हुये कार्य को प्राथमिकता दी है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और हमारी कृषि मानसून पर आश्रित है। गहराते जल संकट और जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में हम मानसून की अनियमितता से सबसे अधिक पीड़ित हैं और हमें अपनी जल भंडारण क्षमता को बढ़ाने की आवश्यकता है। हमें अपनी संवैधानिक स्थिति में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है क्योंकि राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजना न केवल जल संरक्षण परियोजनाओं की एक शृंखला है अपितु जल संकट का निवारण भी है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा हाल ही में नदी जोड़ परियोजना को क्रियान्वित करने के पक्ष में दिए गए स्पष्ट निर्णय से यह दावा और भी प्रबल हो जाता है।

प्रतिदिन बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और बदलते जलवायु के परिप्रेक्ष्य में भारतीय जल संसाधनों की उपलब्धता लगातार घटती जा रही है। भारत की जल नीति के संदर्भ में विश्व बैंक की एक रिपोर्ट यह कहती है कि भारत को अक्षम जल आपूर्ति सेवाओं का सामना करना पड़ रहा है। यहां तक कि किसानों और शहरी निवासियों को स्वयं के उपभोग हेतु नलकूपों के माध्यम से भूजल की पम्पिंग करनी पड़ रही है। इन कारणों से अनेक स्थानों पर भूजल स्तर में तेजी से गिरावट आ रही है और जलभृत (Aquifers) भी समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। सरकार द्वारा अत्याधिक सब्सिडी का प्रावधान तथा किसानों को मुफ्त बिजली की व्यवस्था इस भूजल समस्या को हल करने के बजाय और बढ़ा रही है। भारत में जल संकट और भी गंभीर समस्या होती जा रही है। अब हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जल एक स्थानीय एवं असीमित संसाधन नहीं है अपितु जल एक वैश्विक एवं सीमित संसाधन है। देश में जल की अधिकता तथा जल की कमी वाले विभिन्न क्षेत्रों को ध्यान में रखकर भारत सरकार द्वारा अपनाई गई राष्ट्रीय जल नीति – 2002 एवं 2012 में जल के अंतरबेसिन अंतरण पर जोर दिया गया है। इसमें कहा गया है कि “क्षेत्रों/बेसिनों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के आधार पर जल की कमी वाले क्षेत्रों को अन्य क्षेत्रों से जल अंतरण द्वारा जल उपलब्ध कराना चाहिए, जिसमें एक नदी बेसिन से दूसरे नदी बेसिन में जल का अंतरण भी शामिल है।” इस प्रकार आपस में नदियों को जोड़ने के कार्यक्रम से बाढ़ की आशंका वाले इलाकों में रहने वाले लोगों को बाढ़ के कारण होने वाले नुकसान से और सूखा प्रभावित क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सूखे से बचाने में मदद मिलेगी। राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजना भारत की एक स्वप्निल योजना है जिसके अंतर्गत 14 हिमालयी और 16 प्रायद्वीपीय लिंकों द्वारा भारत की विभिन्न नदियों को आपस में जोड़ा जाना प्रस्तावित है।

### नदी जोड़ योजना का इतिहास

देश की आजादी के पूर्व ब्रिटिश राज के दौरान एक इंजीनियर सर आर्थर कॉटन ने जल परिवहन परियोजनाओं के लिए गंगा और कावेरी नदियों को जोड़ने की मांग की थी। लेकिन इन क्षेत्रों के बीच बढ़ती रेलवे कनेक्टिविटी के कारण यह विचार स्थगित कर दिया गया। 1970 के दशक में तत्कालीन सरकार ने श्री के. एल. राव द्वारा प्रस्तावित नदियों को जोड़ने की परियोजना की तरफ एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया था। उनके कार्यकाल में इस परियोजना को गति देने के लिए एक टास्क फोर्स का भी गठन किया गया था जिसने नदी जोड़ परियोजना को मूर्तरूप देने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। इस टास्क फोर्स ने आगे के अध्ययन के लिए केन – बेटवा एवं पार्वती – काली सिंध – चम्बल परियोजना को चिन्हित किया। तत्पश्चात्, जुलाई 1982 में, इस नदी जोड़ परियोजना के सभी पहलुओं का विस्तृत अध्ययन करने हेतु भारत सरकार ने जल संसाधन मंत्रालय के अधीन स्वायत्त निकाय के रूप में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (NWDA) की स्थापना की।

तत्पश्चात् 2005 में सरकार के कार्यकाल में इस परियोजना की एक महत्वपूर्ण लिंक केन – बेटवा परियोजना की विस्तृत परियोजन रिपोर्ट का कार्य भी शुरू किया गया था। इसके बाद संप्रग सरकार के ही कार्यकाल में जनवरी 2009 में ही इस परियोजना के दो और महत्वपूर्ण लिंकों पार-तापी-नर्मदा एवं दमन-गंगा-पिंजल की

आशुलिपिक

विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य भी संबन्धित राज्य सरकारों (महाराष्ट्र एवं गुजरात) से सहमति प्राप्त होने के बाद शुरू किया जा चुका है। फरवरी 2012 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने नदियों को जोड़ने के लिए अपनी हरी झंडी दे दी है और इस परियोजना को तेजी से लागू सुनिश्चित करने के लिए सरकार से कहा गया है। नर्मदा परियोजना पर सुप्रीम कोर्ट के संज्ञान के आलोक में इस परियोजना की उम्मीद बंधती है।

### चुनौतिया

भारत में सरकार विशाल जल परियोजनाएं तो लाती है, किन्तु विस्थापितों की पुनःस्थापना, प्रभावशाली नागरिक समाज समूहों के कड़े विरोध एवं पर्यावरण को नुकसान की आशंका के कारण इन्हें लागू करने में काफी दिक्कत आती है। विभिन्न एन.जी.ओ. स्थानीय निवासियों के विस्थापन के मुद्दों को जोर-शोर से उठाते हैं। इस प्रकार के संगठन अनेक जलविद्युत परियोजनाओं के विरोध में अपना शक्ति प्रदर्शन भी कर चुके हैं। बढ़ता हुआ औद्योगीकरण व शहरीकरण स्थानीय जल संसाधनों पर दबाव डाल रहे हैं। ऐसे में एन.जी.ओ. और नागरिक समूहों ने ऐसे उद्योगों का विरोध तेज कर दिया है जिनमें पानी की अधिक मात्रा में खपत होती है। भारत की लौह अयस्क पट्टी में लगजमबर्ग के आर्सेल्लर मिततल और दक्षिण कोरिया के पॉस्को समूह की परियोजनाओं के जबरदस्त विरोध के कारण इन परियोजनाओं में देरी इसका ताजा उदाहरण है।

इसके अलावा नदी जोड़ परियोजना के द्वारा नहरों के माध्यम से नदियों को जोड़ जाना है और इसके लिए एक बड़े पैमाने पर भूमि अधिग्रहण की आवश्यकता होगी और वो भी विभिन्न प्रदेशों के मध्य सामंजस्य बनाते हुए। कुछ राज्य जैसे तमिलनाडु, जहां कोई बड़ी नदी नहीं निकलती है और जो पड़ोसी राज्यों की नदियों पर निर्भर है, इस परियोजना का भरपूर समर्थन है, इस परियोजना का भरपूर समर्थन कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ राज्य, जैसे असम, सिक्किम, केरल आदि, अपने जल संसाधनों पर अपने कोई भी अधिकार प्रभावित नहीं होने देना चाहते हैं। इस परियोजना की लागत 5,60,000 करोड़ रुपये होने का अनुमान किया गया है जो एक बहुत बड़ निवेश है और अंत में पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने की आशंका के कारण यह परियोजना भी खटाई में पड़ सकती है।

### अवसर

मानसून के मौसम में गंगा, ब्रह्मपुत्र मेघना नदियों के बेसिन में बाढ़ आ जाती है, जबकि पश्चिमी भारत और प्रायद्वीपीय बेसिनों में पानी की कमी हो जाती है। इन तमाम बेसिनों में पानी की उपलब्धता बनाए रखने, बाढ़ से बचने और खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के लिए नदी जोड़ कार्यक्रम ही एकमात्र उत्तम और सरल उपाय है। नई कृषि प्रौद्योगिकी और एन प्रकार के बीज मिलने के बाद भी खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार को सिंचाई सुविधाओं का विस्तार करना ही होगा। अन्यथा, खाद्यान्न आयात पर बढ़ती निर्भरता से पीछा नहीं छूटेगी। बदलते हुए जलवायु के परिप्रेक्ष्य में खाद्य सुरक्षा और जल सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजनाओं का क्रियान्वयन नितांत आवश्यक है। हालांकि नदी जोड़ने की इस परियोजना में भारी खर्च आने का अनुमान है। परन्तु, इस बात पर भी गौर किया जाना चाहिए कि नदियों को आपस में जोड़ने से भारत का वार्षिक खाद्यान्न उत्पादन बढ़कर लगभग दोगुना हो जाएगा और आगे आने वाले समय में बढ़ती जनसंख्या और संपन्नता के कारण खाद्यान्न की बढ़ती मांग की आसानी से पूर्ति हो पाएगी।

### वस्तुस्थिति

सीधी-सी बात यह है कि एन.जी.ओ. तथा परियोजनाओं से प्रभावित होने वाले स्थानीय लोगों द्वारा संगठित विरोध एवं पर्यावरणीय नुकसान की मात्र आशंकाओं के कारण परियोजनाओं के कारण परियोजनाओं को रोकना पड़ता है जो कि सर्वथा अनुचित है। ऐसा अनेक पनबिजली परियोजनाओं के साथ हो भी चुका है। इसी कारण से इन परियोजनाओं में निजी-सार्वजनिक निवेश को लेकर उत्साह भी नहीं है। परिणामस्वरूप, जलविद्युत का आकर्षण समाप्त होता जा रहा है, जबकि देश के हिमालयी भाग में जलविद्युत उत्पादन की विपुल संभावनाएं हैं। यह सत्य है कि विश्व के अनेक भागों में अंतर-बेसिन जल स्थानांतरण सफलता के साथ क्रियान्वित हो रहा है। चीन की दक्षिण-उत्तर की जल परियोजना विश्व की सबसे विशाल अंतर-बेसिन जल स्थानान्तरण योजना है। भारत में इस

तरह की दीर्घकालिक सामरिक योजनाएं बनाने और उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने की क्षमता तो है, परन्तु इन लिंक परियोजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए संबंधित राज्यों एवं परियोजना से प्रभावित होने वाले स्थानीय लोगों की सहमति मिलना भी बहुत आवश्यक है। अतः इन्हीं कारणों से भारत को नर्मदा नदी परियोजना को पूरा करने में भी दशकों का समय लगा। नदी जोड़ योजना का प्रभाव पड़ोसी देशों, जैसे भूटान, चीन, नेपाल, बांग्लादेश आदि पर भी पड़ना तय है। अतः वह इस परियोजना को लेकर पहले से ही चिंतित हैं। इन सभी देशों के साथ भी मिलकर सहमति बनाना अति आवश्यक है।

### निष्कर्ष

भारत एक कृषि प्रधान देश है और हमारी कृषि मानसून पर आश्रित है। गहराते जल संकट और जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में हम मानसून की अनियमितता से सबसे अधिक पीड़ित हैं और हमें अपनी जल भंडारण क्षमता को बढ़ाने की आवश्यकता है। हमें अपने संवैधानिक स्थिति में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है क्योंकि राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजना न केवल जल संरक्षण परियोजनाओं की एक श्रृंखला है अपितु जल संकट का निवारण भी है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा हाल ही में नदी जोड़ परियोजना के क्रियान्वित करने के पक्ष में दिए गए स्पष्ट निर्णय से यह दावा और भी प्रबल हो जाता है।

राजनीतिक व एन.जी.ओ. कार्यकर्ताओं द्वारा विरोध प्रदर्शन, लालफीताशाही, कानूनी अडचन, पर्यावरण चिंताओं, भूमि अधिग्रहण पर अनावश्यक कानूनी कारवाई और राज्य सरकारों द्वारा पेशगी प्रीमियम राशि की मांग से साबित हो जाता है कि कोई भी बड़ी परियोजना शुरू करना बेहद मुश्किल काम है। इसके बावजूद भी **भारत में इस परियोजना को लागू करना एक टेढ़ी खीर जरूर है, परंतु असंभव नहीं है।** इसके लिए हम सभी को आपस में मिलकर सर्व-सम्मति बनानी होगी एवं सामूहिक प्रयास करने होंगे। इस परियोजना में हमारे द्वारा आज किया गया निवेश हमारे आने वाली पीढ़ियों के स्वर्णिम कल को निर्धारित करेगा।

**रा.ज.वि.अ. की गतिविधियां**  
**जुलाई-सितम्बर, 2023 की तिमाही का तकनीकी सारसंग्रह**

जुलाई-सितम्बर, 2023 की तिमाही के दौरान पूरे किए गए महत्वपूर्ण कार्य

**क. जुलाई, 2023 के दौरान पूरा किए गए महत्वपूर्ण कार्य**

- सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय की अध्यक्षता में दिनांक 11.07.2023 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के शासी निकाय की 71वीं बैठक आयोजित की गई।
- केबीएलपीए के लिए दौधन बांध की आगामी निविदा के लिए निविदा मूल्यांकन समिति (टीईसी) की पहली बैठक 06.07.2023 को भोपाल, मध्य प्रदेश में सीईओ, केबीएलपीए/महानिदेशक, राजविअ की अध्यक्षता में आयोजित की गई।
- केबीएलपीए के लिए दौधन बांध की आगामी निविदा के लिए निविदा मूल्यांकन समिति (टीईसी) की दूसरी बैठक 28.07.2023 और 29.07.2023 को भोपाल में सीईओ, केबीएलपीए/महानिदेशक, राजविअ की अध्यक्षता में आयोजित की गई और टीईसी द्वारा निविदा दस्तावेज को अंतिम रूप दिया गया।
- केन बेतवा लिंक परियोजना प्राधिकरण (टीएजी-केबीएलपीए) के तकनीकी सलाहकार समूह की चौथी बैठक श्री डी पी भार्गव, पूर्व निदेशक (तकनीकी), एनएचपीसी की अध्यक्षता में 19.07.2023 को वीसी के माध्यम से आयोजित की गई।
- संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए माननीय मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय द्वारा 19.07.2023 को ए सी एस, जल संसाधन विभाग, राजस्थान सरकार और प्रमुख सचिव, जल संसाधन विभाग, मध्य प्रदेश सरकार के साथ एक बैठक की और मुद्दों के शीघ्र समाधान खोजने पर जोर दिया गया। बैठक में सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, अध्यक्ष केन्द्रीय जल आयोग और महानिदेशक, राजविअ ने भी भाग लिया।
- श्री डी पी भार्गव, एनएचपीसी के पूर्व निदेशक (तकनीकी) की अध्यक्षता में 25.07.2023 को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से केन बेतवा लिंक परियोजना प्राधिकरण (टीएजी-केबीएलपीए) के तकनीकी सलाहकार समूह की 5वीं बैठक आयोजित की गई।
- राजविअ के सहायक अभियंता /कनिष्ठ अभियंता ने 3 से 7 जुलाई, 2023 की अवधि के दौरान आईआईटी रुड़की में जल संसाधन विकास और प्रबंधन विभाग द्वारा आयोजित "एसआरएसपी और पोलावरम के बीच गोदावरी बेसिन के लिए सिस्टम अध्ययन और मॉडलिंग तकनीकों का उपयोग करके मॉडल जल संतुलन अध्ययन" पर क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- श्री पंकज कुमार, सचिव (जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग), जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार ने 21.07.2023 को भोपाल में केबीएलपीए (मुख्यालय) कार्यालय का उद्घाटन किया।

- श्री पंकज कुमार, सचिव (जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग) जल शक्ति मंत्रालय ने मुख्य सचिव, मध्य प्रदेश सरकार के साथ 21.07.2023 को भोपाल में केन-बेतवा लिंक परियोजना के कार्यान्वयन, विशेष रूप से मध्य प्रदेश के पन्ना और छतरपुर जिलों के 22 गांवों में भूमि अधिग्रहण पर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की।
- दौधन बांध, ऊपरी स्तर की सुरंग और निचले स्तर की सुरंग के लिए निविदा दस्तावेज के संबंध में हितधारक परामर्श बैठक 22.07.2023 को भोपाल में सीईओ, केबीएलपीए/महानिदेशक, राजविअ की अध्यक्षता में आयोजित की गई ।
- केन-बेतवा लिंक परियोजना के दौधन बांध के डिजाइन मुद्दों की समीक्षा करने के लिए 30.06.2023 को नई दिल्ली में सचिव (जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग)जल शक्ति मंत्रालय, अध्यक्ष-केन्द्रीय जल आयोग सीईओ-केबीएलपीए, टीएजी-केबीएलपीए के अध्यक्ष और केन्द्रीय जल आयोग, केबीएलपीए और एमपीजल संसाधन विभाग के अन्य अधिकारियों के बीच एक बैठक आयोजित की गई ।
- कोसी-मेची लिंक परियोजना @ पीएल 2022-23 के लागत अनुमान को अद्यतन करने, इसकी कार्यशील डीपीआर तैयार करने और डीपीआर के संबंध में अन्य मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एसीएस, जल संसाधन विभाग, बिहार सरकार, महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (उ), राजविअ, कार्यपालक अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, पटना और राजविअ और जल संसाधन विभाग, बिहार सरकार के अन्य अधिकारियों (विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से) के बीच एक बैठक आयोजित की गई ।
- डॉ. आर. एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण), राजविअ ने 08.07.2023 को संशोधित जी-सी लिंक के अद्यतन के लिए डेटा संग्रह के लिए प्राणहिता-चेवेल्ला प्रणाली का दौरा किया।
- डॉ. आर. एन. संखुआ मुख्य अभियंता (दक्षिण), राजविअ और श्री नित्यानंद राय, निदेशक, जल विज्ञान, केन्द्रीय जल आयोग ने राज्य सरकार के अधिकारियों के साथ 14.07.2023 को केन्द्रीय जल आयोग और जल संसाधन विभाग, महाराष्ट्र सरकार द्वारा डीईजी लिंक परियोजना के एकदारे बांध स्थल पर अनुमानित संभावित अधिकतम बाढ़ में अंतर पर चर्चा करने के लिए विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (दक्षिण) ने डब्ल्यू-एन लिंक परियोजना संरेखण का दौरा किया और पेंटाकली बांध तक डब्ल्यू-एन लिंक के विस्तार के संबंध में महाराष्ट्र सरकार के जल संसाधन विभाग के अधिकारियों (मुख्य अभियंता, जल संसाधन विभाग, अमरावती) के साथ चर्चा की और 25.07.2023 को कार्यपालक अभियंता, जल संसाधन विभाग, अकोला के साथ डब्ल्यू-एन लिंक रिपोर्ट के संशोधन की स्थिति के बारे में चर्चा की। इसके अलावा, मुख्य अभियंता (द) ने 26.07.2023 को ऊपरी वर्धा जलाशय का भी दौरा किया है।

- केन-बेतवा लिंक परियोजना चरण-1 के अंतर्गत उत्तर प्रदेश में मौजूदा बरियारपुर पिकअप वीयर के अनुप्रवाह में केन नदी पर प्रस्तावित बांदा बैराज के लिए डिजाइन, ड्राइंग और डिजाइन अध्याय तैयार करने के कार्य के लिए लॉग शीट फाइलों के साथ प्रस्तावित बांदा बैराज के बोर होल के कोर लॉगिंग पर जीएसआई की तीसरी रिपोर्ट बीसीडी (एन एंड डब्ल्यू) निदेशालय, नई दिल्ली को प्रस्तुत की गई थी।
- संशोधित पी-के-सी लिंक चरण-I का जल विज्ञान 31.07.2023 को राजविअ (मुख्यालय) को प्रस्तुत किया गया ।
- बिहार पर कोसी-मेची अंतरराज्यीय लिंक परियोजना की 649793 करोड़ रुपये की संशोधित संशोधित लागत का अनुमान मुख्य अभियंता (उ) कार्यालय में जांच के अधीन है।

#### **ख. जुलाई, 2023 के दौरान महत्वपूर्ण बैठकें**

- महानिदेशक, राजविअ ने 05.07.2023 को पालिका भवन, राजविअ, नई दिल्ली में कोसी मेची लिंक की स्थिति और बिहार के अन्य मुद्दों पर चर्चा करने के लिए अपर मुख्य सचिव, जल संसाधन विभाग, बिहार सरकार के साथ बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने वीसी के माध्यम से 10.07.2023 को स्वायत्त संगठन नामतः एनआईएच, एनएमसीजी, राजविअ, ब्रह्मपुत्र बोर्ड और नेरीवाल्म के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने से संबंधित मुद्दे पर चर्चा करने के लिए बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 13.07.2023 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में माननीय जल शक्ति मंत्री की अध्यक्षता में आयोजित मानसून संसद सत्र के संबंध में बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 19.07.2023 को ईआरसीपी के साथ विधिवत एकीकृत संशोधित पीकेसी लिंक से संबंधित मुद्दों पर माननीय जल शक्ति मंत्री, द्वारा मध्य प्रदेश और राजस्थान के जल संसाधन मंत्रियों के साथ आयोजित बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 19.07.2023 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग की अध्यक्षता में संसद के आगामी मानसून सत्र की तैयारियों पर समीक्षा बैठक में भाग लिया।



- महानिदेशक,राजविअ ने 26.07.2023 को केन्द्रीय जल आयोग, सेवा भवन, नई दिल्ली में "वर्गीकृत डेटा रिलीज समिति" (सीडीआरसी) की 58वीं बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 06.07.2023 को राजविअ में प्रतिनियुक्त के आधार पर उपनिदेशक (प्रशासन) के पद पर नियुक्त के लिए चयन समिति की बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक,राजविअ और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 19.07.2023 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक की डीपीआर तैयार करने और इसके कार्यान्वयन पर आम सहमति में तेजी लाने के लिए बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 07.07.2023 को स्कोप कन्वेंशन सेंटर, नई दिल्ली में जल संसाधन विकास और प्रबंधन (जल संसाधन विभाग एंड एम) के लिए प्रशिक्षण आवश्यकता आकलन (टीएनए) पर कार्यशाला में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक की डीपीआर तैयार करने और इसके कार्यान्वयन पर आम सहमति में तेजी लाने के लिए 11.07.2023 को एसएस भवन, नई दिल्ली में बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 12.07.2023 को मिशन मोड में रिक्तियों को भरने पर बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 11.07.2023 को एसएस भवन, नई दिल्ली में संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक की डीपीआर तैयार करने और इसके कार्यान्वयन पर आम सहमति में तेजी लाने के लिए बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 25.07.2023 को केन्द्रीय जल आयोग, सेवा भवन, नई दिल्ली में आईसीआईडी की 25 वीं कांग्रेस और 74 वीं आईईसी पर आयोजन समिति की चौथी बैठक में भाग लिया ।

**ग. लंबित मुद्दे/स्वीकृत मुद्दे:**

(क) केन-बेतवा लिंक परियोजना के लिए पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की चरण-II वन स्वीकृति और माननीय उच्चतम न्यायालय के सीईसी द्वारा मंजूरी।

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की चरण-II वन स्वीकृति का मुद्दा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा पीसीसीएफ, मध्य प्रदेश (भूमि प्रबंधन) के विचाराधीन है।

(ख) लोअर ऑर परियोजना के लिए पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से पर्यावरण स्वीकृति अभी प्राप्त की जानी है और परियोजना में कार्य प्रगति पर है। इसे नियमित किए जाने की आवश्यकता है।

(ग) नीरा के गठन पर कैबिनेट नोट।

**अगस्त, 2023 के दौरान पूर्ण किए गए महत्वपूर्ण कार्य**

**क. अगस्त, 2023 के दौरान पूरे किए गए महत्वपूर्ण कार्य**

- केन-बेतवा लिंक परियोजना प्राधिकरण (केबीएलपीए) के लिए परियोजना प्रबंधन परामर्श (पीएमसी) सेवाओं की नियुक्ति के लिए परामर्श मूल्यांकन समिति (सीईसी) की 7वीं बैठक 17.08.2023 को आयोजित की गई।
- सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग ने केबीएलपी के कार्यान्वयन के संबंध में 28.08.2023 को लखनऊ में मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार के साथ बैठक की।
- केबीएलपीए के तहत एक नया उप-प्रभाग कार्यालय 08.08.2023 को पन्ना, मध्य प्रदेश में खोला गया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 18.08.2023 को चेन्नई में डॉ. संदीप सक्सेना, अपर मुख्य सचिव, जल संसाधन विभाग, पीडब्ल्यूडी, तमिलनाडु सरकार के साथ नदियों को जोड़ने और गोदावरी-कावेरी लिंक परियोजना पर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की।
- ई-पी-सी मोड पर दौधन बांध और केन-बेतवा लिंक परियोजना के इसके सहायक कार्यों की निविदा 11.08.2023 को सीपीपी पोर्टल पर जारी की गई है और आगे राजविअ की वेबसाइट पर अपलोड की गई है।
- एसीईओ (मुख्यालय/पी), केबीएलपीए ने भारतीय रबर निर्माता अनुसंधान संघ के निदेशक डॉ. के. राजकुमार और आई एंड डब्ल्यूआरडी, उत्तर प्रदेश के अधिकारियों और केबीएलपीए के अन्य अधिकारियों के साथ 14.08.2023 को पारीछा वियर क्रेस्ट पर रबर बांध स्थापित करने की व्यवहार्यता का पता लगाने के लिए पारीछा वियर का दौरा किया।
- बिहार की कोशी मेची लिंक परियोजना केएमएलपी का 7540.64 करोड़ रुपये का संशोधित लागत अनुमान (आरसीई) 23.08.2023 को राजविअ (मुख्यालय) से पीएओ, केन्द्रीय जल आयोग को प्रस्तुत किया गया।
- कोशी मेची लिंक परियोजना की मुख्य नहर के लिए भू-तकनीकी जांच (ड्रिलिंग) के लिए निविदा 25.08.2023 को जीईएम पोर्टल पर जारी की गई है।
- दिनांक 23.08.2023 को सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, एसएस भवन की अध्यक्षता में संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक के सैद्धांतिक विकास के लिए आम सहमति पर पहुंचने

और समझौता ज़ापन पर हस्ताक्षर करने और इसकी डीपीआर तैयार करने और कार्यान्वयन में तेजी लाने के लिए एक बैठक आयोजित की गई।

- महानदी (बरमूल) - गोदावरी (दोवलाईस्वरम) लिंक (रीच -1) के हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण सहित स्थलाकृतिक सर्वेक्षण के लिए निविदा दस्तावेज 07.08.2023 को जीईएम पोर्टल पर प्रकाशित किया गया।
- महानदी (बरमूल)-गोदावरी (दोवलाईस्वरम) लिंक (रीच-1) के हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण सहित स्थलाकृतिक सर्वेक्षण के लिए पूर्व बोली बैठक 16.08.2023 को आयोजित की गई ।
- महानिदेशक, राजविअ ने 23.08.2023 को आयोजित एमएसटीजी लिंक परियोजना की डीपीआर तैयार करने की प्रगति पर समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की, जिसमें मुख्य अभियंता (उत्तर), अधीक्षण अभियंता, अन्वेषण सर्किल, भुबनेश्वर, अन्वेषण प्रभाग, अन्वेषण प्रभाग पटना ने वर्चुअल मोड में भाग लिया था।
- महानदी (बरमूल) - गोदावरी (दोवलाईस्वरम) लिंक (रीच -2) के हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण सहित स्थलाकृतिक सर्वेक्षण के लिए निविदा दस्तावेज 24.08.2023 को जेम पोर्टल पर प्रकाशित किया गया।
- अन्वेषण प्रभाग, केबीएलपीए, झांसी ने 17.08.2023 को उत्तर प्रदेश में मौजूदा बरियारपुर पिकअप वीयर के अनुप्रवाह में केन नदी पर प्रस्तावित बांदा बैराज के लिए "डिजाइन, ड्राइंग और डिजाइन अध्याय तैयार करने के काम में तेजी लाने के लिए बीसीडी (एन एंड डब्ल्यू) निदेशालय, केन्द्रीय जल आयोग, नई दिल्ली का दौरा किया।
- सोन-बांध-एसटीजी लिंक परियोजना के स्थलाकृतिक सर्वेक्षण की मसौदा रिपोर्ट एजेंसी द्वारा अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, पटना को प्रस्तुत की गई है।
- जीडीएस लिंक नहर का संरेखण प्रभाग कार्यालय द्वारा संशोधित किया गया और सर्कल कार्यालय को प्रस्तुत किया गया, जिसे सर्कल कार्यालय में आगे की जांच और संशोधित किया गया और अनुमोदन के लिए मुख्य अभियंता (उत्तर), लखनऊ कार्यालय को प्रस्तुत किया गया।
- डॉ. आर. एन. सांखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) ने 02.08.2023 को राष्ट्रीय जल अकादमी, पुणे में नदियों को जोड़ने, मुद्दों और नदियों को जोड़ने की चुनौतियों पर व्याख्यान दिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 16.08.2023 को आयोजित डीवीजी लिंक की डीपीआर तैयार करने पर समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की, जिसमें मुख्य अभियंता (दक्षिण), अधीक्षण अभियंता, वलसाड और उपनिदेशक, मुख्य अभियंता (दक्षिण) ने वर्चुअल मोड में भाग लिया।

#### **अगस्त, 2023 के दौरान महत्वपूर्ण बैठकें**

- महानिदेशक, राजविअ ने 02.08.2023 को सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक की डीपीआर तैयार करने और इसके कार्यान्वयन पर आम सहमति में तेजी लाने के लिए बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने दिनांक 02.08.2023 को माननीय जल शक्ति मंत्री, नई दिल्ली के निवास पर 03.08.23 को लोक सभा में उत्तर दिए जाने वाले तारांकित प्रश्नों पर माननीय मंत्री (जल शक्ति) द्वारा ली गई बैठक में भाग लिया।

- महानिदेशक ने 03.08.2023 को संसद भवन, नई दिल्ली में लोकसभा में उत्तर दिए जाने वाले तारांकित प्रश्न पर माननीय राज्य मंत्रियों द्वारा ली गई समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक एनजीडीए ने दिनांक 04.08.2023 को माननीय जल शक्ति मंत्री, नई दिल्ली के निवास पर आयोजित सलाहकार समिति की बैठक में माननीय मंत्री (जल शक्ति) द्वारा ली गई बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 07.08.2023 को संसद भवन एनेक्सी, नई दिल्ली में संसद के मानसून सत्र की अवधि के दौरान जल शक्ति मंत्रालय की सलाहकार समिति की बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 08.08.2023 को नई दिल्ली में कार्यकारी समिति की 238 वीं बैठक और सीबीआईपी की आम सभा की 80 वीं बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 25.08.2023 को भीम ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में उद्घाटन समारोह और पुरस्कार समारोह (ऊर्जा और पर्यावरण फाउंडेशन: ग्लोबल एक्सीलेंस अवार्ड्स, 2023) में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 25.08.2023 को सचिव, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली के चैंबर में केन-बेतवा लिंक परियोजना (केबीएलपी) के कार्यान्वयन से संबंधित मुद्दों पर आयोजित बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 26.08.2023 को नालंदा सभागार, नई दिल्ली में 7 वें विश्व जल शिखर सम्मेलन और एक्सपो 2023 और विश्व अपशिष्ट-से-धन शिखर सम्मेलन और एक्सपो 2023 में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 30.08.2023 को सचिव, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली के चैंबर में केबीएलपीए और ईआरसीपी के एसएलपी के मुद्दों पर स्थिति नोट पर ब्रीफिंग बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 31.08.2023 को केंद्रीय जल आयोग, सेवा भवन, आर.के.पुरम, नई दिल्ली में सीडीआरसी की 59वीं बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 24.08.2023 को स्कोप कॉम्प्लेक्स नई दिल्ली में "भारत में सिंचाई परियोजना" के उद्घाटन सत्र में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 24.08.2023 को पालिका भवन, नई दिल्ली में राजविअ के बारे में सहायक सचिवों के इंटरैक्टिव कार्यक्रम और विभिन्न प्रायद्वीपीय नदी प्रणालियों और हिमालयी नदी प्रणालियों में पानी की मात्रा के बारे में विस्तृत अध्ययन में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 16.08.2023 को पालिका भवन, नई दिल्ली में सचिव, जल संसाधन, केरल सरकार के साथ बैठक की।

- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में लंबित वीआईपी पीएमओ संदर्भों, पीजी शिकायतों, संसद आश्वासन, व्यय, वार्षिक क्षमता निर्माण, मिशन मोड में भर्ती आदि पर चर्चा करने के लिए बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 01.08.2023 को राजविअ में उपनिदेशक (हाइड्रोलॉजी) के पद पर पदोन्नति के लिए डीपीसी की बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 08.08.2023 को नई दिल्ली में जल अवसंरचना के डिजिटलीकरण पर कार्यशाला में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 17.08.2023 को स्कोप कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में 7 वीं एमआई जनगणना, जल निकायों की दूसरी जनगणना, एमएमआई परियोजनाओं की पहली जनगणना और स्प्रिंग्स की पहली जनगणना पर अखिल भारतीय कार्यशाला में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 21.08.2023 को डीजीक्यूआई के साथ मंत्रालय और उसके संगठन की वेबसाइट पर वीसी मोड में बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 24.08.2023 को स्कोप कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में "भारत में बड़ी और मध्यम सिंचाई परियोजनाओं की जल दरों और भौतिक और वित्तीय पहलुओं के निर्धारण के लिए अपनाई गई पद्धति" पर कार्यशाला में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (दक्षिण), राजविअ ने 03.08.2023 को डीईजी लिंक के भू-भौतिक और भूकंपीय अध्ययन के संबंध में सीडब्ल्यूपीआरएस के साथ एक बैठक की।
- कार्यपालक अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, चेन्नई ने 18.08.2023 को महानिदेशक और एसीएस, तमिलनाडु सरकार के बीच बैठक के बाद पेन्नार-पलार-कावेरी लिंक में जल नियोजन के बारे में चर्चा करने के लिए 21.08.2023 को चेन्नई में मुख्य अभियंता (योजना निर्माण) डब्ल्यूआरओ, तमिलनाडु के साथ एक बैठक की।

#### ग. लंबित मुद्दे/स्वीकृत मुद्दे:

(क) केन-बेतवा लिंक परियोजना के लिए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की चरण-II वन स्वीकृति और माननीय उच्चतम न्यायालय के सीईसी द्वारा मंजूरी।

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की चरण-II वन स्वीकृति का मुद्दा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा पीसीसीएफ, मध्य प्रदेश (भूमि प्रबंधन) के विचाराधीन है।

(ख) लोअर ऑर परियोजना के लिए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से पर्यावरण स्वीकृति अभी प्राप्त की जानी है और परियोजना में कार्य प्रगति पर है। इसे नियमित किए जाने की आवश्यकता है।

(ग) नीरा के गठन पर कैबिनेट नोट।

### सितंबर, 2023 के दौरान पूर्ण किए महत्वपूर्ण कार्य

#### **क. सितंबर, 2023 के दौरान पूरे किए गए महत्वपूर्ण कार्य**

- दिनांक 20.09.2023 को केन-बेतवा लिंक परियोजना प्राधिकरण (केबीएलपीए) के लिए परियोजना प्रबंधन परामर्श (पीएमसी) सेवाओं की नियुक्ति के लिए परामर्श मूल्यांकन समिति (सीईसी) की 8वीं बैठक आयोजित की गई।
- नदियों को आपस में जोड़ने पर व्यापक मूल्यांकन और प्रणाली अध्ययन के लिए उप-समिति की तीसरी बैठक श्री ए बी पांड्या, महासचिव, आईसीआईडी की अध्यक्षता में 26.09.2023 को वर्चुअल माध्यम से आयोजित की गई।
- दिनांक 06.09.2023 को महाराष्ट्र की दमनगंगा-वैतरणा-गोदावरी अंतः राज्यीय लिंक परियोजना की अंतिम डीपीआर महाराष्ट्र सरकार को प्रस्तुत की गई।
- दौधन बांध आदि के लिए निविदा के संबंध में हितधारकों की बैठक में उठाए गए प्रश्नों को हल करने के लिए टीईसी की तीसरी बैठक 14.09.2023 को भोपाल में सीईओ, केबीएलपीए की अध्यक्षता में आयोजित की गई।
- तकनीकी सलाहकार समूह- केन-बेतवा लिंक परियोजना प्राधिकरण (टीएजी-केबीएलपीए) की छठी बैठक 16.09.2023 से 18.09.2023 तक झांसी, उत्तर प्रदेश में आयोजित की गई, जिसमें केन मुख्य नहर, बरियारपुर पिकअप वीयर, पारीछा वीर और बरुआसागर बांध का स्थल दौरा किया गया।
- राजविअ के मुख्यालयों और क्षेत्रीय कार्यालयों में 14.09.2023 से 29.09.2023 तक 'हिंदी पखावाड़ा' मनाया गया।
- दिनांक 05.09.2023 को मुख्य सचिव, मध्य प्रदेश सरकार की अध्यक्षता में आईएलएमपी के कार्यान्वयन के लिए जीपीएलसी की पहली बैठक भोपाल में हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई थी।
- संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक के विकास पर सैद्धांतिक समझौते के लिए समझौता ज्ञापन के मसौदे पर चर्चा करने और अंतिम रूप देने और इसकी डीपीआर तैयार करने में तेजी लाने के लिए श्री पंकज कुमार, सचिव, जल संसाधन नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय की अध्यक्षता में 27.09.2023 को एक संयुक्त बैठक आयोजित की गई।
- दिनांक 23.09.2023 को संशोधित पी-के-सी के एमओए के संबंध में श्री श्रीराम वेदिरे, सलाहकार, जल संसाधन नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय, प्रमुख सचिव, जल

संसाधन विभाग, मध्य प्रदेश सरकार, प्रमुख अभियंता, जल संसाधन विभाग, मध्य प्रदेश सरकार शामिल हुए।

- केन-बेतवा लिंक परियोजना प्राधिकरण (केबीएलपीए) के लिए पूर्व बोली बैठक दिनांक 09.09.2023 को भोपाल में महानिदेशक, राजविअ/सीईओ, केबीएलपीए, नई दिल्ली की अध्यक्षता में आयोजित की गई। राजविअ, केन्द्रीय जल आयोग के अधिकारी, मुख्य अभियंता, बोधि, जल संसाधन विभाग, मध्य प्रदेश सरकार, मुख्य अभियंता, जल संसाधन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार ने बैठक में भाग लिया।
- दौधन बांध आदि के लिए निविदा के संबंध में हितधारकों की बैठक में उठाए गए प्रश्नों को हल करने के लिए टीईसी की तीसरी बैठक 14.09.2023 को भोपाल में सीईओ, केबीएलपीए की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

#### **ख. सितंबर, 2023 के दौरान महत्वपूर्ण बैठकें**

- महानिदेशक, राजविअ ने 04.09.2023 को चैंबर ऑफ सेक्रेटरी, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में कोसी-मेची लिंक पर पीआईबी नोट संबंधी ब्रीफिंग बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 06.09.2023 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक के सैद्धांतिक विकास के लिए आम सहमति पर पहुंचने और समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 06.09.2023 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में वर्ष 2023-24 के लिए विभाग के लक्ष्यों के संबंध में विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सचिव (जल संसाधन विभाग) की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 11.09.2023 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में पीएमकेएसवाई के लिए पीएमयू के कामकाज में प्रमुख कमियों संबंधी बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 19.09.2023 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राजविअ द्वारा स्तर -3 और 4 पर तकनीकी सलाहकारों की नियुक्ति के लिए सलाहकार मूल्यांकन समिति (सीईसी) की अध्यक्षता की।
- महानिदेशक, राजविअ ने 20.09.2023 को संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, जल संसाधन नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली के कक्ष में केबीएलपीए के लिए वित्त पोषण संबंधी बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 21.09.2023 को गंडक-गंगा और घाघरा-यमुना लिंक परियोजनाओं के स्थलाकृतिक सर्वेक्षण कार्य की प्रगति की समीक्षा करने के लिए बैठक में भाग लिया।

- महानिदेशक ,राजविअ ने 21.09.2023 को तमिलनाडु भवन, नई दिल्ली में गोदावरी-कावेरी लिंक परियोजना के मुद्दों के संबंध में श्री संदीप सक्सेना अपर मुख्य सचिव जल संसाधन विभाग के साथ बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 27.09.2023 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल के सैद्धांतिक विकास के लिए आम सहमति पर पहुंचने और समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 29.09.2023 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा केन-बेतवा लिंक परियोजना की आधारशिला रखने की तैयारी पर चर्चा करने के लिए बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा केबीएलपी की आधारशिला रखने के संबंध में दिनांक 18.09.2023 और 27.09.2023 को सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, भारत सरकार द्वारा ली जाने वाली बैठक में केबीएलपीए ,उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सरकारों ने भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 19.09.2023 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राजविअ द्वारा स्तर-1 और 2 पर तकनीकी सलाहकारों की नियुक्ति के लिए सलाहकार मूल्यांकन समिति (सीईसी) में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 26.09.2023 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में सचिव (जल संसाधन विभाग) द्वारा ली जाने वाली बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 29.09.2023 को सेवा भवन, नई दिल्ली में 25 वीं आईसीआईडी कांग्रेस और 74 वीं आईईसी बैठक आयोजित करने के लिए आयोजन समिति की 5वीं बैठक में भाग लिया।

**ग. लंबित मुद्दे/स्वीकृत मुद्दे:**

**(क) केन-बेतवा लिंक परियोजना के लिए पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की चरण-II वन स्वीकृति और माननीय उच्चतम न्यायालय के सीईसी द्वारा मंजूरी।**

पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की चरण-II वन स्वीकृति का मुद्दा पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा पीसीसीएफ, मध्य प्रदेश (भूमि प्रबंधन) के विचाराधीन है।

(ख) लोअर ऑर परियोजना के लिए पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से पर्यावरण स्वीकृति अभी प्राप्त की जानी है और परियोजना में कार्य प्रगति पर है। इसे नियमित किए जाने की आवश्यकता है।

(ग) नीरा के गठन पर कैबिनेट नोट।



(क) सीधी भर्ती/प्रतिनियुक्ति पर नियुक्तियां।

क्रमांक	नाम और पदनाम	प्रतिनियुक्ति/सीधी भर्ती (डीआर) प्रभावी कार्य दिवस	तैनाती का स्थान
1	श्री षजतनन के.एच. अधीक्षण अभियंता (दक्षिण)	प्रतिनियुक्ति 24.07.2023 (पूर्वाहन)	राजविअ, पालिका भवन, नई दिल्ली
2	श्रीमती वाई गोपी लावण्या, कार्यपालक अभियंता	प्रतिनियुक्ति दिनांक 26.07.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, हैदराबाद
3	श्री अरजेश कुमार मधोक, अधीक्षण अभियंता	प्रतिनियुक्ति दिनांक 31.07.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण सर्किल, राजविअ, ग्वालियर
4	श्री आदर्श मिश्रा, प्रारूपकार ग्रेड III	सीधी भर्ती दिनांक 14.08.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, ग्वालियर
5	श्री रवि नाथ सिंह उप निदेशक	प्रतिनियुक्ति दिनांक 17.08.2023	राजविअ, पालिका भवन, नई दिल्ली
6	श्री अभिषेक अजय बेहरा, प्रारूपकार ग्रेड III	सीधी भर्ती दिनांक 22.08.2023 (अपराहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, ग्वालियर
7	श्री खुशाल सिंह, उप निदेशक (प्रशासन)	प्रतिनियुक्ति 21.08.2023 (पूर्वाहन)	राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली
8	श्री रविकांत, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 21.08.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण सर्किल, राजविअ, हैदराबाद
9	सुश्री संतोष विश्णोई कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 21.08.2023 (पूर्वाहन)	राजविअ, पालिका भवन, नई दिल्ली
10	श्री आशीष वाष्णैय, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 21.08.2023 (अपराहन) से	अन्वेषण सर्किल, राजविअ, ग्वालियर
11	श्री तुषार उदेई, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 21.08.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, वडोदरा
12	श्री प्रशांत कुमार प्रवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती दिनांक 21.08.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, झांसी
13	श्री रामोतार सिंह विदुरी, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 22.08.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, वलसाड
14	श्री कमल लाल मीणा, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 24.08.2023 से (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, कोलकाता

15	श्री कुशल सिंह मेवाल, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 21.08.2023 (पूर्वाहन)	आईएसडी, राजविअ, जयपुर
16	श्री मोहम्मद शोएब, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 29.08.2023 से (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, राजमुंदरी
17	सुश्री गीतांजलि, अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती दिनांक 25.08.2023	राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली
18	श्री प्रखर शुक्ल अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती दिनांक 26.08.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, नागपुर
19	श्री ऋषभ कुमार, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 28.08.2023 से (पूर्वाहन)	अन्वेषण सर्किल, राजविअ, पटना
20	श्री नवनीत कुमार अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती दिनांक 30.08.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, भुवनेश्वर
21	श्री कुलदीप वर्मा, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती 04.09.2023 (पूर्वाहन)	आईएसडी, राजविअ, पन्ना
22	श्री आयुष कुमार सिंह प्रवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 04.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, राजमुंदरी
23	सुश्री चंचल, आशुलिपिक ग्रेड II	सीधी भर्ती 04.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, भोपाल
24	श्री अवनीश शाह, प्रारूपकार ग्रेड III	सीधी भर्ती 04.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, पटना
25	श्री बबिंदर सिंह नेगी, आशुलिपिक ग्रेड II	सीधी भर्ती 05.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण सर्किल, राजविअ, हैदराबाद
26	श्री अभिनव आनंद प्रवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 08.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, पटना
27	श्री श्रेयश सक्सेना कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 11.09.2023 (पूर्वाहन)	आईएसडी, राजविअ, पन्ना
28	श्री सुमित पाल, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 12.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण सर्किल, राजविअ, वलसाड
29	श्री राहुल कुशवाहा अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती दिनांक 13.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण सर्किल, राजविअ, वलसाड
30	सुश्री सौम्या श्रीवास्तव, आशुलिपिक ग्रेड II	सीधी भर्ती दिनांक 13.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, झांसी

31	श्री अभिलाष कुमार मीणा, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती दिनांक 13.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, राजमुंदरी
32	मोहित प्रजापति, प्रवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती दिनांक 18.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, भोपाल
33	श्री अनीश, प्रारूपकार ग्रेड III	सीधी भर्ती 20.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, हैदराबाद
34	डॉ. दिलीप कुमार, निदेशक (एमडीयू)	प्रतिनियुक्ति दिनांक 25.09.2023 (पूर्वाहन)	राजविअ, (मुख्यालय) नई दिल्ली
35	श्री पुनीत पलतानी, प्रारूपकार ग्रेड III	सीधी भर्ती दिनांक 29.09.2023 (पूर्वाहन)	अन्वेषण प्रभाग , राजविअ, लखनऊ

(ख) पदोन्नति: उक्त अवधि के दौरान पदोन्नत निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों का विवरण।

क्रमांक	नाम और पदनाम	पद और पदोन्नति की तिथि	पदोन्नति के बाद तैनाती का स्थान
1.	श्री राकेश कुमार, प्रारूपकार ग्रेड III	प्रारूपकार ग्रेड II दिनांक 21.08.2023 (अपराहन)	राजविअ, (मुख्यालय) पालिका भवन, नई दिल्ली
2.	श्री रमेश चन्द्र प्रारूपकार ग्रेड III	प्रारूपकार ग्रेड II दिनांक 21.08.2023 अपराहन)	कार्यपालक अभियंता, केबीएलपीए प्रभाग, भोपाल का कार्यालय
3.	श्री कमल जीत, प्रारूपकार ग्रेड III	प्रारूपकार ग्रेड II दिनांक 21.08.2023 (अपराहन)	राजविअ, (मुख्यालय) पालिका भवन, नई दिल्ली
4.	श्री संजय त्रिपाठी, सहायक अभियंता	सहायक निदेशक दिनांक 26.08.2023	अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, पटना

(ग) सेवानिवृत्ति/त्यागपत्र/प्रत्यावर्तन।

(घ) राजविअ की सेवा से निम्नलिखित अधिकारियों को सेवानिवृत्त/प्रत्यावर्तित/त्यागपत्र दिया गया

क्रमांक	नाम और पदनाम	सेवानिवृत्ति /प्रत्यावर्तन की तारीख
1	श्री राजेश कुमार, उप निदेशक (प्रशासन), साकेत, नई दिल्ली	18.07.2023
2	श्री के.ए. नायडू, कार्यपालक अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, नागपुर	31.07.2023
3	श्री आर चंद्रशेखरन, उप निदेशक, पालिका भवन, नई दिल्ली	31.07.2023
4	श्री डी सुधाकर, प्रारूपकार ग्रेड II, मुख्य अभियंता (दक्षिण), राजविअ, हैदराबाद	31.07.2023
5	श्रीमती एस. मोहंती, प्रारूपकार ग्रेड II, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, भुवनेश्वर	31.07.2023

6	श्रीमती पी पद्मजा, प्रारूपकार ग्रेड III, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, चेन्नई	31.07.2023
7	श्री अशोक कुमार, एमटीएस, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, भोपाल	03.08.2023 को निधन
8	श्री राकेश कुमार गुप्ता, अधीक्षण अभियंता अन्वेषण सर्किल, राजविअ, भुवनेश्वर	30.09.2023
9	श्री अर्जुन, अवर श्रेणी लिपिक, मुख्यालय नई दिल्ली	21.08.2023 को त्यागपत्र दिया
10	श्रीमती ई कम्पाना, अधीक्षक ग्रेड-1, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, बेंगलुरु	30.09.2023

## राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में राजभाषा संबंधी गतिविधियां मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा 2023 का आयोजन

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण मुख्यालय, नई दिल्ली एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में 14 सितम्बर, 2023 से 29 सितम्बर, 2023 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया।

सहायक निदेशक राजभाषा ने पखवाड़े की रूपरेखा प्रस्तुत की।

मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने सभी साथियों को हिन्दी पखवाड़े के शुभारंभ के अवसर पर बधाई देते हुए कहा कि "हिन्दी पखवाड़ा 2023 के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण परिवार के सभी साथियों को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रसार के लिए कई कदम उठाए हैं। समय-समय पर हिन्दी कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और इसी प्रकार की अन्य प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से सभी को साथ लेकर हिन्दी को बढ़ाने का प्रयास भी इन्हीं कदमों में से एक है जिस पर आप लोग बहुत ध्यान दे रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दी बहुत ही सरल एवं सहज भाषा है। भारत सरकार ने इसे सरकार के कार्यालयों में काम-काज की भाषा घोषित किया है। हम सभी इसका उपयोग बड़ी सरलता से कर सकते हैं। और प्रायः यह देखा गया है कि डीलिंग हैंड द्वारा नोटिंग मुख्य रूप से हिन्दी में ही की जाती है। डीलिंग हैंड के इस प्रयास को देखते हुए उच्चाधिकारी भी उस पर अपनी टिप्पणियां एवं हस्ताक्षर आदि हिन्दी में ही करते हैं। हमारे कार्यालय के लिए यह बड़े गौरव की बात है।"

महानिदेशक महोदय ने सभी साथियों को हिन्दी पखवाड़े के शुभारंभ के अवसर पर बधाई दी और अपनी ओर से एक अपील जारी की। उन्होंने कहा कि "आज हम सब हिन्दी दिवस समारोह एवं हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह के लिए गूगल मीट के माध्यम से एकत्र हुए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया, उसी दिन की स्मृति में हम प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस का आयोजन करते हैं और राजभाषा का यह पखवाड़ा मनाते हैं। उन्होंने बहुत प्रसन्नतापूर्वक कहा कि पूरे राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हिन्दी के प्रति जिस निष्ठा और लगन से काम किया जा रहा है और हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है और इस क्षेत्र में की गई प्रगति को बराबर बनाए भी हुए हैं इस कार्य में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का बराबर एवं सराहनीय सहयोग रहा है। इसके लिए आप सभी हार्दिक बधाई के पात्र हैं।"

महानिदेशक महोदय ने हिन्दी में ही सोचने और केवल हिन्दी में ही कार्य करने के बारे में बताया कि शब्द हमारे सोचने की प्रक्रिया से निर्मित एवं परिष्कृत होकर हमारे समक्ष आते हैं। हम अपने कार्यक्षेत्र एवं विषय के अनुसार शब्दों का चयन करते हैं। यदि हम अपना कार्य आरंभ करते समय सोचने की प्रक्रिया के समय थोड़ा भी ध्यान दें तो स्वतः वे शब्द हिन्दी भाषा के ही निकलते हैं। यदि

इस बात को ध्यान में रखा जाए तो अपने कार्यालय का सभी कार्य हिन्दी के माध्यम से भी निपटाया जा सकता है।”

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने महानिदेशक महोदय, मुख्य अभियंता (मु.) एवं अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों का धन्यवाद किया और पखवाड़े में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आग्रह किया।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान छह विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के सभी पदाधिकारियों ने उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और इस पखवाड़े को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान छह प्रतियोगिताएं निम्नानुसार आयोजित की गईं जिनके परिणाम इस प्रकार हैं:

**एक मिनट की स्वभाषण प्रतियोगिता 18.09.2023**

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	हिमांशु अरोड़ा, कनिष्ठ लेखाकार	प्रथम संयुक्त
	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	
	सुबोध, कनिष्ठ अभियंता	
2.	चेतन शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय संयुक्त
	अनुराग, आशुलिपिक	
	लाल मोहन मेहतो, प्रवर श्रेणी लिपिक	
3.	इंदु जासवाल, सहायक अभियंता	तृतीय संयुक्त
	शिवम शर्मा, कनिष्ठ अभियंता	
	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
4.	रीता कश्यप, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
5.	इरफान, प्रवर श्रेणी लिपिक	

**निबंध प्रतियोगिता 19.09.2023**

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	निखिल विजे, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
	विशाल सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	
	अनुराग, आशुलिपिक	
2.	राकेश कुमार, प्रारूपकार	द्वितीय संयुक्त
	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	इरफान, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	हिमांशु अरोड़ा, कनिष्ठ लेखाकार	
3.	संतोष विश्नोई, कनिष्ठ अभियंता	

	धर्म सिंह बैरवा, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	सुबोध, कनिष्ठ अभियंता	
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	
4.	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	प्रोत्साहन संयुक्त
	इंदु जासवाल, सहायक अभियंता	
	शिवम शर्मा, कनिष्ठ अभियंता	
	ऊषा, आशुलिपिक	

**अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का हिन्दी में उत्तर देने पर प्रतियोगिता 20.09.2023**

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	अनुराग, आशुलिपिक	प्रथम संयुक्त
	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
2.	निखिल विजे, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय
3.	संतोष विश्नोई, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	विशाल सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	
	राकेश कुमार, प्रारूपकार	
4.	अनिल कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	लाल मोहन मेहतो, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	महेन्द्र, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	

**प्रार्थना पत्र प्रतियोगिता 21.09.2023**

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	पी.एस. नेगी, एम.टी.एस.	प्रथम
2.	उमेश चन्द्र, एम.टी.एस.	द्वितीय
3.	जोगिन्द्र पाल, एम.टी.एस.	तृतीय
4.	राजकंवर, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन संयुक्त
5.	अजय सिंह, वाहन चालक	

**कविता प्रतियोगिता 22.09.2023**

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	संजय सिद्धराम शाहपुरकर	प्रथम संयुक्त
	गीतांजलि, अवर श्रेणी लिपिक	
	रजनी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
2.	विशाल सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय संयुक्त
	निखिल विजे, कनिष्ठ अभियंता	
	प्रिया विज, आशुलिपिक	
	लाल मोहन मेहतो, प्रवर श्रेणी लिपिक	
3.	अंकित कुमार, सहायक अभियंता	तृतीय संयुक्त
	शिवम शर्मा, कनिष्ठ अभियंता	
	इंदु जासवाल, सहायक अभियंता	
4.	ऊषा, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	राकेश कुमार, प्रारूपकार	

**आशु भाषण प्रतियोगिता 25.09.2023**

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	के.एच. षाजतानन, अधीक्षण अभियंता	प्रथम संयुक्त
	निखिल विजे, कनिष्ठ अभियंता	
2.	सचिन, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय संयुक्त
	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	
3.	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय संयुक्त
	संजय सिद्धराम शाहपुरकर, अवर श्रेणी लिपिक	
	विशाल सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	
	मोहम्मद इरफान, प्रवर श्रेणी लिपिक	
4.	महेन्द्र, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	लाल मोहन मेहतो, प्रवर श्रेणी लिपिक	



### 1. मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एस.बी.पाण्डेय, कनिष्ठ लेखा अधिकारी	प्रथम संयुक्त
2.	रजनी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
3.	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	
4.	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय संयुक्त
5.	मोहम्मद इरफान, प्रवर श्रेणी लिपिक	
6.	मिथलेश मौर्या, प्रवर श्रेणी लिपिक	
7.	चैतन शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक	
8.	के. सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
9.	विक्रम सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	
10.	ऊषा रानी, आशुलिपिक	
11.	निर्मला सिंह, आशुलिपिक	

### 2. श्रुतलेख प्रोत्साहन योजना में पुरस्कार हेतु

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	
1	बालेश्वर ठाकुर, मुख्य अभियंता (मु.)	अधिकारी वर्ग
	रीना वाधवा, आशुलिपिक	कर्मचारी वर्ग

### 3. तकनीकी लेख प्रोत्साहन योजना:

क्र.सं.	विषय	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	नदियों का अंतर्योजन : जल सुरक्षा के लिए एक पुनर्नवीकृत प्रेरणा	डॉ. आर.एन.संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण)	प्रथम संयुक्त
2.	सूक्ष्म सिंचाई के अंतर्गत फसलों की जल आवश्यकता के ऑकलन के लिए प्रस्तावित पद्धति	शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता	
3.	पर्यावरण असंतुलन, कोरोना और हम	ललित कुमार स्यानियां, सहायक अभियंता	द्वितीय संयुक्त
4.	भारत में जल संकट और समाधान	विमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार	
5.	राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजना-जल संकट का निवारण	रीता कश्यप, आशुलिपिक	तृतीय संयुक्त
6.	पार-तापी-नर्मदा लिंक परियोजना-एक नजर में	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	
7.	राजभाषा में यूनिकोड की आवश्यकता	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन

4. जटिल मामलों पर टिप्पण/ आलेखन प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम	टिप्पणी की स्थिति	पुरस्कार
1.	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	संबंधित अग्रेषित प्रविष्टियां संलग्न	प्रथम
2.	एस.बी.पाण्डेय, कनिष्ठ लेखा अधिकारी	संबंधित अग्रेषित प्रविष्टियां संलग्न	द्वितीय
3.	सचिन, अवर श्रेणी लिपिक	संबंधित अग्रेषित प्रविष्टियां संलग्न	तृतीय
4.	विक्रम सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	संबंधित अग्रेषित प्रविष्टियां संलग्न	प्रोत्साहन

5. बच्चों के लिए निबंध लेखन प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम एवं कक्षा	पिता/माता का नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)
1.	वंशिका स्यानियां (10वीं)	ललित कुमार स्यानियां, सहायक अभियंता
2.	आर्यन स्यानियां (11वीं)	
3.	हरि ओम कृष्ण(12वीं)	इन्दु जायसवाल, सहायक अभियंता
4.	निलेश मौर्य (12वीं)	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार
5.	हर्षिता लाल (10वीं)	आर.एस. लाल, कार्यक्रम सहायक
6.	वैभव (10वीं)	लाल मोहन महतो, प्रवर श्रेणी लिपिक
7.	यशिका गोस्वामी (10वीं)	विमेश गोस्वामी, प्रारूपकार
8.	प्रखर वाधवा (10वीं)	रीना वाधवा, आशुलिपिक
9.	श्रेया (7वीं)	राधा गुप्ता, प्रवर श्रेणी लिपिक
10.	रिदा कश्यप (8वीं)	रीता कश्यप, आशुलिपिक
11.	तनूष अरोड़ा (दूसरी)	हिमांशु अरोड़ा, कनिष्ठ लेखा अधिकारी
12.	चिराग राजपूत (पहली)	राधा गुप्ता, प्रवर श्रेणी लिपिक
13.	श्रद्धा मौर्या (चौथी)	मिथलेश मौर्या, प्रवर श्रेणी लिपिक
14.	प्रत्यूष वाधवा (चौथी)	रीना वाधवा, आशुलिपिक
15.	प्रत्यूषा (चौथी)	रूषा रानी, आशुलिपिक
16.	प्रत्यूष (चौथी)	

6. राजभाषा वैजयंती प्रोत्साहन योजना

राजभाषा वैजयंती, अन्वेषण सर्किल, वलसाड को और लघु राजभाषा वैजयंती उसके अधीनस्थ अन्वेषण प्रभागों को प्रदान की गई।

## 7. प्रारूपकारों हेतु प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम	टिप्पणी की स्थिति	पुरस्कार
1	विमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार, नई दिल्ली	संबंधित साक्ष्यों सहित प्रविष्टियां संलग्न	प्रथम

### समापन समारोह

दिनांक 29.09.2023 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह का आयोजन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग किया गया।

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने महानिदेशक महोदय, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी, निर्णायक की भूमिका निभाने वाले सभी वरिष्ठ अधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया एवं पुरस्कारों संबंधी उद्घोषणा की।

तत्पश्चात् मुख्य अभियंता महोदय ने कहा कि हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास भी है कि हिन्दी भाषा के माध्यम से हम अपने सभी प्रकार के काम सरलता से पूरा करने में सक्षम हैं।

महानिदेशक महोदय ने हिन्दी पखवाड़े की सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कारों को जीतने की बधाई दी और इस उत्साह को सदैव बनाए रखने की प्रेरणा दी।

अंत में सहायक निदेशक (राजभाषा) ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने यह भी बताया कि प्रतियोगिताओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं के सभी निर्णायकों ने निर्णय लेते समय ध्यान में रखा है कि जो पदाधिकारी हिन्दी में काम करते हैं उन्हें पूरा प्रोत्साहन मिले और दूसरे लोगों को भी प्रेरणा मिले कि वो अपना काम हिन्दी में कर सकते हैं।

सहायक निदेशक (राजभाषा) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी पखवाड़े का समापन हुआ।

**क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन**  
**मुख्य अभियंता (उत्तर) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा-2023 का आयोजन**

**मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ., लखनऊ**

मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ., लखनऊ में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2023 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े हर्ष एवं उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

दिनांक 14 सितम्बर 2023 :-

पूर्वाह्न 11.00 बजे श्रीमती दीप्ति वर्मा, उपनिदेशक द्वारा महानिदेशक महोदय, राजविअ, नई दिल्ली द्वारा जारी अपील को पढ़ा एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी दिवस के महत्व, हिन्दी पखवाड़े की आवश्यकता एवं सरकारी कामकाज में राजभाषा की प्रगति पर व्याख्यान देकर हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ किया।

दिनांक 21 सितम्बर 2023 :-

अपराह्न 04.00 बजे त्वरित भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें निर्णायक श्री शिव प्रकाश, मुख्य अभियंता (उ) एवं श्रीमती दीप्ति वर्मा, उपनिदेशक रही। विजेताओं का विवरण निम्नानुसार है :-

क्रं.सं.	विजेताओं के नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री राजेन्द्र सिंह नयाल, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री आकाश श्रीवास्तव, कनिष्ठ अभियन्ता	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री जय प्रकाश, एम0टी0एस0	(संयुक्त)
5.	श्री अहीश कुमार, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रोत्साहन पुरस्कार
6.	श्री एस0 बी0 सिंह, प्रधान लिपिक	(संयुक्त)
7.	श्री करन कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार
8.	श्री सी0 बी0 थापा, वाहन चालक-।	(संयुक्त)



दिनांक 26 सितम्बर 2023 :-

पूर्वाह्न 11.00 बजे "प्रश्नोत्तरी (मौखिक) प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसमें निर्णायक श्री शिव प्रकाश, मुख्य अभियंता (उ) तथा श्रीमती दीप्ति वर्मा, उपनिदेशक रही। विजेताओं का विवरण निम्नानुसार है :-

क्र.सं.	विजेताओं के नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री राजीव कनौजिया, सहायक अभियन्ता	प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)
2.	श्री आकाश श्रीवास्तव, कनिष्ठ अभियन्ता	
3.	श्री एस0 बी0 सिंह, प्रधान लिपिक	द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)
4.	श्री करन कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	
5.	श्री प्रमोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार (संयुक्त)
6.	श्री जय प्रकाश, एम0टी0एस0	
7.	श्री सी0 बी0 थापा, वाहन चालक-।।	
8.	श्री शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रोत्साहन पुरस्कार (संयुक्त)
9.	श्री नवीन कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	
10.	श्री अहीश कुमार, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रोत्साहन पुरस्कार (संयुक्त)
11.	श्री खुशी राम, अवर श्रेणी लिपिक	

दिनांक 29 सितम्बर 2023 :-

हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम दिनांक 29.09.2023 को श्री शिव प्रकाश, मुख्य अभियंता (उत्तर) की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। मुख्य अभियंता (उत्तर) ने अपने संबोधन में हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन व पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं, बच्चों की निबंध प्रतियोगिता एवं मूल टिप्पण/आलेखन के सभी विजेताओं को बधाई दी एवं हिन्दी भाषा के उत्तरोत्तर विकास के लिए सभी को सामूहिक प्रयास निरन्तर जारी रखने की अपील की तथा राजभाषा हिन्दी में निरन्तर कार्य वृद्धि के लिए धन्यवाद देते हुए पखवाड़े का समापन किया।

**राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, अन्वेषण प्रभाग, लखनऊ**  
**हिन्दी पखवाड़ा – 14.09.2023 से 29.09.2023**

**(1) प्रथम प्रतियोगिता – 'निबंध लेखन प्रतियोगिता' के विजेताओं की सूची :-**

क्र.सं.	नाम व पदनाम	स्थान
1.	1 श्री शिवा कान्त पाण्डेय, सहायक अभियंता 2 श्री प्रमोद कुमार, सहायक अभियंता 3 श्री नन्द लाल चौधरी, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)
2.	1. श्री अभयराज मीणा, कनिष्ठ अभियंता 2. श्री कपिल खानखेंडिया, कनिष्ठ लेखाकार	द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)
3.	1. श्री तेजप्रकाश यादव, प्रवर श्रेणी लिपिक 2. श्री मनीष कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार (संयुक्त)
4.	1. श्री बिपिन कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार
5.	1. श्री अशोक कुमार शुक्ला, प्रवर श्रेणी लिपिक 2. श्री सुरेश चन्द्र, एम. टी. एस.	प्रोत्साहन पुरस्कार (संयुक्त)

**(2) द्वितीय प्रतियोगिता – 'प्रश्नावली प्रतियोगिता' के विजेताओं की सूची :-**

क्र.सं.	नाम व पदनाम	स्थान
1.	1. श्री प्रमोद कुमार, सहायक अभियंता 2. श्री नन्द लाल चौधरी, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)
2.	1 श्रीमती बिबियाना संगम, आशुलिपिक-I 2 श्री अशोक कुमार शुक्ला, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)
3.	1 श्री अभयराज मीणा, कनिष्ठ अभियंता 2. श्री मनीष कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार (संयुक्त)
4.	1 श्री तेजप्रकाश, प्रवर श्रेणी लिपिक 2 श्री शिवा कान्त पाण्डेय, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन पुरस्कार
5.	1. श्री बिपिन कुमार, अवर श्रेणी लिपिक 2. श्री सुरेश चन्द्र, एम. टी. एस.	प्रोत्साहन पुरस्कार (संयुक्त)

हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम दिनांक 29.09.2023 को श्री शिव प्रकाश, मुख्य अभियंता (उत्तर) की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। मुख्य अभियंता (उत्तर) ने अपने संबोधन में हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन व पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं, बच्चों की निबंध प्रतियोगिता एवं मूल टिप्पण/आलेखन के सभी विजेताओं को बधाई दी एवं हिन्दी भाषा के उत्तरोत्तर विकास के लिए सभी को सामूहिक प्रयास निरन्तर जारी रखने की अपील की तथा राजभाषा हिन्दी में निरन्तर कार्य वृद्धि के लिए धन्यवाद देते हुए पखवाड़े का समापन किया।

**अन्वेषण वृत्त / प्रभाग, राजविअ, ग्वालियर और अन्वेषण उप प्रभाग जयपुर**

अन्वेषण वृत्त कार्यालय ग्वालियर एवं इसके अधीनस्थ प्रभाग कार्यालय के साथ-साथ अन्वेषण उप प्रभाग, जयपुर में संयुक्त रूप से दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2023 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया

गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े हर्ष एवं उल्लास से भाग लिया। प्रतियोगिता में सम्मिलित प्रतियोगियों द्वारा प्राप्त पुरस्कारों का विवरण निम्नानुसार है:-

### दिनांक 21.09.2023 को आयोजित श्रुतलेख प्रतियोगिता का परिणाम

पुरस्कार प्राप्तकर्ता	पुरस्कार
1. श्री दीपक नाफड़े, निजी सचिव 2. श्री मोनू कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
1. श्री प्रवीण दीक्षित, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
1. श्री प्रशान्त कुमार, सहायक अभियंता 2. श्री सोनवीर भगौर, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय संयुक्त
1. श्री पी.एन.सोनी, सहायक अभियंता 2. श्री मोहन सिंह, वाहन चालक श्रेणी- III	प्रोत्साहन
1. श्री आर.आर.हेडाऊ, सहा.अधि.अभि.	प्रोत्साहन

### दिनांक 22 सितम्बर 2023 को आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में लगभग सभी पदाधिकारियों को उनके द्वारा दिये गये प्रश्नों के सही उत्तरों के आधार पर निम्नानुसार पुरस्कार प्रदान किए गए :-

पुरस्कार प्राप्तकर्ता	पुरस्कार
1. श्री आशु सोनी, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम संयुक्त
1. श्री प्रवीण दीक्षित, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
1. श्री दीपक नाफड़े, निजी सचिव 2. श्री शिवम मिश्रा, सहायक अभियंता 3. श्री योगेश कुमार, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
1. श्री पवन, अवर श्रेणी लिपिक 2. श्री आदर्श मिश्रा, प्रारूपकार श्रेणी- III	प्रोत्साहन संयुक्त
1. श्री आर.आर.हेडाऊ, सहा.अधि.अभि.	प्रोत्साहन

### हिन्दी कार्यशाला :-

हिन्दी पखवाड़ा - 2023 के अन्तर्गत अन्वेषण वृत्त कार्यालय ग्वालियर एवं इसके अधीनस्थ प्रभाग एवं उप-प्रभाग कार्यालयों द्वारा दिनांक 27 सितम्बर 2023 को अपरान्ह 3:00 बजे संयुक्त रूप से हिन्दी की एक कार्यशाला का भी गूगल मीट के माध्यम से आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला "कार्यालयीन पत्र के विविध प्रकार" विषय पर श्री शिवम मिश्रा, सहायक अभियंता, राजविअ द्वारा ली गई।

### समापन समारोह :-

हिन्दी पखवाड़ा-2023 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार की राशि की घोषणा अधीक्षण अभियंता महोदय द्वारा की गई तथा यह आह्वान सभी पदाधिकारियों से किया गया कि वे वर्षभर अधिक से अधिक हिन्दी में कार्य करें। समापन समारोह के दौरान कार्यालय के पदाधिकारियों द्वारा गीत एवं कविताएं भी प्रस्तुत की गईं। समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का संचालन श्री अर्जेश कुमार मधोक, अधीक्षण अभियंता द्वारा किया गया।

### अन्वेषण प्रभाग, राज.वि.अ., झांसी

हिंदी पखवाड़ा-2023 का आयोजन दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक की समयावधि में संपन्न किया गया है। इस पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गए :-

दिनांक 14.09.2023 को हिंदी पखवाड़ा-2023 का शुभारम्भ हुआ एवं महानिदेशक, राजविअ, नई दिल्ली की हिन्दी दिवस के अवसर पर कार्यालय के कार्य मूलरूप से हिन्दी में करने के लिए अपील समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पढ़ा गया।

दिनांक 22.09.2023 को "श्रुतलेखन" का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़ चढ़कर भाग लिया। इस प्रतियोगिता का संचालन श्री आशीष सिंह कुशवाह, अधिशासी अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, राज.वि.अ. झाँसी द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित अधिकारियों / कर्मचारियों द्वारा पुरस्कार प्राप्त किये गये जिसका विवरण निम्नानुसार है :-

क्र.	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगियों के नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्रुतलेखन प्रतियोगिता	श्री भूरसिंह मीना, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
		श्री राहुल कुशवाहा, अवर श्रेणी लिपिक	
		श्री आशीष स्वामी, सहायक अभियंता	द्वितीय
		श्री प्रशांत कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	
		सुश्री सौम्या श्रीवास्तव, आशुलिपिक श्रेणी- II	तृतीय
		श्री निशांत निशु, कनिष्ठ लेखा अधिकारी	प्रोत्साहान
			कुल राशि

दिनांक 27.09.2023 को द्वितीय तिमाही में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन एवं संचालन श्री आशीष सिंह कुशवाह, अधिशासी अभियंता द्वारा किया गया एवं कार्यालय में हिन्दी से सम्बंधित अनुदेशों, निर्देशों का अनुपालन दृढ़ता और तत्परता से करने एवं विभागीय कार्य मूलरूप से हिन्दी में करने को प्रोत्साहित किया।

दिनांक 26.09.2023 को "प्रश्नोत्तरी" का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का संचालन श्री आशीष सिंह कुशवाह अधिशासी अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, झाँसी द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पुरस्कार प्राप्त किये गये जिसका विवरण निम्नानुसार है:-

क्र.	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगियों के नाम व पदनाम	पुरस्कार
2.	प्रश्नोत्तरी	श्री अमित तिवारी, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
		श्री निशांत निशु, कनिष्ठ लेखा अधिकारी	द्वितीय
		श्री राहुल कुशवाहा, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
		श्री विनीत, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहान
			कुल राशि



दिनांक 29.09.2023 को हिन्दी पखवाडा-2023 का समापन किया गया । श्री आशीष सिंह कुशवाह, अधिशासी अभियंता ने समापन समारोह के दौरान हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विभागीय कार्यों में हिन्दी की उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त किये एवं सभी को कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रेरित किया ।

**अन्वेषण प्रभाग, राज.वि.अ., भोपाल**

दिनांक 14.09.2023 से 23.09.2023 तक कार्यालय में हिन्दी पखवाडा 2023 का आयोजन किया गया । दिनांक 17 सितम्बर 2022 को अन्वेषण प्रभाग भोपाल में "शुद्ध लेखन" प्रतियोगिता एवं दिनांक 21 सितम्बर 2022 को "प्रश्नोत्तरी" प्रतियोगिता आयोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं में सम्मिलित प्रतियोगियों द्वारा प्राप्त पुरस्कारों का विवरण निम्नानुसार है:-

**"हिन्दी शुद्ध लेखन" प्रतियोगिता (17.09.2023)**

क्र.सं.	अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, भोपाल सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	स्नेहा अ. विश्वरूप, प्र.लि.	प्रथम
2	गोविन्द, आशुलिपिक	द्वितीय
3	कपिल, अ०श्रे०लि०	तृतीय
4	अरुण गंगाधर साली, प्रारूपकार	प्रोत्साहन
5	शुभम सुभाष वाघ, स०अ०	प्रोत्साहन

**"प्रश्नोत्तरी" प्रतियोगिता (21.09.2023)**

क्र.सं.	अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, भोपाल सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	कपिल, अ०श्रे०लि०	प्रथम
2	गोविन्द, आशुलिपिक	द्वितीय
3	स्नेहा अ. विश्वरूप, प्र.लि.	तृतीय
4	शुभम सुभाष वाघ, स०अ०	प्रोत्साहन
5	अरुण गंगाधर साली, प्रारूपकार	प्रोत्साहन

## अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, के भुवनेश्वर स्थित अन्वेषण वृत्त में संयुक्त रूप से “हिन्दी पखवाड़ा-2022” का आयोजन दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक की समयावधि में किया गया, जिसमें अन्वेषण वृत्त व प्रभाग कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पूरे उत्साह से बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

### दिनांक 14 सितम्बर, 2023

श्री राकेश कुमार गुप्ता, अधीक्षण अभियन्ता ने 14 सितम्बर, 2023 को महानिदेशक महोदय द्वारा जारी अपील पढ़कर उदघाटन समारोह का उदघाटन किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और हिन्दी पखवाड़े के आयोजन की आवश्यकता एवं सरकारी काम-काज में राजभाषा की प्रगति के बारे में विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर कार्यालय में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं और विजेता प्रतिभागियों के विवरण इस प्रकार है:-

### आपके जीवन में जल का महत्व (18.09.2023)

प्रतियोगिता के विजेताओं का विवरण निम्न प्रकार है:-

#### प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)

- 1 श्री विश्वजीत महान्ति, सहायक अभियन्ता
- 2 श्री सुरेश, अवर श्रेणी लिपिक

#### द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)

- 1 श्री गोपबंधु सामल, अवर श्रेणी लिपिक
- 2 श्री मदन मोहन धल, आशुलिपिक श्रेणी-।

#### तृतीय पुरस्कार

- 1 श्रीमती एस. आर., महापात्र, प्रारूपकार श्रेणी -।।

#### प्रोत्साहन पुरस्कार -।

- 1 श्री यू.के. मिश्रा, वाहन चालक विशेष श्रेणी

#### प्रोत्साहन पुरस्कार -।।

- 1 श्री सुरेन्द्र नाथ गौड़ा, एम.टी.एस.

### “राजभाषा नीति, आजादी का अमृत महोत्सव और जल संसाधनों” (25.09.2023)

प्रतियोगिता के विजेताओं का विवरण निम्न प्रकार है:-

#### प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)

- 1 श्री एस. सी. पारुई, सहायक अभियन्ता
- 2 श्री डी. किरण कुमार, कनिष्ठ अभियन्ता

#### द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)

- 1 श्री विश्वजीत महान्ति, सहायक अभियन्ता
- 2 श्री यू.के. रथ, प्रधान लिपिक
- 3 श्री यू.के. मिश्रा, वाहन चालक विशेष श्रेणी

#### तृतीय पुरस्कार (संयुक्त)

- 1 श्रीमती एस. आर. महापात्र, प्रारूपकार श्रेणी -।।
- 2 श्री सुरेश, अवर श्रेणी लिपिक
- 3 श्री मदन मोहन धल, आशुलिपिक श्रेणी-।

#### प्रोत्साहन पुरस्कार -।

- 1 श्री गोपबंधु सामल, अवर श्रेणी लिपिक

#### प्रोत्साहन पुरस्कार -।।

- 1 श्री सुरेन्द्र नाथ गौड़ा, एम.टी.एस.

दिनांक 29 सितम्बर, 2023 ने अपराह्न 15.00 बजे हिन्दी पखवाड़ा, 2023 का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर सभी अधिकारियों एवं पदाधिकारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। अंत में पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरण किये गये एवं सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद देते हुए अधीक्षण अभियंता ने हिंदी पखवाड़ा का समापन किया।

### अन्वेषण प्रभाग, भुवनेश्वर

#### **प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)**

- 1 श्री बी. के. सिंह, सहायक अधिशासी अभियंता
- 2 श्री विवेक कुमार श्रीवास्तव, सहायक अभियंता
- 3 श्री विवेक दाधीच, कनिष्ठ लेखा अधिकारी
- 4 श्री नवनीत कुमार, अवर श्रेणी लिपिक

#### **द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)**

- 1 श्रीमती सुजाता सेनापति, कनिष्ठ अभियंता
- 2 सुश्री बी.एल. देई, अधीक्षक श्रेणी-II
- 3 श्री डी. सी. साहु, प्रवर श्रेणी लिपिक
- 3 श्री हर्षित सहजपाल, आशुलिपिक-II

#### **तृतीय पुरस्कार (संयुक्त)**

- 1 श्री विकास रंजन, कनिष्ठ अभियंता
- 2 श्री निरंजन स्वॉई, प्रधान लिपिक
- 3 श्रीमती के.के.महान्ती, प्रारूपकार श्रेणी-II

#### **प्रोत्साहन पुरस्कार- I**

- 1 श्री एस.के. चंपती, एम.टी.एस

#### **प्रोत्साहन पुरस्कार- II (संयुक्त)**

- 1 श्री एम. कोदण्डराम, सहायक अभियंता
- 2 श्री पी. के.आचार्य, एम.टी.एस

#### **प्रश्नावली प्रतियोगिता (लिखित) (25.09.2023)**

#### **प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)**

- 1 श्री विकास रंजन, कनिष्ठ अभियंता
- 2 श्री निरंजन स्वॉई, प्रधान लिपिक
- 3 श्रीमती सुजाता सेनापति, कनिष्ठ अभियंता
- 4 श्री विवेक दाधीच, कनिष्ठ लेखा अधिकारी

#### **द्वितीय पुरस्कार(संयुक्त)**

- 1 श्री बी. के. सिंह, सहायक अधिशासी अभियंता
- 2 श्री विवेक कुमार श्रीवास्तव, सहायक अभियंता
- 3 श्री एम. कोदण्डराम, सहायक अभियंता
- 4 श्रीमती के.के.महान्ती, प्रारूपकार श्रेणी- II

### तृतीय पुरस्कार (संयुक्त)

- 1 सुश्री बी.एल देई, अधीक्षक श्रेणी-II
- 2 श्री हर्षित सहजपाल, आशुलिपिक श्रेणी-II
- 3 श्री नवनीत कुमार, अवर श्रेणी लिपिक

### प्रोत्साहन पुरस्कार -I

- 1 श्री डी. सी. साहु , प्रवर श्रेणी लिपिक

### प्रोत्साहन पुरस्कार-II (संयुक्त)

- 1 श्री एस.के. चंपती, एम.टी.एस
- 2 श्री पी. के.आचार्य, एम.टी.एस

दिनांक 29 सितम्बर, 2023 को अपराह्न 15.00 बजे हिन्दी पखवाड़ा, 2023 का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर सभी अधिकारियों एवं पदाधिकारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। अंत में पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरण किया गया एवं सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद देते हुए पखवाड़ा का समापन किया गया। व्यवहारिक प्रशिक्षण देने के लिए 21 सितम्बर, 2023 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया है। जिसमें अन्वेषण वृत्त एवं अन्वेषण प्रभाग के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया है।

### अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., पटना

अन्वेषण प्रभाग, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, पटना का हिन्दी पखवाड़े के दौरान दिनांक 18.09.2023 निबन्ध लेखन प्रतियोगिता।

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	श्री आमिर अहमद, सहायक अभियंता	प्रथम पुरस्कार संयुक्त
2.	श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम पुरस्कार संयुक्त
3.	श्री निरंजन पाठक, आशुलिपिक श्रेणी-II	तृतीय पुरस्कार संयुक्त
4.	श्री अंकुर, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार संयुक्त
5.	श्री अभिनव आनंद, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त
6.	श्री अवनीश शाह, प्रारूपकार श्रेणी-III	प्रोत्साहन पुरस्कार
7.	श्री शशि रंजन, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त

अन्वेषण प्रभाग, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, पटना का हिन्दी पखवाड़े के दौरान दिनांक 25.09.2023  
तत्कालिक भाषण/कविता लेखन प्रतियोगिता।

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	श्री आमिर अहमद, सहायक अभियंता	प्रथम पुरस्कार संयुक्त
2.	श्री हिमांशु कुमार टूडु कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन पुरस्कार संयुक्त
3.	श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त
4.	श्री निरंजन पाठक, आशुलिपिक श्रेणी- II	तृतीय पुरस्कार संयुक्त
5.	श्री अंकुर, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार संयुक्त
6.	श्री अभिनव आनंद, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त
7.	श्री अवनीश शाह, प्रारूपकार श्रेणी- III	प्रोत्साहन पुरस्कार संयुक्त
8.	श्री शशि रंजन, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम पुरस्कार संयुक्त

श्री महेश कुमार रमण, अधिशासी अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, पटना के लिए ने निर्णायक की भूमिका निभाई।

## मुख्य अभियंता (दक्षिण) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा –2023 का आयोजन

मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद

मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण वृत्त एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद में संयुक्त रूप से दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिन्दी पखवाड़ा 2023 का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों को सुचारु रूप से चलाने हेतु, अधीक्षण अभियंता, अन्वेषण वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद की अध्यक्षता में एक प्रबंधन समिति का गठन किया गया। दिनांक 14.09.2023 को हुई उदघाटन समारोह में माननीय गृह मंत्री का संदेश अधीक्षण अभियंता ने पढ़ा और मुख्य अभियंता (दक्षिण), ने महानिदेशक महोदय की अपील पढ़ी। इसके अतिरिक्त मूलटिप्पण आलेखन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार, रा.ज.वि.अ के वर्ष 2022-23 के अंतर्गत कार्यालयीन हिन्दी के उत्कृष्ट योगदान हेतु शील्ड भी वितरित किया गया है। सभी पदाधिकारियों ने बड़े उल्लास से दो प्रतियोगिताओं में भाग लिया। दिनांक 29.09.2023 को आयोजित पखवाड़े के समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। जिनका विवरण निम्नानुसार है :

उदघाटन समारोह



(दिनांक 14.09.2023)

कार्यशाला का आयोजन



(दिनांक 20.09.2023)

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान दिनांक 20.09.2023 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया श्री जय शंकर प्रसाद तिवारी, पूर्व सहायक निदेशक, हैदराबाद ने कार्यशाला में व्याख्यान किया। इस कार्यशाला में निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किये।

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (श्री/श्रीमती)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1.	श्री बाबिन्दर सिंह नेगी, आशुलिपिक श्रे- II	अ.वृ, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम
2.	श्री रविकान्त, कनिष्ठ अभियंता	अ.वृ, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय
3.	श्री हीरा लाल, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द).रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय



पुरस्कार वितरण

प्रश्न मंच (22.09.2023) – (संचालन श्री एस. ए. नायडु, अधीक्षण अभियंता, अन्वेषण वृत्त, रा.ज.वि.अ, हैदराबाद)

क्र. सं.	नाम एवं पदनाम (श्री/श्रीमती)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1.	एम.वी.एस.यु.पवन, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम संयुक्त रूप से
2.	अभिलाष कुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3.	संदीप सुमन, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4.	एम. सत्यनारायण, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5.	दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
1.	मित्रा प्रदीप, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय संयुक्त रूप से
2.	जी.नरसिम्हा राव, प्रधान लिपिक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3.	आर. प्रकाश बाबु, प्रधान लिपिक	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4.	दिनेश कुमार शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5.	एम डी रहीम, , साधारण चालक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
1.	रविकांत, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय संयुक्त रूप से
2.	के.वी.वी.एस.एस.पी.राजू, प्रवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3.	बाबिन्दर सिंह नेगी, आशुलिपिक - II	अ.अ.वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4.	हीरा लाल, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5.	के.पी. महेश्वर, अवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
1.	एन. सतीश कुमार, सहायक अभियंता	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त रूप से
2.	हारिस पी., कनिष्ठ लेखा अधिकारी	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3.	दाड़ी बाग्या नुकेश, कनिष्ठ अभियंता	अ.वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4.	अनीस, प्रारूपकार श्रेणी- II	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5.	विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
1.	डी.राम मोहन, सहायक अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त रूप से
2.	निमिष उपाध्याय, सहायक अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	

3.	एस.वि. शिव कुमार, आशुलिपिक श्रेणी - II	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4.	संजय कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5.	रामाकृष्णा, चालक श्रेणी - II	अ.वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	

**शब्दावली प्रतियोगिता (25.09.2023)**

क्र.सं	नाम एवं पदनाम (श्री/श्रीमती)	कार्यालय का नाम	प्रति एक का नगद पुरस्कार
1	हीरा लाल, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम पुरस्कार संयुक्त रूप
2.	दिनेश कुमार शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम पुरस्कार संयुक्त रूप
3	एम.वी.एस.यु.पवन, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम पुरस्कार संयुक्त रूप
4	बाबिन्दर सिंह नेगी, आशुलिपिक श्रेणी - II	अ.वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त रूप
5.	संजय कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त रूप
6.	एस.वि. शिव कुमार, आशुलिपिक श्रेणी - II	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त रूप
7.	अभिलाष कुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय पुरस्कार संयुक्त रूप
8.	दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय पुरस्कार संयुक्त रूप
9	एम. सत्यनारायणा, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय पुरस्कार संयुक्त रूप
10	विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन पुरस्कार संयुक्त रूप
11	निमिष उपाध्याय, सहायक अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन पुरस्कार संयुक्त रूप
12	डी.राम मोहन, सहायक अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन पुरस्कार संयुक्त रूप
13	के.पी. महेश्वर, अवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन पुरस्कार संयुक्त रूप
14	मित्रा प्रदीप, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन पुरस्कार संयुक्त रूप
15	संदीप सुमन, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन पुरस्कार संयुक्त रूप

वर्ष 2022-23 में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए शील्ड का वितरण



हैदराबाद स्थित रा.ज.वि.अ. के तीनों कार्यालयों से वित्त वर्ष 2022–2023 के दौरान राजभाषा से संबंधित कार्यालीन हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए एक-एक पदाधिकारी को शील्ड प्रदान किया गया। जिसका विवरण निम्नानुसार है।

क्रम.सं.	नाम एवं पदनाम (श्र/श्रीमती)	कार्यालय
1.	श्री विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद
2.	श्री दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृ, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद
3.	श्री के.पी. महेश्वर, अवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद

#### मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना :

मुख्यालय रा.ज.वि.अ., नई दिल्ली के पत्र सं. 6/1/2020-21/हिंदी/2654-85, दिनांक : 28.08.2023 के अनुपालन में दिनांक 01.04.2022 से 31.03.2023 तक की अवधि में मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना में निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किए।

क्रम. सं.	नाम एवं पदनाम	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1.	श्री हीरा लाल, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम
2.	श्री विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबा	द्वितीय
3.	श्री दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृ, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय

#### बच्चों के लिए निबंध प्रोत्साहन योजना

हैदराबाद स्थित तीनों कार्यालयों में कार्यरत पदाधिकारियों के 1 से 12 वीं कक्षा तक के बच्चों के लिए आयोजित निबंध प्रतियोगिता में निम्न प्रतिभागियों ने पुरस्कार प्राप्त किये।

क्रम. सं.	बच्चों का नाम एवं कक्षा	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/सुश्री	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1	अनीश संखुआ, 11 वीं	डॉ. आर.एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (द)	मु.अ.(द), रा.ज. वि.अ., हैदराबाद	प्रथम
2.	डी.यकुला, 5 वीं	डी. रामा कृष्णा, चालक श्रेणी – II	अ.वृ, रा.ज.वि. अ., हैदराबाद	प्रथम
3.	जी.के.राम त्रिषित, 10 वीं	वाई. गोपी लावण्या, अधिशासी अभियंता	अ.प्रभाग, रा.ज. वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय
4	रित्तिका, 9 वीं	वाई. गोपी लावण्या, अधिशासी अभियंता	अ.प्रभाग, रा.ज. वि.अ., हैदराबाद	तृतीय

#### बच्चों के लिए निबंध प्रोत्साहन योजना

मुख्यालय रा.ज.वि.अ., नई दिल्ली के पत्र सं. 6/1/2020-21/हिंदी/2654-85, दिनांक : 28.08.2023 के अनुसार रा.ज.वि.अ., हैदराबाद स्थित तीनों कार्यालयों में कार्यरत पदाधिकारियों के 1 से 12 वीं कक्षा तक के बच्चों के लिए आयोजित निबंध प्रतियोगिता में निम्न प्रतिभागियों ने पुरस्कार प्राप्त किये।

**अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., चेन्नै**

क्र.सं	प्रतियोगी का नाम	पुरस्कार
1)	<b>अनुवाद - प्रतियोगिता (हिन्दी से अंग्रजी एवं अंग्रजी से हिन्दी) प्रतियोगिता दिनांक: 20.09.2023, 14.30 बजे से 16.30 बजे तक</b>	
क)	श्री एस. राजा, सहायक अभियंता	प्रथम
ख)	श्री रोनक, उच्च श्रेणी लिपिक	द्वितीय
ग)	श्री शरणप्पा बी. मुंदरगि, सहायक अधिशासी अभियंता	तृतीय
घ)	श्री एस. गुरुराजन, सहायक अभियन्ता	प्रोत्साहन
इ)	श्री आर. पान्दुरंगन, उच्च श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन
2)	<b>हिन्दी भाषण प्रतियोगिता - दिनांक 25.09.2023 - 14.30 बजे से 16.30 बजे तक</b>	
क)	श्रीमति एस. दुर्गाबाई, प्रधान लिपिक	प्रथम
ख)	श्री प्रशांत कुमार सिंह, कनिष्ठ अभियन्ता	द्वितीय
ग)	श्री रोनक, उच्च श्रेणी लिपिक	तृतीय
घ)	श्री शरणप्पा बी. मुंदरगि, सहायक अधिशासी अभियंता	प्रोत्साहन
इ)	श्री एस. राजा, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन

**अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नागपुर**

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नागपुर द्वारा दिनांक 14 से 29 सितंबर 2023 तक हिन्दी पखवाडा मनाया गया 14 सितंबर 2023 को उद्घाटन के दौरान श्री. टी. महेंद्रन, कार्यपालक अभियंता(प्र) द्वारा हिन्दी पखवाडे के अंतर्गत आयोजित होने वाले कार्यक्रमों का विवरण दिया गया तथा सभी अधिकारी तथा कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिये प्रेरित किया गया था तथा इसी दिन महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की अपिल कार्यपालक अभियंता द्वारा पढी गई ।

पखवाडा के दौरान दिनांक 18.09.2023 को " हिन्दी भाषण" प्रतियोगिता का आयोजन श्री. तेजवीर सिंह, राजभाषा अधिकारी, निदेशक लेखा(डाक), कार्यालय, नागपुर द्वारा किया गया, साथ ही दिनांक 22.09.2023 को श्रीमति तृप्ति टेम्बुर्ने सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना, नागपुर द्वारा दूसरी प्रतियोगिता "प्रश्नावली – राजभाषा से संबंधित (मौखिक)" का आयोजन किया गया है, जिसमें इस कार्यालय के उपस्थित सभी अधिकारी तथा कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिए ।

दिनांक 29.09.2023 को हिन्दी पखवाडा का समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें कार्यपालक अभियंता ने हिन्दी के प्रति अपने विचार प्रकट किये और कार्यालयीन कामकाज में अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिये प्रेरित किया । इसी दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये । अंत में सभी को धन्यवाद समर्पण के साथ हिन्दी पखवाडा कार्यक्रम का समापन किया गया है ।

प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत विजेताओ के नाम

'हिन्दी भाषण' दि. 18.09.2023

- |    |                               |                  |
|----|-------------------------------|------------------|
| 1. | श्री अभिषेक कुमार, क.अ.       | प्रथम पुरस्कार   |
| 2. | श्री टी. महेंद्रन, का.अ.(प्र) | द्वितीय पुरस्कार |
| 3. | श्री प्रखर शुक्ला, अ.श्रे.लि. | तृतीय पुरस्कार   |

'प्रश्नावली' राजभाषा से संबंधित दि .22.09.2023

- |    |                               |                  |
|----|-------------------------------|------------------|
| 1. | श्री टी. महेंद्रन, का.अ.(प्र) | प्रथम पुरस्कार   |
| 2. | श्री प्रखर शुक्ला, अ.श्रे.लि  | द्वितीय पुरस्कार |
| 3. | श्री अभिषेक कुमार, क.अ..      | तृतीय पुरस्कार   |

**अन्वेषण वृत्त, राजविअ, वलसाड**

हिन्दी पखवाडे के अंतर्गत रखी गई दो प्रतियोगिता के विजेताओं की सूची निम्नप्रकार है ।

1. निबंध प्रतियोगिता (दिनांक 21.9.2023)

1.	श्री शुभम गुप्ता, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री कुशी राम मीना, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्रीमती क्रिष्णा पी. देसाई, प्रधान लिपिक श्री कुलदीप सिंह , अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार संयुक्त रूप
4.	श्री सुमीत पाल, कनिष्ठ अभियंता श्री विनोद डी. पटेल, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन पुरस्कार

2.दिनांक 26.9.2023 को लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

1.	श्रीमती क्रिष्णा पी. देसाई, प्रधान लिपिक	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री कुलदीप सिंह, अवर श्रेणी अभियंता	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री विनोद डी. पटेल, एम.टी.एस.	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री शुभम गुप्ता,कनिष्ठ अभियंता श्री कुशी राम मीना, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार

अन्वेषण वृत्त कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों का मूल टिप्पणी आलेखन एवं बच्चों के लिए निबंध प्रोत्साहन में पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची निम्नलिखित है।

मूल टिप्पणी आलेखन प्रोत्साहन प्रतियोगिता :प्रथम पुरस्कार संयुक्त रूप से :

- श्री कुशी राम मीना, अवर श्रेणी लिपिक
- श्रीमती कल्पना ए. परमार, प्रवर श्रेणी लिपिक

बच्चों के लिए निबंध प्रोत्साहन प्रतियोगिता : द्वितीय पुरस्कार

श्री डी. बी. ओझा, सहायक अभियंता की बेटी कु. यामी ओझा

## अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, वलसाड

अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, वलसाड कार्यालय में दिनांक 14.9.2023 से 29.9.2023 तक हिन्दी पखवाडे का आयोजन किया गया था। 14 सितंबर, 2023 को हिन्दी पखवाडे का शुभारंभ किया गया, इस अवसर पर श्री के.आर.पटेल, प्रभारी अधिशासी अभियंता द्वारा महानिदेशक, राजविअ का संदेश पढकर सुनाया गया और हिन्दी पखवाडा के आयोजन तथा इसके अंतर्गत आयोजित की जानेवाली प्रतियोगिताओं की जानकारी दी गई और वर्षभर कार्यालयीन कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का निवेदन किया गया।

उक्त पखवाडे के दौरान अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, वलसाड कार्यालय द्वारा निम्नलिखित दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

1. दिनांक 21.09.2023 को निबंध प्रतियोगिता
2. दिनांक 26.09.2023 को लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

उक्त प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दिनांक 19.09.2023 को श्री सीएच.वै.सुब्रहमण्यम, अधीक्षण अभियंता, अन्वेषण वृत्त, राजविअ, वलसाड द्वारा हिन्दी में "तकनीकी शब्दावली" विषय पर अन्वेषण वृत्त एवं अन्वेषण प्रभाग कार्यालय की संयुक्त रूप से कार्यशाला ली गई। दिनांक 29.9.2023 को हिन्दी पखवाडा का समापन समारोह आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत कार्यालय में आयोजित प्रतियोगिताओं के इनामों की धोषणा एवं पुरस्कार वितरण श्री के.आर.पटेल, प्रभारी अधिशासी अभियंता द्वारा किये गये। इस के अतिरिक्त मुख्य अभियंता (द), राजविअ, हैदराबाद द्वारा मूल टिप्पण आलेखन एवं बच्चों के लिए निबंध प्रोत्साहन में पुरस्कृत कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किये गये। अंत में श्री के.आर.पटेल, प्रभारी अधिशासी अभियंता ने हिन्दी पखवाडे में सभी कर्मचारियों का उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए और कार्यक्रम सफल बनाने के लिए धन्यवाद किया एवं कर्मचारियों से अधिकतम कार्य हिन्दी में करने का अनुरोध किया। हिन्दी पखवाडे के अंतर्गत आयोजित दो प्रतियोगिता के विजेताओं की सूची निम्न प्रकार है।

### 1. दिनांक 21.9.2023 को निबंध प्रतियोगिता

1.	श्रीमती दीपिका आर. पटेल, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री एन. सी. आशरा, प्रारूपकार श्रेणी-II	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री रामोतार सिंह विधूडी, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय पुरस्कार
4.	श्रीमती मिनाक्षी डी. पार, प्रवर श्रेणी लिपिक श्री भोगा शिवाप्रसाद, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार

## 2. दिनांक 26.9.2023 को लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

1.	श्रीमती मिनाक्षी डी. पार , प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री रामोतार सिंह विधूडी, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्रीमती दीपिका आर. पटेल, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री एन. सी. आशरा , प्रारूपकार श्रेणी- II श्री भोगा शिवाप्रसाद, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार

अन्वेषण प्रभाग कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों का मूल टिप्पणी आलेखन एवं बच्चों के लिए निबंध प्रोत्साहन में पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची निम्नलिखित है ।

**मूल टिप्पणी आलेखन प्रोत्साहन प्रतियोगिता :**

द्वितीय पुरस्कार :

श्रीमती दीपिका आर. पटेल, प्रवर श्रेणी लिपिक

तृतीय पुरस्कार :

श्रीमती मिनाक्षी. डी. पार, प्रवर श्रेणी लिपिक

श्री भोगा शिवाप्रसाद, अवर श्रेणी लिपिक

**बच्चों के लिए निबंध प्रोत्साहन प्रतियोगिता : प्रोत्साहन पुरस्कार**

श्री भोगा शिवाप्रसाद, अवर श्रेणी लिपिक का बेटा बी.बाई.बानु.तेजस



हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिता (लिखित) में निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किया ।

पदाधिकारियों के नाम और पदनाम श्री / श्रीमती	पुरस्कार का विवरण
श्री कानाराम, कनिष्ठ अभियंता, अप्र-II, राजविअ, नाशिक	प्रथम पुरस्कार
श्री सचिन विशनोई, कनिष्ठ अभियंता, अप्र-II, राजविअ, नाशिक	द्वितीय पुरस्कार
श्री अमित कुमार, अवर श्रेणी लिपिक, अप्र-I, राजविअ, नाशिक	तृतीय पुरस्कार
श्री रवि कुमार चौधरी, उच्च श्रेणी लिपिक, अप्र-II, राजविअ, नाशिक	प्रोत्साहन 1
श्री प्रशिश विजय खंडारे, अवर श्रेणी लिपिक, अप्र-II, राजविअ, नाशिक	प्रोत्साहन 2

- i) द्वितीय प्रतियोगिता : दिनांक : 26.09.2023 प्रातः 11.00 बजे निबंध लेखन प्रतियोगिता विषय: “देश की एकता में हिन्दी की भूमिका” अथवा “देश के विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका” पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता का संचालन और लिखित परीक्षा की जांच

करने का कार्य श्री के. एस. नायडू, सहायक अधिशासी अभियंता, अन्वेषण प्रभाग-1, राजविअ, नाशिक द्वारा किया गया ।

**निबंध लेखन प्रतियोगिता में निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किया ।**

<b>पदाधिकारियों के नाम और पदनाम श्री / श्रीमती</b>	<b>पुरस्कार का विवरण</b>
श्री रवि कुमार चौधरी, उच्च श्रेणी लिपिक, अप्र-II, राजविअ, नाशिक	प्रथम पुरस्कार
श्री कानाराम, कनिष्ठ अभियंता, अप्र-II, राजविअ, नाशिक	द्वितीय पुरस्कार
श्री पी. हरि प्रसाद, सहायक अभियंता, अप्र-I, राजविअ, नाशिक	तृतीय पुरस्कार
श्री प्रशिश विजय खंडारे, अवर श्रेणी लिपिक, अप्र-II, राजविअ, नाशिक	प्रोत्साहन 1
श्रीमति एस.एस. रणदिवे, एम.टी.एस, अप्र-I, राजविअ, नाशिक	प्रोत्साहन 2

**अन्वेषण उप-प्रभाग, केन बेतवा लिंक परियोजना प्राधिकरण, पन्ना**

**हिन्दी काव्य प्रतियोगिता में निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किया ।**

<b>क्र. सं.</b>	<b>हिंदी काव्य प्रतियोगिता</b>	<b>पुरस्कार</b>
1.	श्री दीपक, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री श्रेयश सक्सेना, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री कुलदीप वर्मा, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय पुरस्कार
4.*	श्री मुकेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार

## कविता

### जल बचाओ, जल बचाओ

जल बचाओ, जल बचाओ  
सारे मिलकर जल बचाओ,  
आओ मिलकर जल को बचाएं  
जल ही जीवन है, सबको बताएं।

जल के बिना न जीवन हैं  
फिर क्यों जल को हम प्रदूषित कर रहे।

जल है, इस धरती में तभी तो  
हरी भरी यह धरती दिखती,  
जल है इस धरती में तभी तो  
फूलों से महकी यह धरती रहती।

प्यास मिटाने के लिए हर जीव को  
जल की जरूरत पड़ती,  
अनाज उगाने के लिए भी  
जल की ही जरूरत पड़ती।

कूड़ा, कचड़ा फेंक नदी में  
सुंदर नदी को गंदगी से भर रहे,  
और लोगों को बिना खुद समझे  
एक ही बात सुना रहें,  
जल जीवन है, जल जीवन है।

समझ जाओ आज ही  
जल को हमें बचाना है,  
जल ही जीवन है सबको हमें बताना है।

(प्रिया विज)  
आशुलिपिक श्रेणी-।।  
रा.ज.वि.अ.

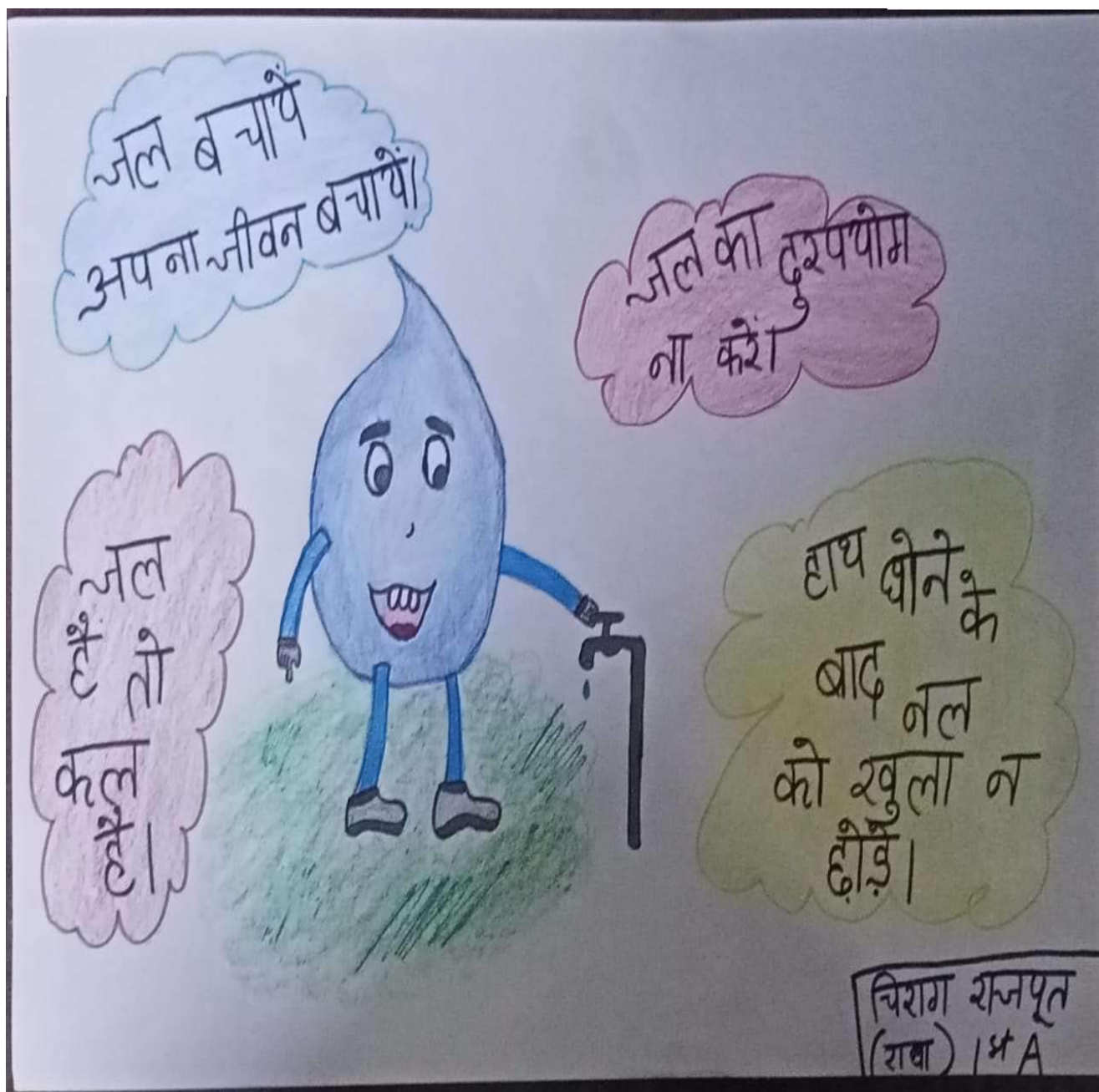


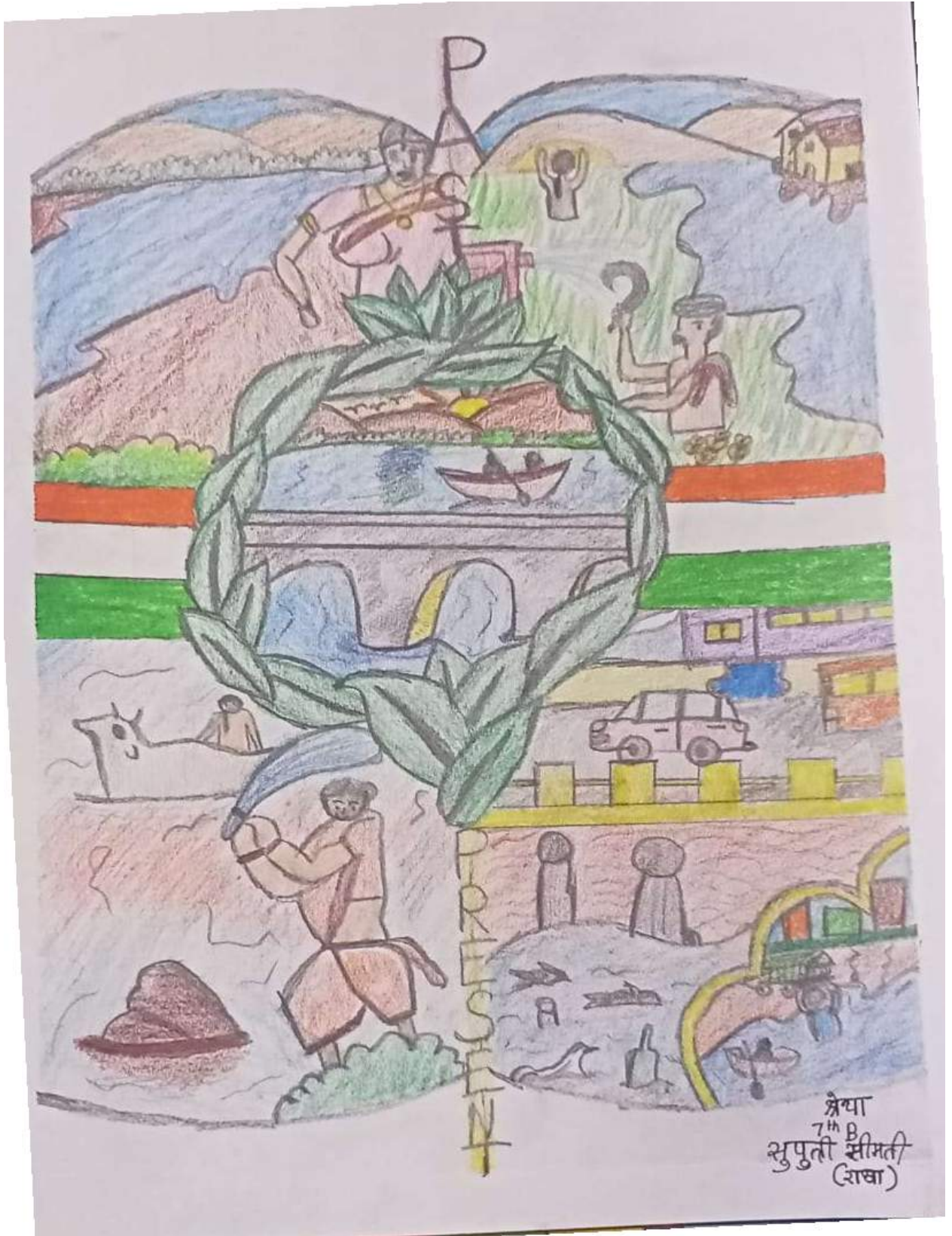
## हिन्दी हमारी पहचान

हम सबकी प्यारी, लगती है सबसे न्यारी ।  
कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी, राष्ट्रभाषा हमारी ।  
साहित्य की फुलवारी,  
सरल—सुबोध पर है भारी ।  
अंग्रेजी से जंग है जारी,  
सम्मान की है अधिकारी ।  
जन—जन की हो दुलारी,  
हिन्दी ही पहचान हमारी

अमन, कनिष्ठ अभियंता,  
राजविअ,  
पालिका भवन,  
नई दिल्ली ।

राजविअ पदाधिकारियों के बच्चों का कोना





कक्षा - 7वीं श्रेया (पुत्री श्रीमती राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक)

## (जल ही जीवन, जल ही जान)

प्रखर वाधवा

जल ही जीवन, जल ही जान,  
जल के बिना दुनिया वीरान!

इसके बिना ना वन-उपवन,  
उगेगा ना खेतों में अन्न!

जल ही अमृत, जल ही प्राण,  
जल के बिना दुनिया सुनसान!

इसके बिना ना पशु और खग,  
निर्जन हो जाएगा जग!

जल ही जीवन, जल ही जान,  
जल के बिना दुनिया श्मशान!

पानी है अनमोल रतन,  
इसे बचाओ मिल सब जन!

## जल संरक्षण पर चित्र

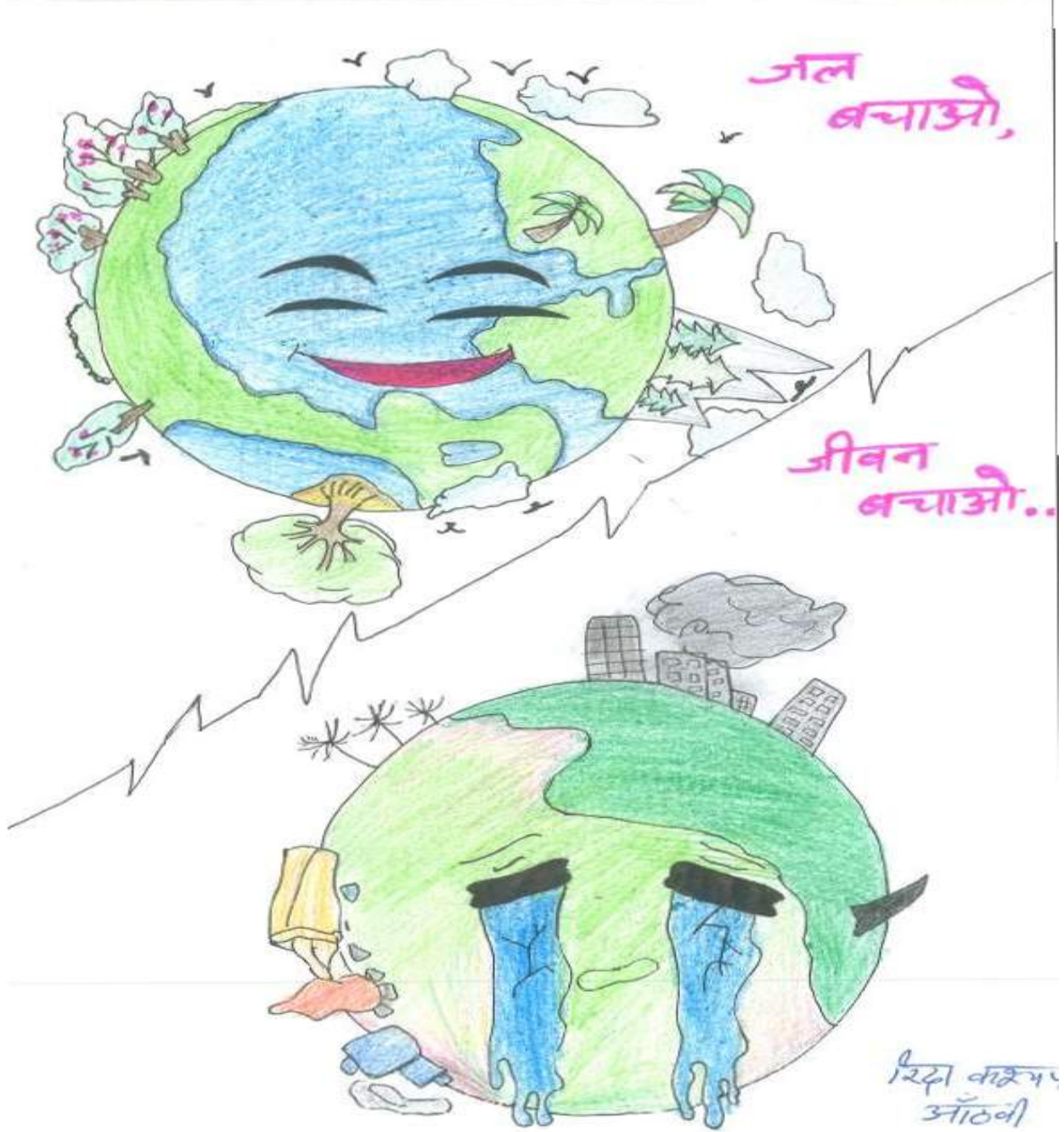
प्रत्युष वाधवा



कक्षा - 4 (पुत्र श्रीमती रीना वाधवा)

## जल बचाओ पर चित्र

रिदा कश्यप



कक्षा - 8 (पुत्री श्रीमती रिता कश्यप )

जो डर के न प्रयोग करें  
उनके लिए रूप में क्लिष्ट है हिन्दी।  
किन्तु सुपाच्य, सुबोध, सुगम्य  
स्वभाव में सुन्दर शिष्ट है हिन्दी।  
ताकत में कमजोर नहीं  
अपना कर देखो बलिष्ट है हिन्दी।  
ईश्वर की कुछ ऐसी कृपा कि  
सभी से ये भिन्न विशिष्ट है हिन्दी





## जल विकास राजभाषा विशेषांक

संरक्षक

श्री भोपाल सिंह, महानिदेशक

संपादक मंडल

श्री बालेश्वर ठाकुर, मुख्य अभियंता (मुख्यालय)

अध्यक्ष

श्री षाजतनन के. एच., निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी

सदस्य

डॉ. अनिल कुमार द्विवेदी, सहायक निदेशक (राजभाषा)

सदस्य-सचिव



पत्रिका में छपे सभी लेखों के लेखकों के विचार उनके अपने हैं और राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण उसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

जल विकास [www.nwda.gov.in](http://www.nwda.gov.in) पर भी उपलब्ध है  
jal vikas can also be accessed at [www.nwda.gov.in](http://www.nwda.gov.in)  
राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, 18-20 सामुदायिक केंद्र, साकेत  
नई दिल्ली-110017 द्वारा प्रकाशित